# विचार दृष्टि

वर्ष : 6 अंक : 18 जनवरी-मार्च 2004 15 रुपए

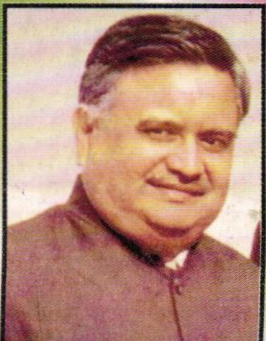

विहँसता बिहान

सवाल बचपन बचाने का

सद्दाम की गिरफ्तारी

## जो जीता वही सिकंदर

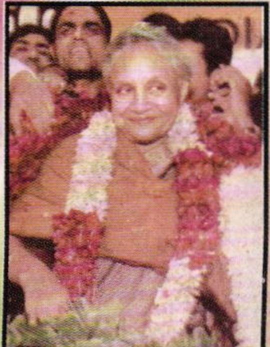

*With Best Compliments :-*

# DRUG PALACE

**Wholesale Chemist and Drugist**

**G-11, Mahima Palace,**
**Govind Mitra Road,**
**Patna-800004 (Bihar)**

# Damims Pharma

**Retail Chemist and Drugist**

**Prasanti Nilyam, Kankarbagh,**
**Patna-800020**

# विचार दृष्टि

( राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी )

वर्ष-6 जनवरी-मार्च, 2004 अंक-18

संपादक व प्रकाशक: **सिद्धेश्वर**

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

शब्द संयोजन : दीपक कुमार

**सोलूसंस प्वायंट**

साज-सज्जा: सुंधाशु कुमार

**प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय:**

**'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207**

**शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92**

दूरभाष: ( 011 ) 22059410, 22530652

मोबाइल: 9811281443,9899238703

फैक्स: ( 011 ) 22530652

**E-mail vichardrishti@hotmail.com**

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष:0612-2228519

## ब्यूरो प्रमुख

मुंबई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎:28897962

कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रतिसक्सेना ☎ 2446243

बैंगलोर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद:डॉ०ऋषभदेव शर्मा ☎24616931

जयपुर: डॉ०सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎2225676

अहमदाबाद:वीरेंद्र सिंह ठाकुर ☎22870167

लखनऊ प्रतिनिधि:प्रो.पारसनाथ श्रीवास्तव

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

| | |
|---|---|
| मूल्य: | एक प्रति 15 रुपये |
| द्विवार्षिक: | 100रुपये |
| आजीवन सदस्य: | 1000 रुपये |

विदेश में:

**एक प्रति:US $3, द्विवार्षिक:US $20, आजीवन: US $250**

( पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं। )


## रचना और रचनाकार


**पाठकीय पन्ना** /2

**संपादकीय** /3

**विचार-प्रवाह:**

देश क्यों इतना लहुलुहान? /5

**बाल विकास पर विशेष:**

बच्चों के विकास में बाल साहित्य..... -सिद्धेश्वर /8

सलीब पर बचपन /11
-प्रो. लखनलाल सिंह 'आरोही'

लड़कियों के लिए ही क्यों जरूरी है शादी? -प्रो. दीनानाथ 'शरण' /12

दो बाल रचनाएँ- रामानुज त्रिपाठी /13

बाल अधिकार -डॉ कलानाथ मिश्र /14

ऐसे सिखाइए अपने बच्चों को /15
-अब्राहम लिंकन

कामकाजी दंपत्ति में बच्चे उपेक्षित -अंजलि /16

**साहित्य:**

बाबा सालिक राम-स्केच-कथा -कृष्णकुमार राय /17

आश्वस्त-कहानी /20
-डॉ. विश्वमोहन कुमार शुक्ल

**काव्य कुंज :** /22
तसलीमा, अजय कुमार, वीणा जैन, पंचलंगिया, डॉ.ए.बी. साई प्रसाद,मनु सिंह

**साहित्य समाचार :** /25
राष्ट्रीय आंदोलन, हिंदी और गाँधी पर संगोष्ठी

**शक्सियत :**

विगत स्मृतियाँ साकी हैं-वंदना वीथिका /26

**समीक्षा:**

हाशिए पर जोर नहीं है पुस्तक..... /27
-डॉ. दीनानाथ 'शरण'

हिंदी हाइकु लेखन का प्रभावी परिदृश्य /28
-डॉ. भगीरथ बड़ोले

भारतीयता और संस्कृति को जोड़ती पुस्तक -प्रो. एल.एन. शर्मा /29

रंग मैले नहीं होंगे-कुमार रवीन्द्र /30

**राजनीतिक नजरिया:**

लोकतंत्र का बदलता स्वरूप -गणेश प्र. सिंह /32

बसपा, जद (यू) को झटका /34

जो जीता वही सिकंदर /35

भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट -प्रो. साधुशरण /37

**गतिविधियाँ :**

पटेल,देशरत्न,आजाद की जयंती /39

सूरत का अणुव्रत अधिवेशन /41

**देश-विदेश:**

सद्दाम की गिरफ्तारी-प्राणेन्द्र कुमार सिंह /44

**समाज:**

वैचारिक क्रांति की तलाश -मनोज कुमार /45

मेरे पति की ईमानदारी......संगीता गोयल /46

**गाँव-जवार:**

किसानों की दुर्गति-डॉ. ईश्वर डाबरा /48

**कला-संस्कृति**

हैदराबाद की चिट्ठी /49

चेन्नै की चिट्ठी /50

**सम्मान:**

वर्ष 2003 का नोबेल पुरस्कार /51

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार /53

डॉ. शोभनाथ को निराला काव्य सम्मान /53

**श्रद्धांजलि:**

द्रविड़ आंदोलन के व्याख्याकार मुरासोली मारन का निधन /54

**साभार-स्वीकार:** /55


**विहंसता बिहान लोकतंत्र देशरत्न सम्मान श्रद्धांजलि**

## पत्रिका-परामर्शी


❑पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ० बालशौरि रेड्डी,❑ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑ डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी'


रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

## प्रेरक और प्रभावकारी

जयंती-विशेषांक-17 का आवरण गाँधी, पटेल, जे.पी., शास्त्री और लता जी के भावपूर्ण चित्रों से सुसज्जित होने के कारण अत्यंत प्रेरक और प्रभावकारी हो गया है। अंक में शास्त्रीजी एवं लता पर भी आलेख रहना चाहिए। गांधी, पटेल और जे.पी. पर प्रकाशित आलेख पठनीय और प्रेरणाप्रद है। आपका अग्रलेख प्रासंगिक, विचारोत्तेजक एवं नई और मौलिक दृष्टि से लैश है। संस्कृति न किसी जाति की होती है और न कालबद्ध। संस्कृति सदैव सामाजिक होती है और हमारी संस्कृति भारतीय है-हिंदू नहीं। वैसे विश्व हिंदी सम्मेलन पिकनिक सम्मेलन है-इससे हिंदी का कोई भला नहीं होता। कुछ लोगों का इसके बहाने सैर-सपाटा हो जाता है। दिल्ली के तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में मैं भी शामिल था। सम्मेलन की कोई उपलब्धि नहीं थी। प्रो. दीनानाथ 'शरण' जी को 'शिव' जी से एलर्जी है क्या? 'दिनकर' जी ने भी कामायनी की भाषा पर अपने निबंध "दोषरहित दूषण सहित" में प्रश्न चिन्ह लगाया है। मैंने भागलपुर से प्रकाशित 'गंगा' में भी शिव जी के संबंध में उक्त आशय का आलेख कभी पढ़ा था। उस समय शिव जी बनारस में रहते थे। कुशल संपादन के लिए बधाई!

**-प्रो. लखनलाल सिंह 'आरोही', बांका**

**रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें--**

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'

यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

## तटस्थ विवरण का क्या होगा?

'विचार दृष्टि' का अक्टू.-दिसं. 03 अंक मिला। सूरीनाम में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन का विवरण पिछले अंक में पढ़ा था। बड़ा दुख हुआ था। फिर अन्य पत्रिकाओं में विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखे विवरण पढ़े। तटस्थ में डॉ. नरेन्द्र कोहली का विवरण तटस्थ-सा लगा, मगर प्रस्तुत अंक में पद्मश्री डॉ. श्रीवास्तव जी के विवरण को पढ़कर ऐसा लगा कि सम्मेलन का स्पष्ट, तटस्थ विवरण शायद कभी पता नहीं चलेगा। जिन लोगों को अनेक पत्रिकाएं पढ़ने का अवसर नहीं मिलता, वे तो अनेक भ्रांतियां और पूर्वाग्रह ग्रसित रहेंगे। निष्पक्ष पत्रकारिता पर से लोगों का विश्वास उठता भी रहा है।

**-डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, अहमदाबाद**

## उत्कृष्ट प्रस्तुति

महापुरुषों के जयंती-विशेषांक-17 में आपने मेरी कहानी को समायोजित कर मुझे जो सम्मान दिया उसके लिये मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। अंक में प्रो. दीनानाथ 'शरण' का बहुप्रतीक्षित शोध-लेख-'क्या कामायनी का भाषा संशोधन आचार्य शिवपूजन सहाय ने किया था' पढ़कर बेहद प्रसन्नता हुई। इस लेख को तैयार करने में भाई दीनानाथ जी को बड़े पापड़ बेलने पड़े होंगे और यह उन्हीं जैसा जुझारू व्यक्ति था जिसने लेख पूरा करके ही दम लिया। मैं भी उनके निष्कर्षों से पूर्णतः सहमत हूँ।

मेरी कहानी में दुर्भाग्यवश दो-तीन स्थानों पर मेरे हस्तलेख की एक-दो पंक्तियां कंप्यूटर-कम्पोजिंग में छूट गई हैं। भविष्य में यदि प्रूफ-संशोधन पर थोड़ा और ध्यान दिया जाय तो अच्छा होगा। यों, कुल मिलाकर अंक उच्च-कोटि का है और ऐसी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिये आप बधाई के पात्र हैं।

**-कृष्णकुमार राय, वाराणसी**

## पत्रिका विकासोन्मुख

पत्रिका उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही है। इस अंक के कुछ निबंध बड़े ही सूचनापरक एवं विचारोत्तेजक हैं। सबसे पहले तो संपादकीय, जो गाँधी और पटेल की प्रासंगिकता को उजागर करता है वर्तमान समाज के लिए उपयुक्त है। यह संपादक की सूझबूझ की प्रौढ़ता प्रकट करता है। प्रो.(डॉ.) दीनानाथ 'शरण' का कामायनी विषयक निबंध भी शोध पूर्ण एवं भ्रम-निवारक है। 'रंगे सियारों का राष्ट्रवाद' के लेखक भी बधाई के पात्र हैं, जो धर्म-आधारित राजनीति की पोल खोल रहे हैं। वास्तव में, इन रंगे सियारों से मुक्ति पाए बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। प्रूफ-संशोधन पर कुछ और ध्यान दिया जाए तो अच्छा होगा।

**-राजभवन सिंह, पटना**

## जरा इनकी भी सुनें

देश में आतंकवाद, गरीबी और विकास की चुनौतियों का सामना करने के लिए दुनिया भर में रह रहे भारतीयों के लिए एक 'सांस्कृतिक राष्ट्रकुल' बनाने की आवश्यकता है।

**-प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी**

इराक के अपदस्थ राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की गिरफ्तारी से काले और दर्दनाक युग का अंत हो गया है किंतु इसका अर्थ हिंसा का अंत नहीं है।

**-अमेरीकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश**

अब इराकी जनता को सद्दाम नामक खौफ से डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि हमने उन्हें इस खौफ से मुक्ति दिला दी है।

**-ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टॉनी ब्लेयर**

पिता अपनी पैत्रिक संपत्ति का समुचित भाग बेटियों को उनके विवाह के समय अथवा उसके बाद उपहार स्वरूप दे सकता है।

**-उच्चत्तम न्यायालय**

आतंकवादी हमले का निशाना वह ही थे। निश्चित रूप से यह आतंकवादियों की हरकत और लक्ष्य में ही था।

**-पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ**

कोई भी दल दूध का धुला नहीं है और राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव में इस तरह की धोखाधड़ी की जाती है, जिसकी कल्पना भी संविधान के निर्माताओं ने नहीं की थी।

**-मुख्य चुनाव आयुक्त जे.एम. लिंगदोह**

पाकिस्तान ने छेड़ा था भारत के खिलाफ छद्म युद्ध।

**-पाक के पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो**

# सवाल आज बचपन बचाने का

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में इस राष्ट्र ने अपने कदम तो रख दिए हैं, किंतु आजादी की अर्द्धशती से अधिक की अवधि की आरेखित कमियों, खामियों, भ्रमों तथा उलझनों एवं समस्याओं का निदान-समाधान दिए बिना भारत की स्पष्ट तस्वीर नहीं दीख रही है। जब बचपन भूखा, निराश, अस्वस्थ हो, कुपोषण का शिकार हो, यौवन अंधकारमय हो, तो उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना हास्यास्पद नहीं तो और क्या है? जन्म लेते ही बच्चे के सिर पर कर्ज का बोझ और शुल्क का साया। स्वाधीन भारत के लाखों भूखे भतीजों के चेहरे चाचा नेहरू के मुस्कुराते चेहरे और उनके अचकन के सामने टँगे गुलाब की तलाश कर रहे हैं, जिन्हें दो जून की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती। इलाहाबाद का आनंद भवन अपने गौरवमय अतीत की कहानी कहता आज भी शान से सिर ऊँचा किए खड़ा है, पर दुःखद यह कि बच्चों के चाचा के घर का दर्शन करने के लिए टिकट लगने लगा है। तभी तो डॉ. जमीर अहसन कहते हैं-

**"लगने लगा है जब से टिकट आनंद भवन में जाने का**
**सब बच्चों ने नेहरू जी को चाचा कहना छोड़ दिया।"**

जिस तरह के बच्चों के गाल थपथपाकर नेहरूजी चाचा नेहरू कहलाए वही बच्चे आनंद भवन के भव्य प्रासाद की ओर टुकुर-टुकुर निहार रहे हैं। बाल-दिवस भी मनाते-मनाते बच्चे भी अब जवानी देखे बिना बूढ़े हो चले हैं और आज भी वे टूटे सपनों की सौगातें संजोते हैं। हम बालश्रम पर लेख लिखकर भले अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं मगर स्कूल जाने की उम्र में ही बच्चे रिक्शा खींचते दिखाई देते हैं, होटलों में प्लेटें धोते-धोते उनके हाथ-पांव भी पानी से उजले नजर आते हैं, स्टेशनों पर बाबुओं के बूट चमकाते देखे जाते हैं और सपनों की दिनभर में जमा हुई थोड़ी-सी रेजकारी गिनते-गिनते शाम को शराबी बाप के सामने जाकर बिखर जाते हैं।

एक बार चाचा नेहरू ने जापानी बच्चों को हाथी भेंट किया था। पूर्वी पाकिस्तान से आया एक शरणार्थी बच्चा तड़प उठा था और उसने भूख से बिलबिलाकर नेहरू जी को एक पत्र लिखा था, जिसे शब्दों में बाँधा था कवि उमाकांत मालवीय ने-

**"चाचा जापानी बच्चों को भेजो हाथी**
**पर मुझे दूध की जगह धान का धोवन ही बस**
**एक निवाला चावल भेजो खैराती।"**

इस राष्ट्र के हजारों-हजार बच्चे आज भी चाउमिन खानेवाले बच्चों को ललचाई आँखों से निहारते एक निवाला चावल के लिए तरस रहे हैं, धूल फाँक रहे हैं। चाउमिन खाने-वाले या 'वीडियोगेम' खेलनेवाले बच्चे क्या कभी समझ पाएँगे उन बच्चों के दर्द को, जो गहराती हुई भूख से लुकाछिपी खेलते हैं, कुलबुलाती हुई आंतों की ऐंठन से इनका परिचय होता है। इन बच्चों के बारे में भी हमें आज सोचना आवश्यक है क्योंकि इन बच्चों से ही राष्ट्र की एक पूरी शक्ल बनती है और इन बच्चों के सपनों को ही मूर्त रूप देकर 'इंडिया वीजन 2020' का स्वप्न पूरा किया जा सकता है। बच्चों की इस शक्ल का साफ-सुथरा होना, हमारे देश के आईने को धुंधला होने से बचाएगा और इसी से सिद्ध होगी कोई बाल-दिवस की सार्थकता भी।

बड़ों में चाहे जितने भेदभाव हों, पर बच्चों में कोई भेदभाव नहीं होता। काश! बड़े बच्चों से कुछ सीखते तो संभवत: संसार अधिक सुखी होता। तब न आणविक अस्त्रों की होड़ लगती और न युद्ध होते। अँग्रेजी के सुप्रसिद्ध रचनाकार वर्ड्सवर्थ का कहना है कि मनुष्य जैसे-जैसे बचपन से दूर होता गया, वैसे ही वैसे वह विकृतियों का शिकार बनता गया। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आज बच्चों का बचपन भी छीना जा रहा है? आज सवाल है बच्चों के बचपन बचाने का। जरूरत इस बात की है कि बच्चों का बालमन, उनका बचपन, हिंसा और अपसंस्कृति फैलाती अश्लील फिल्मों और दूरदर्शन के विविध चैनलों की गंदी तरंगों से कैसे बचाया जाए। बच्चों के पास समय का भी अभाव होता जा रहा है। जो समय वे पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने में लगाते थे, वह समय दूरदर्शन ले लेता है। फलत: बाल साहित्य की पठनीयता कम हो रही है और बच्चे अपने साहित्य के आस्वाद से वंचित हो रहे हैं। आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक समाज में आशा से अधिक अपने बच्चों से उम्मीद लगाए अभिभावकों के लिए बच्चों को नैसर्गिक प्रकृति से दूर रखने की मानसिकता ने टी.वी. की सार्वभौमिकता को ग्राह्य बना दिया है। बच्चों में आज जिस प्रकार जिज्ञासाएं बढ़ती जा रही हैं, उनकी बौद्धिक एवं मानसिक खुराक की पूर्ति बाल साहित्य कहाँ तक कर पा रहा है, इसपर विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि बच्चे न केवल समाज-संस्कृति से जुड़ सकें, बल्कि सामाजिक-वैज्ञानिक बदलावों से भी अवगत

हो सकें। ऐसा न हो कि बाल साहित्य के नाम पर कूड़ों की भरमार से बच्चों में ऊब और शिथिलता उत्पन्न हो जाए। वैसे भी अभिभावकों की नासमझी से बच्चे बड़ों के कार्यक्रमं देखकर अपना बचपन खोते जा रहे हैं।

सच तो यह है कि आज भी बाल साहित्यकार अपने पुराणपंथी ढर्रों से उबर नहीं पा रहे हैं। बाल रचनाकारों की कुपमंडूकता एवं सतही ज्ञान की वजह से एक ही बिंबों को घुमा-फिराकर बच्चों के समक्ष परोसा जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप बाल पाठक एक खीझ और निराशा से उपजी मिली-जुली प्रतिक्रिया से गुजरता है। उसे तो कुछ नया चाहिए, जिसे वह स्वयं नहीं समझ पा रहा है। इस बात को बाल रचनाकार गंभीरता से समझें और अपनी लेखनी चलाएं। इस संदर्भ में बांगला साहित्य की अवधारणा औरों से अलग है। बांगला साहित्य में किसी लेखक को तबतक लेखक नहीं माना जाता, जबतक वह बच्चों के लिए कुछ न लिखें।

दरअसल अन्य बाल साहित्य में बार-बार रूढ़ एवं परंपरावादी विचारों को बच्चों पर थोपने के हम आदी हो गए हैं। बच्चों को आदर्श बनाने के चक्कर में हम वही घिसी-पिटी जातक पुराण की कथाओं को बच्चों के समक्ष रखते जा रहे हैं जिससे बच्चे अभिप्रेरित होकर कुछ नहीं बनते। इसकी जगह यदि सामाजिक-पारिवारिक स्थितियों, जिस परिवेश में बच्चा पलता-बढ़ता है, बच्चा अपने ढंग से कुछ करना-सीखना चाहता है, पर रचनाओं को केंद्रित किया जाए तो वह ज्यादा महत्वपूर्ण होगा। इस पर बाल रचनाकारों ने बहुत कम ध्यान केंद्रित किए हैं। फलतः बाल साहित्य के बदले आज चटपटे कॉमिक्स खरीदकर बच्चे खूब चाव से पढ़ते हैं। इस प्रकार कॉमिक्स की आड़ में दूषित कॉमिक्स चल पड़े हैं। आज बाल पाठक कॉमिक्स से इतने अधिक प्रभावित हो चुके हैं कि स्वस्थ साहित्य पर आधारित पत्र-पत्रिकाओं के प्रति बालकों का लगाव कम हो गया है। जानकारी और उत्सुकता की कमी के चलते घर-परिवार में साहित्य पढ़ने जैसा माहौल नहीं बन पा रहा है। ऐसी स्थिति में बाल रचनाकारों का दायित्व बन जाता है कि श्रेष्ठ तथा संवेदनशील रचनाओं से बाल साहित्य के भंडार को विपुल बनाएं ताकि बच्चे अपना बचपन बरकरार रख सकें। बच्चे रचनाओं में अपना लगाव महसूस कर सकें, ऐसी कालजयी रचनाओं का सृजन जरूरी है।

आवश्यकता अधिकाधिक मौलिक बाल साहित्य के लेखन की है। सामंती कथाओं और अवास्तविक एवं कपोल कल्पनाओं पर आधारित साहित्य भी अपेक्षित नहीं है। लोककथाओं में निहित बाल साहित्य को नई दिशाओं की ओर भी ले जाना लाजिमी होगा। ग्रामीण बालक, घर में नौकरी करते बाल मजदूरी से संत्रस्त, कूड़े के ढेर पर प्लास्टिक उठाते या ढाबे में प्लेटें धोते बालक भी कथा साहित्य के नायक हो सकते हैं। इससे बालकों का मानसिक विस्तार होगा। अतः बालकों को बाल साहित्य से जोड़ने का काम अभिभावकों को भी करना चाहिए, विशेष रूप से सुरक्षित अभिभावकों को।

इस देश में बाल मजदूरी का दंश भी विचारणीय विषय है। वास्तव में आजादी के छप्पन साल बाद भी देश में बचपन अभी पूरी तरह आजाद नहीं हो पाया है। आज खेत-खलिहानों, होटलों, घरों, दुकानों, गैराजों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि स्थानों पर कानून की धज्जियाँ उड़ाकर छोटे-छोटे बच्चों से मजदूरी करवाते खुलेआम देखा जा सकता है। कानून कहता है कि देश में चौदह वर्ष तक की उम्र के बच्चों से मजदूरी कराना जुर्म है। इसका उल्लंघन करनेवाले को सजा भी दी जा सकती है। इसके बावजूद बाल मजदूरी धड़ल्ले से जारी है। स्कूल जाने और खेलने-कूदने की उम्र में ही जिम्मेदारियों का बोझ उठाए कुंहलाए बचपन पर नजर डालने की फुरसत न तो सरकार के पास है और न स्वैच्छिक संगठनों के पास। क्या इसी बचपन और उसे ढोते बच्चों से राष्ट्रपति का विजन-2020 का सपना पूरा होगा? यह भी सही है जबतक समाज की इकाई स्तर तक जागरूकता नहीं आएगी, तबतक इस समस्या से निजात पाना आसान न होगा। सरकार के साथ यह देखना समाज के हर व्यक्ति का भी दायित्व बनता है कि कोई निर्धन माता-पिता धन के अभाव में न तो अपने बच्चों को बेचने पाएं और न ही उनके बच्चे मजदूरी करते देखे जाएँ। जहाँ कहीं भी बच्चे मजदूरी करते दिखें, उसका कड़ा विरोध किया जाए और ऐसे स्थानों का बहिष्कार किया जाए। तभी बाल मजदूरी के दंश से मुक्ति मिल सकती है, अकेले कानून का मुँह ताकने से कुछ होनेवाला नहीं है।

## पत्रिका का पाँच वर्ष पूरे कर छठे में प्रवेश

जब हम बच्चों के बचपन की बात कर रहे हैं तो इसी वक्त आप पाठकों की पत्रिका **'विचार दृष्टि'** की उम्र की ओर भी हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे, जिसने अपना पाँचवां वर्ष पूरा कर छठे में प्रवेश किया है। इस बीच आपकी जो प्रतिक्रिया आ रही है उससे ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि इसने आपकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को बहुत हद तक पूरा करने की कोशिश की है जिसका सारा श्रेय पाठकों व लेखकों को ही जाता है। ऐसा नहीं है कि इस बीच इसके समक्ष आर्थिक मुश्किलें नहीं आई हैं, किंतु यह भी सच है कि आपने इसे अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान कर हमारा हौसला बरकरार रखा है, जो हमारी असली पूंजी है। विश्वास है हम आपका यह सहयोग आगे भी प्राप्त करने में कामयाब होंगे ताकि राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में यह अपनी ऊर्जा कायम रख सके।

# तो फिर देश क्यों इतना लहूलुहान?

**पिछले दिनों दिल्ली में 'अहिंसा' पुस्तक के लोकार्पण के क्रम में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने धर्म की इतनी चर्चा, संस्कृति के इतने गुणगान के बावजूद देश में लगातार बढ़ती हिंसा और अपराध की प्रवृतियों पर अपनी चिंता जताते हुए विद्वतजनों, लेखकों एवं विचारकों से इकट्ठा होकर इस पर चर्चा करने का आह्वान किया था ताकि अहिंसा को लेकर उनके मन में चल रहे द्वंद्व का निवारण हो सके और साथ ही धर्म के प्रति देशवासियों के मन में इतनी गहरी आस्था के बावजूद बढ़ती हिंसक प्रवृतियों के असली कारण का पता चल सके। इसी के आलोक में 'विचार दृष्टि' पत्रिका ने इसे बहस का मुद्दा बनाने का निर्णय लेकर राष्ट्रीय चेतना के अपने वैचारिक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के माध्यम से पटना तथा दिल्ली में कई विचार संगोष्ठियाँ एवं परिचर्चाएं आयोजित कीं। इसके साथ ही अपने सांस्कृतिक प्रतिनिधियों के द्वारा समाज के विभिन्न तबकों की उक्त विषय पर राय जानने की कोशिश की। प्रस्तुत है यहाँ पटना के प्रतिनिधि डॉ. अरुण कुमार गौतम के साथ साहित्य, धर्म, शिक्षा, राजनीति एवं संगठन से जुड़े पटना के कुछ महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों की हुई बातचीत के अंश, जिसका विषय था-'धर्म की इतनी चर्चा, संस्कृति का इतना गुणगान, तो फिर देश क्यों इतना लहूलुहान?'- संपादक**

सुप्रसिद्ध समालोचक और सौंदर्यशास्त्र के उद्भट्ट विद्वान **डॉ. कुमार विमल** इस बात से सहमत हैं कि मौजूदा स्थिति चिंताजनक है-

**चाके जिगर मोहताजे रफू है**
**आज तो दामन सिर्फ लहू है।**

इस स्थिति में सरदार पटेल जैसे नेता याद आते हैं, जिनके नेतृत्व में दिशा, दृष्टि और दृढ़ता-ये तीनों गुण पर्याप्त मात्रा में थे। आजादी के बाद इस देश में विखंडन के कारकों की संख्या बढ़ी है। धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता, जातियता और ऐसे अन्य अनेक कारण अब बहुत सशक्त हो गए हैं, जो देश की 'एका' को कमजोर बना रहे हैं। इन पृथकतावादी शक्तियों में धर्म सबसे अधिक 'बाँटने' का काम कर रहा है, जबकि धर्म को आपस में 'जोड़ने' का काम करना चाहिए था। पहले केवल हिंदू-मुस्लिम अलगाववाद था, अब इस अलगाववाद के अनेक रूप सामने आ रहे हैं। हिंदू-सिख पृथकतावाद, जैन, बौद्ध अलगाव, उत्तर-दक्षिण का विवाद, नदी जल के लिए विवाद-कितना गिनाया जाए। सब जगह अलगाव-बिलगाव और बिखराव ही बिखराव है। पता नहीं, इस देश के वासियों के दिलों में अभी कितने पाकिस्तान छिपे हुए हैं। जब तक इस देश में धर्म-भेद, भाषा-भेद, जाति-भेद, क्षेत्रीयता-भेद इत्यादि जैसे भेद बने रहेंगे, तब तक यह देश लहूलुहान होता रहेगा।

डॉ. विमल आगे कहते हैं कि हमारा ध्यान विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों की आंतरिक समानता की ओर जाना चाहिए, किंतु हम उनके उपरी भेद को ही रेखांकित करते रहते हैं, जिससे 'फंडामेंटलिज्म' पैदा होता है और वह 'फंडामेंटलिज्म' डंटेफाडा जैसी उग्रताओं को सुलगाकर आतंकवाद का रूप ले लेता है। हम यह भूल जाते हैं कि सभी धर्मों का मूल व्याकरण एक है। अध्यात्म जगत में लिपियों का भेद नहीं चलता और अध्यात्म की अभिव्यक्ति समान वर्णमाला में होती है। चूंकि हम इस गूर को भूलते जा रहे हैं इसलिए धर्म और संस्कृति की गरमागरम चर्चा के बावजूद हमारा देश लहूलुहान होता जा रहा है। आज इस देश को और इस देश के वासियों को मेगा-एथनौसा(महाप्रजातियता) की जरूरत है।

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक **डॉ. अमर कुमार सिंह** प्रश्नोत्तर में बताते हैं कि धर्म की केवल चर्चा हो रही है, आदमी भीतर से धार्मिक नहीं है। धर्म के नाम पर वह केवल लाभांवित होना चाहता है। समाज और राजनीति के द्वारा धार्मिक चेतना सही अर्थ में मनुष्य की चेतना का विस्तार करती है। जिसकी चेतना विस्तार नहीं पाती वह व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता। 'वैष्णव जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने रे' गाँधी इस पंक्ति को बराबर उद्धृत करते थे। अब दूसरों की पीड़ा से किसी को कुछ लेना-देना नहीं रहा। धर्म के नाम पर वोट माँगा जा रहा है। धार्मिक चर्चा का भी वही संदर्भ है। ऐसी स्थिति में हिंसा को बढ़ावा तो मिलना ही है।

पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर के पुजारी **मायाराम दास** का कहना है कि धर्म अपनी जगह पर है। धर्म की आड़ में कुछ लोग अपने स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हैं। धर्म का राजनीतिकरण हो रहा है। राजनेता सबसे ज्यादा गड़बड़ी कर रहे हैं। जनता तो नेताओं के पीछे है। नेता धर्मवाद, जातिवाद और वर्गवाद में लोगों को बाँट रहे हैं और परिणाम जनता को भुगतना पड़ता है। धर्म की बात तो करते हैं, परंतु धर्म का आचरण नहीं करते। राजनीति में नेता और महात्मा अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। कुछ कमी धर्माचार्यों में भी है। अगर धर्माचार्य लोग एक हो जाएं तो खून-खराबा रूक सकता है। स्वार्थ को त्याग कर देशहित में कार्य करना चाहिए। देश में आतंकवाद राजनेताओं के कारण फैला है। प्रशासन चुस्त हो जाए तो खून-खराबा रूक सकता है।

'अलका मागधी' के संपादक **डॉ. अभिमन्यु प्रसाद मौर्य** बहस के प्रश्न का

उत्तर देते हुए कहते हैं कि भारत देश की संस्कृति पूरे विश्व में अपनी अलग छाप छोड़ती है। होली-दिवाली का उत्साह हो या ईद-मुहर्रम का त्योहार हिंदू-मुस्लिम दोनों समुदाय के लोगों को एक साथ देखा जा सकता है। डॉ. मौर्य का दावा है कि देश में हो रही खून-खराबी का एकमात्र कारण धर्म नहीं है। देशभर में होनेवाले सभी दंगे-फसाद सांप्रदायिक हों, यह जरूरी तो नहीं। नब्बे प्रतिशत हिंसा के कारण अलग-अलग होते हैं। नक्सली संगठनों द्वारा होनेवाली हिंसात्मक कार्रवाई के मुख्य कारण आर्थिक एवं राजनीतिक होते हैं। सत्ता के लिए होनेवाले दंगों का सांप्रदायिकता से कोई लेना-देना नहीं है। सीमा पर होनेवाली गोलीबारी अथवा आतंकवादियों द्वारा की जा रही हिंसा विदेशियों एवं देशद्रोहियों की साजिश के परिणाम हैं।

डॉ. मौर्य बाकी बचे दस प्रतिशत सांप्रदायिक हिंसात्मक घटनाओं के लिए हिंदू को दोषी नहीं मानते हुए कहते हैं कि हिंदू धर्म के लोग स्वभाव से सहिष्णु होते हैं, साथ ही दूसरे धर्म के लोगों का आदर करते हैं। इसके विपरीत इस्लाम में उसे न माननेवालों को काफिर कहकर उनसे नफरत का पाठ पढ़ाया गया है। अपनी नफरत के वशीभूत होकर वे लोग हिंदुओं पर आक्रमण करते हैं। फिर भी वे मानते हैं कि हिंदू-मुस्लिम दंगों का मुख्य कारण नफरत नहीं है। दरअसल वोट की राजनीति से प्रेरित राजनेता मुस्लिम वोट बैंक मजबूत करने के लिए उनके दिलों में हिंदुओं के प्रति नफरत बनाए रखना चाहते हैं। आम आदमी को इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

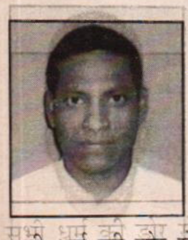

शांति कुंज, हरिद्वार के वेदविभाग से जुड़े **प्रताप सोलंकी** के अनुसार माँ, पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, जीव-जंतु, पेड़-पौधे आदि सभी धर्म की डोर से बँधे हैं। यदि वह अपने नियम-अनुशासन और सहयोग की भावना को छोड़ दें तो यह सुंदर शस्य-श्यामली धरती टूटकर बिखर जाए। अतः धर्म बड़ा व्यापक है। धर्म का अर्थ है-हम दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं करें, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं, किंतु दुःख इस बात का है कि कुछ तथाकथित लोगों ने धर्म की आड़ में, धर्म का चोला पहनकर अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए, जन-मानस के ऊपर राज करने के लिए धर्म को ढाल बनाया। उनकी महात्वाकांक्षा, पद-प्रतिष्ठा और आगे बढ़ने की इच्छा ने धर्म, संस्कृति और देश को रौंदकर लहूलुहान कर दिया। इसे बचाने तथा धर्म के प्रति जनमानस की आस्था को बढ़ाने के लिए देवालयों को जन-जागृति का केंद्र बनाना होगा। गायत्री-परिवार को वे उसी आशा का अँकुर मानते हैं।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी **महेश प्रसाद** मनुष्य को एक स्वार्थी प्राणी बताते हुए पूरे देश में, विशेष तौर पर बिहार में बढ़ती जातियता पर चिंता प्रकट करते हैं और यह संतोष जताते हैं कि शोषित, पीड़ित एवं दलित जाति के लोगों में इधर हाल के वर्षों में जागृति आई है, किंतु अफसोस यह कि तथाकथित ऊँची जाति के लोगों को यह पसंद नहीं क्योंकि शोषक-प्रवृति के कारण वे गरीब तथा हाशिए पर पड़े तबकों को कुचलने में विश्वास करते हैं। सुखद स्थिति यह है कि उत्पीड़ित जनसमुदाय अब अपने मान-सम्मान की लड़ाई लड़ने को तैयार है। जहाँ तक धर्म का सवाल है उनके अनुसार धर्म का सहारा लेकर लोग उग्रवाद फैला रहे हैं और धर्म की ढाल बनाकर अपना वर्चस्व कायम करने में लगे हैं, जिसके परिणामस्वरूप टकराव और खून-खराबा स्वाभाविक है। जबतक देश में भाईचारा का माहौल नहीं बनेगा तब तक शांति कायम होना सम्भव नहीं।

बौद्ध परिषद् के अध्यक्ष और 'बौद्ध विहार' के संपादक **भंते करुणाकृति** की दृष्टि में लोग धर्म की बात तो करते हैं, किंतु धर्म के बताए मार्ग पर नहीं चलते हैं। 'ध्येय' धातु

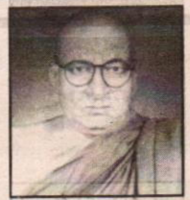

से बने धर्म को सद्विचारी और कल्याणकारी मानते हुए वे कहते हैं कि पृथ्वी, हवा, जल और अग्नि से बनी इस सृष्टि के जो लोग ईश्वर को मानते हैं उन्हें आतंक फैलाने तथा नरसंहार जैसे अमानवीय कार्य नहीं करने चाहिए। खेद है कि आज राजनीतिक दल और उसके लोग ही धार्मिक उन्माद फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। उनके अनुसार हजारों वर्ष पूर्व के बौद्ध मंदिरों को तोड़कर राम, कृष्ण और विष्णु के मंदिर का निर्माण किया गया है। देश के लहूलुहान होने के पीछे सत्ता में बैठे नेताओं का हाथ मानते हुए धर्म को राजनीति से जोड़ने को वे अनुचित करार देते हैं।

**प्रो. तुलसी प्रसाद** का मत है कि मानव मस्तिष्क अभी विकास के दौरान विकलांग अवस्था में है। परिपक्वता के अभाव के कारण मानव अपने निहित स्वार्थ में उलझा रहता है और अज्ञानता की वजह से मान्यताओं के अंतर्गत अपने बहुमूल्य जीवन को समाप्त कर देता है। मान्यताएं समाज की अनगढ़ आवश्यकताओं के अनुसार निर्मित होती हैं और मानव अज्ञानतावश उसी मान्यताओं के आधार पर अपनी आदत के अनुसार जीते हुए समाप्त हो जाता है।

प्रगतिशील मगही समाज के सचिव और 'मगह के हुंकार' के प्रधान संपादक **शिवनन्दन प्रसाद** धर्म का अर्थ मनुष्य का स्वभाव मानते हुए कहते हैं कि अच्छा और बुरा इन दो विचारों से संपन्न मनुष्य विवेकशील होते हुए भी अपने विवेक से नहीं चलता। अगर वह अपनी इच्छाशक्ति को परमात्मा की इच्छा से जोड़कर चले तो उससे गलत कार्य नहीं होगा। राजनीतिज्ञों और बुद्धिजीवियों के आर्थिक-मानसिक शोषण के कारण ही अमीर-गरीब के बीच टकराव होता है। इस प्रवृति को समाप्त करने के पश्चात ही सुधार की गुंजाइस है।

पटना के जिला पार्षद् तथा राजनीति से जुड़े **डॉ. कुमार इन्द्रदेव** का साहित्य-मन कहता है कि अभाव से कोई दुखी नहीं, बल्कि

स्वभाव से दुखी है। धरियेति इति धर्मः। भगवान बुद्ध और उससे पहले से धर्म की चर्चा होने का हवाला देते हुए डॉ. इन्द्रदेव बताते हैं कि पूर्व में धार्मिक लोग समाज सुधारक और चरित्रवान हुआ करते थे, किंतु अब धर्म बाह्य आडंबर बनता जा रहा है और धर्म की चादर तले उसे मुखौटा बनाकर भ्रष्टाचार, अपहरण, लूट-पाट तथा बलात्कार जैसे सारे कुकर्म करने पर लोग अमादा हैं जिस पर काबू पाने के लिए संवेदनाओं का पल्ला पकड़ना होगा। इस कार्य को अंजाम देने का दायित्व स्वाभाविक तौर पर साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों के कंधों पर जाता है। डॉ. इन्द्रदेव की स्पष्ट धारणा है कि आज देश की स्वतंत्रता पर जो प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है उसका प्रमुख कारण राजनीतिज्ञों द्वारा नैतिकता को भुला दिया जाना है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। सत्ता और संपत्ति की लिप्सा में आज के राजनेता कुछ भी करने को तैयार हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में समस्याओं पर काबू पाने का एक उपाय यह भी है कि धर्म की सही परिभाषा से लोगों को परिचित कराया जाए और इसमें पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अहम होगी।

सांस्कृतिक गतिविधियों से गहरे रूप से जुड़े तथा 'ऑन मासूमी शो' के सर्वेसर्वा एवं मशहूर गायक **ऑन मासूमी** का नजरिया कुछ और ही है। देश का लहूलुहान होना किसी भी प्रजातांत्रिक देश की स्वाभाविक प्रक्रिया है,जिसे भारत सहित पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में आसानी से देखा जा सकता है। जब तक भारत गुलाम था, ऐसी बात नहीं थी। यहाँ तक कि मासूमी प्रजातंत्र से राजतंत्र को इस माने में अच्छा मानते हैं कि राजतंत्र में डिक्टेटरशीप और अनुशासन होता है। जहाँ तक भारत का सवाल है एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होने के बावजूद यहाँ 'हिंदुत्ववाद' लागू करने का लगातार प्रयास चल रहा है। देश में हो रही हत्याओं के पीछे ऑन मासूमी निश्चित रूप से सबसे अधिक राजनेताओं को दोषी मानते हुए कहते हैं कि स्वार्थवश वे किसी के साथ कुछ भी करने-कराने को तैयार रहते हैं।

☆☆

# विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केंद्रीय कानून 1956 नियम 8) के अनुसार **विचार दृष्टि** से संबंधित विवरण

प्रपत्र-4

| | | |
|---|---|---|
| 1. प्रकाशक का नाम | : | सिद्धेश्वर |
| 2. प्रकाशन का स्थान | : | दिल्ली |
| 3. प्रकाशन अवधि | : | त्रैमासिक |
| 4. मुद्रक का नाम | : | सिद्धेश्वर |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | 'दृष्टि', यू.-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 |
| 5. प्रकाशक का नाम | : | सिद्धेश्वर |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | 'दृष्टि', यू.-207, शकरपुर, विकासमार्ग, दिल्ली-92 |
| 6. संपादक का नाम | : | सिद्धेश्वर |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 |
| 7. मालिक का नाम व पता | : | सिद्धेश्वर, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 |

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

तिथि: 1 जनवरी, 2003

ह०

(सिद्धेश्वर)

प्रकाशक

# बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य की सार्थकता

❑ सिद्धेश्वर

सत्साहित्य बालक समाज तक पहुँचाने की जिम्मेदारी इसलिए भी महसूस की जा रही है कि बच्चे दूरदर्शन के विविध चैनलों की ओर अधिकाधिक संख्या में मुखातिब हो रहे हैं। टी.वी., .इंटरनेट, केबल जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चलते बच्चे बाल साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। बच्चा आज कंप्यूटर बनकर गंभीर बन रहा है। उसे स्वस्थ वातावरण मिलना चाहिए तभी वह अच्छे परिवेश में अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकेगा। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि अच्छे साहित्य के बिना बच्चे मुरझा रहे हैं। उनकी मुस्कान छीनी जा रही हैं, उनका बचपन छीना जा रहा है। जबतक उनके चेहरे पर रचनात्मक मुस्कान नहीं होगी, समाज व देश खुशहाल नहीं होगा क्योंकि किसी भी देश का भविष्य बच्चे ही होते हैं, किंतु दिन-व-दिन बच्चे उपेक्षित होते जा रहे हैं। प्रगतिशीलता और रूढ़िवादिता इन दो पाटों के बीच आज का बच्चा पिस रहा है। उसे न तो बाल साहित्य पढ़ने को मिल पा रहा है और न ही वह अपने भविष्य की राह तलाश पा रहा है। इस दृष्टि से आज बाल साहित्य के लिए आंदोलन चलाने की जरूरत है।

जब हम बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो उनका ध्यान विज्ञान अध्ययन के साथ-साथ साहित्य, संगीत, चित्रकारी, खेलकूद आदि कलाओं की ओर आकर्षित करने के लिए उनकी अभिरूचि को जगाना जरूरी हो जाता है। बाल साहित्य की रचना कर इसे अंजाम दिया जा सकता है। बाल साहित्य की रचना करते वक्त हमारा ध्यान निम्न बिंदुओं पर अवश्य जाना चाहिए-

1. रचनाओं की शैली रोचक हो ताकि बालक मन उबे नहीं और शब्दों के आडंबर में रचनाओं के मूल तात्पर्य छिप न जाए।

2. रचनाओं के वाक्य छोटे और सरल हों। अप्रचलित एवं असामान्य शब्दों का कम-से-कम प्रयोग हो। पारिभाषिक शब्दों का जहाँ प्रयोग हो, उनकी व्याख्या या परिभाषा वहीं पर या उसके आसपास ही उपलब्ध हो।

3. नए-नए शोध और गवेषणाओं की तर्कसंगत कल्पना करके उनके लिए मार्ग सुझाए जाएं और भावी संभावनाओं की ओर इंगित किया जाए ताकि बालकों में धैर्यपूर्वक काम में लगे रहने और परिश्रम करने की प्रवृति बढ़े।

4. बाल रचनाओं में सद को प्रोत्साहित और विकृति को दूर करने का प्रयास किया जाए क्योंकि देश व समाज में अब क्रांति की जरूरत है।

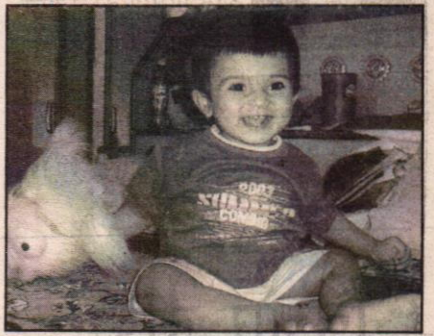

हिंदी में एक लंबे अरसे तक उपनिषद, पुराण, वृहतकथा, कथाचरितसागर, बेताल-पच्चीसी, सिंहासन द्वात्रिंशिका, पंचतत्र, हितोपदेश जैसे ग्रंथों को आधार बनाकर बाल रचनाएँ तथा परंपरावादी कहानियाँ लिखी जाती रहीं, किंतु हिंदी बाल साहित्य में आधुनिक कहानियों का सृजन द्विवेदी युग के बाद शुरू हुआ, कारण कि मानव संघर्षों से गुजर रहे दौर में लोगों को जीवन संघर्ष से जूझने और विभिन्न समस्याओं के समाधान का मार्ग चाहिए था। इस स्थिति में कोरे आदर्शवाद से ऊपर उठकर साहित्य को यथार्थोन्मुख करने के लिए बाल साहित्य में भी आधुनिक कहानियों की आवश्यकता महसूस की गई। बाल रचनाकार सुमन वर्मन ने अपने शोध प्रबंध '**स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल कथा साहित्यः एक अध्ययन** में आधुनिक कहानियों को बाल जीवन, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक परिवेश, विद्यालय प्रसंग, साहसिक, हास्य-व्यंग्य, ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक और जासूसी के इन नौ वर्गों में विभाजित किया है।

जटिल प्रतियोगिता के इस ज्ञानमय वातावरण में बच्चों के लिए मात्र थोथी कल्पनाएँ निरर्थक हैं क्योंकि आज के बच्चे राजनीति के साथ-साथ समाज की वर्तमान स्थिति से तो परिचित हैं हीं, संस्कृति का विद्रूप रूप भी उसके सामने है। ऐसी स्थिति में बस्ते के बोझ से लदे बच्चों को न तो कोई राजा दिखता है और न ही कोई परी, जो उसे कंप्यूटर से गलत उत्तरों के लिए भी अंक दिला दे। सही उत्तरों के लिए एकमात्र परिश्रम है जो उसे यथार्थ से जोड़ता है। वीडियो गेम और कॉमिक्स की अभिवृद्धि इसी का परिणाम है।

इन दिनों बालहंस, पराग, बाल भारती, सुमन सौरभ, लोटपोट, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक जागरण, बाल वाटिका, बच्चों का देश, हिंदुस्तान, अमर उजाला तथा बाल साहित्य समीक्षा जैसे अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बाल रचनाकार यथार्थ कहानियों को बालकों तक पहुँचाने में प्रयासरत हैं। चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट की बाल साहित्य प्रतियोगिता से भी इसे बल मिला है। राष्ट्रबंधु, उषा यादव, कृष्णा सागर, शंकर सुल्तानपुरी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, राजनारायण चौधरी, उषा सक्सेना, कमलेश भट्ट, चित्रेश, साबिर हुसैन, जाकिर अली 'रजनीश', नयन कुमार राठी, अरशद खान, रमाशंकर, राबिन शॉ पुष्प, रोहिताश्व अस्थाना, संजीव जायसवाल संजय, विमला रस्तोगी, अनंत कुशवाहा, क्षमा शर्मा, विनय मालवीय, रमा तिवारी, सुधि, ब्रह्मदेव, दिनेश चमोला, प्रभात गुप्त, बालशौरि रेड्डी, शोमनाथ लाल, अरशद खान, भगवती लाल व्यास, यादराम रसेंद्र, संदीप सक्सेना आदि बहुत से रचनाकार समर्पित भाव से आधुनिक भाव से जुड़ी कहानियों के सृजन में अग्रसर हैं।

**बाल कविताः**

बाल साहित्य की रचनाओं में कविता, कहानी, शिशु गीत, नाटक, संस्मरण, यात्रा-वृतांत

बाल पुस्तक समीक्षा जैसी विविध विधाओं में लिखी गयी सामग्रियों का समावेश हो। तो आइए हम सबसे पहले बाल साहित्य की महत्वपूर्ण विधा बाल कविता की महत्ता पर गौर करें।

बाल कविता का आस्वाद बच्चों के साथ-साथ बड़े भी लेते है जबकि बड़ों की कविता से बच्चे तारतम्य नहीं बैठा पाते। बच्चों की कविता लिखते वक्त इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि कविता लंबी न हो क्योंकि उसकी महत्ता और आस्वाद का स्तर उसकी लघुता में है। इस आपाधापी और

भागमभाग के दौर में अब तो बड़े भी मोटे उपन्यास, लंबी कहानियाँ अथवा लंबी कविताएँ नहीं पसंद करते। इसीलिए तो जापानी विधा हाइकु एवं सेनृ्यु कविताएँ आज प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में धड़ल्ले से रची जा रही हैं। बाल कविताओं में भी यदि हाइकु का प्रयोग किया जाए तो बच्चे उसे शीघ्र ग्रहण करने की स्थिति में होंगे। हाइकु रचनाकारों का ध्यान इस ओर जाना चाहिए। बाल कविता की लघुता के साथ-साथ उसके भाव, भाषा, छंद तथा शिल्प पर भी रचनाकारों का ध्यान आवश्यक है क्योंकि उसकी लघुता श्रेष्ठता में है।

**शिशु गीतः**

इसी प्रकार बाल कविता में शिशु की महत्ता अधिक है। शिशु निःसदेह बाल कविता का सबसे सुकुमार और बेशकीमती अंग है। किसी भी अच्छे शिशु गीत का प्रभाव बाल मन पर एक तरह की स्थायी छाप छोड़ता है और बड़े होने पर भी उसका प्रभाव फीका नहीं पड़ता। माँ के बाद किसी बच्चे के मन पर पहला असर किसी अच्छे शिशु गीत का ही होता है। शिशु के मन में अपने परिवेश, घर-परिवार, आसपास के माहौल और दुनिया की पहली छाप शिशु गीत के जरिए ही पड़ती है। और वह उनके जरिए खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख लेता है। आखिर तभी तो अँग्रेजी में 'बाबा ब्लैक शीप' 'हिकरी डिकरी' और 'टिवंकल-टिवंकल लिटिल स्टार' जैसे ऐसे दर्जनों नन्हें-मुन्ने नटखट शिशु गीत हैं, जो रंग-विरंगे खिलौनों की तरह ही बच्चों को लुभाते हैं और उनकी ओर वह खुद-ब-खुद खिंचता चला जाता है। इसी तरह बांगला में 'अबोल तबोल' जैसे शिशु गीतों के जादू का असर अब भी कम नहीं हुआ है। दरअसल शिशु गीत बच्चों को उपदेश देने के लिए नहीं लिखे जाते। वे अधिक से अधिक बच्चों के नन्हें-मुन्ने मित्र ही हो सकते हैं, जो उन्हें रिझाए और अपने साथ खेलने के लिए आमंत्रित करें।

आप यह महसूस करेंगे कि बच्चे सदैव एक साथ रहना पसंद करते हैं। कोई बच्चा अकेला नहीं रहना चाहता, वह अपने विद्यालय में भी दूसरे बच्चों के साथ, खेल के मैदान में भी और मनोरंजन की दुनिया में भी। इसलिए आप देखेंगे छोटे बच्चे हमेशा घर से बाहर जाना चाहते हैं। घर की चारदीवारी में कैद रहना उसे कतई पसंद नहीं। यहाँ तक कि कभी कोई बाहरी अनजान रिश्तेदार भी घर आने पर जब वापस लौटने लगते हैं तब बच्चे उनके साथ बाहर जाना चाहते हैं। आखिर तभी तो कवि बच्चों की इस आकांक्षा को इन शब्दों में रूपायित कर उठता है---

गोल बनाकर आओ नाचे, भूमें, गाएँ, ताकधिना
दोनों हाथों को फैलाकर, हाथ, मिलाएँ, ताकधिना।

इसीप्रकार कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जब बच्चों की कल्पना फूलों के रूप में करते हैं तब देश के सभी बच्चे खिले हुए फूलों की तरह किलकारी भरते हुए सामने आ जाते हैं और जिनकी खुशबु बड़ों के हृदय में समा जाती है-

'हम सब सुमन हैं एक उपवन के
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जनमें हम
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम
पले हुए हैं भूल-भूलकर
पलने में हम एक पवन के!'

हम सब इस बात से अवगत हैं कि व्यस्क मन को बालमन के धरातल पर लाना अपने आप में अत्यंत दुरूह कार्य है, किंतु बाल-काव्य के सशक्त रचनाकार रामानुज त्रिपाठी ने किशोरवय की विशेषताओं के साथ खुद को जोड़ते हुए 'हम भारत के वीर' शीर्षक कविता की निम्न पक्तियों द्वारा बालमन को जो निर्देश दिया है वह वास्तव में किसी का ध्यान खींच लेता है-

**'भारत देश हमारा अपना,**
**पावन स्वर्ण कुटीर, हम भारत के वीर।**
**एक नई कल्पना हमारी, एक नया संकल्प हमारा**
**श्रेष्ठ कर्म से आज रचेंगे, हम भारत का भाग्य दुबारा।'**

दरअसल बच्चों के लिए सशक्त रचना भी तो वही रचनाकार कर सकता है जो बच्चों के मनोभावों से पूर्ण लगाव रखता है। बालमन के पारखी श्री त्रिपाठी जी रचनाकार के इस गुण को अंगीकार करने में माहिर हैं। यही कारण है कि उन्होंने अपने बालगीत, नवगीत, दोहे, ग़ज़ल आदि के माध्यम से खासकर बाल साहित्य को अत्यधिक समृद्ध किया है। इनकी कविताओं को बाल पाठक बड़ी रूचि से पढ़ते हैं, उनके गीत गुनगुनाते हैं क्योंकि उनका संपूर्ण बाल-काव्य सरलता और सहजता के

गुणों से ओत-प्रोत है।

### बाल कहानियाँ

जहाँ तक बच्चों की कहानियों का सवाल है, कहानी में अंतर्निहित तत्त्वरोचकता, सहजता, कौतूहल, प्रेरणा तथा रसात्मकता बच्चे की मानसिक क्षुधा को शांत करते हैं। मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि जिन बालकों के कौतूहल को तृप्ति नहीं मिलती है, वे स्वभाव से चिड़चिड़े और परिणामस्वरूप हीन-ग्रंथि के शिकार हो जाते हैं। यह बालक के सर्वांगीण विकास में अवेरोधक तत्त्व है जिसका निदान कहानी द्वारा ही संभव है।

कहानी बाल साहित्य की लोकप्रिय विधा है। बच्चे सहज ही कहानी से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं क्योंकि कहानी बालकों की जिज्ञासा को शांत करती ही है उनका स्वस्थ मनोरंजन भी करती है। इसके साथ ही कहानी बच्चों को आत्म सुधार की प्रेरणा देने का आधार भी है। यही नहीं बल्कि कहानी बच्चों की गलत प्रवृतियों का दमन कर उनमें क्रियाशीलता और नवीन रूचियाँ जाग्रत करती हैं तथा बच्चों में साहित्यिक अभिरूचि को पुष्ट करती है।

हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि बच्चों की अपेक्षाएँ क्या हैं। वे अपने साहित्य में चाहते क्या हैं? उनका बाल साहित्य मन किस ओर अधिक आकर्षित होगा? बच्चे के विकास के पीछे सामाजिक-पारिवारिक स्थितियों की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण होती है जिस परिवेश में बच्चा पलता-बढ़ता है।

बाल जीवन में व्यक्ति की कमजोरी यही बाल कहानियाँ होती हैं। बच्चों को ऐसी कहानियाँ प्रिय होती हैं जिसके पात्र काल्पनिक, निर्जीव या पशु-पक्षी होते हैं और जब यही पात्र कहानियों में आदमी की तरह बातें और हरकतें करते हैं तो बच्चे उनके वशीभूत होकर क्षण-प्रतिक्षण उनके साथ होते हैं। सुखद अनुभूति के साथ बच्चों का भरपूर मनोरंजन भी होता है।

### विज्ञान साहित्यः

बाल साहित्य में विज्ञान साहित्य भी बहुत महत्व रखता है। यों तो विज्ञान लेखन अपने आप में कठिन और नीरस कार्य माने जाते हैं, पर यदि बच्चों के लिए विज्ञान साहित्य की रचना करना पड़े तो वह अपने आप में और भी दुरूह कार्य हो जाता है। बच्चे जब थोड़ा बड़े होकर पढ़ना-लिखना करने लगते हैं तो वे ऐसी पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं जिससे उन्हें आनंद मिलने के साथ-साथ नई जानकारी भी हो सके। इस दृष्टिकोण से विज्ञान साहित्य की रचना महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि विज्ञान साहित्य ही बच्चों की जिज्ञासाओं को पूरा करने में सफल हो सकता है। अतएव समय की माँग है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बाल रचनाकर विज्ञान साहित्य की रचना के लिए अपनी कलम चलाएँ।

### रंगमंच

आज के आपाधापी के दौर में रंगमंच बाल शिक्षा और व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम बन चुका है। कारण कि बालमन पर रंगमंच का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस जीवंत माध्यम से वे एक ओर जहाँ छोटी-छोटी अहम बातें पहचानने में समर्थ होते हैं वहीं दूसरी ओर उससे सीखते भी हैं। बाल रंगमंच ने आज बच्चों के दिल में एक अहम स्थान बना लिया है।

सच तो यह है कि हमारी कल्पना बच्चों का सर्वांगीण विकास है। रंगमंच के बहाने उसी कल्पना को मूर्त रूप देने के ख्याल से अपने अभिनय कौशल को व्यावहारिक धरातल पर लाते हैं। बच्चों के अभिनय के बारे में सुप्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर बताते हैं कि बच्चों के अभिनय में मासूमियत होती है, उसे कहीं अन्यत्र नहीं पाया जा सकता है। सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने को ही केंद्र बिंदु बनाकर प्रस्तुतियों को जीवंत बनाया जा सकता है। रंगमंच सिर्फ मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि बच्चों को शिक्षित व जाग्रत करने का एक अच्छा माध्यम है।

### प्रो०यशपाल समिति की सिफारिशें:

आपको याद होगा मार्च, 1992 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय प्रो० यशपाल के नेतृत्व में देश के आठ शिक्षाविदों की एक समिति गठित की गई थी जिसने अपनी रिपोर्ट में साफ लिखा था कि बच्चों के लिए स्कूली बस्ते के बोझ से अधिक बुरा है ना समझ पाने का बोझ। समिति ने अपनी सिफारिश में बच्चों को निजी सफलतावाली प्रतियोगिताओं से दूर रखने के साथ सामूहिक गतिविधियों को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करने की बात कही थी, सभी स्कूलों को पाठ्य पुस्तकों और अन्य सामग्री के चयन सहित नवाचार के लिए बढ़ावा

दिए जाने की बात भी रपट में थी। समिति ने यह भी सिफारिश की थी कि केंद्रीय विद्यालयों व नवोदय विद्यालयों के अलावा सभी स्कूलों को उनके राज्य के शिक्षा मंडलों से संबद्ध कर देना चाहिए। लेकिन आज भी सी०बी०एस ई० से संबद्ध स्कूलों को स्तरीय माना जाता है। नतीजा है कि राज्य बोर्ड से पढ़कर आए बच्चों को दोयम दर्जे का माना जाता है। बच्चों को कोर्स रटने की मजबूरी से छूटकारा दिलाने के लिए समिति ने परीक्षाओं के तरीकों में आमूल चूल परिवर्तन की बात कही थी पर नतीजा वही 'ढाक के तीन पात' रहा। पब्लिक स्कूल अधिक मुनाफा कमाने की फिराक में बच्चों का बस्ता भारी करते जा रहे हैं तथा प्राथमिक वर्गों में बच्चों को होम वर्क इतना दिया जाता है कि वे अपने घर के माहौल में नयी बातें खोजने और उन्हें विस्तार से समझने में असमर्थ हैं जबकि समिति ने बच्चों के होमवर्क को कम करने की बात कही थी। यही कारण है कि आज जागरूक नागरिक बनाने के बजाए अपने वजन से अधिक का बस्ता ढोते बच्चों के लिए शिक्षा आज महज एक बोझ बनकर रह गयी है।

# सलीब पर बचपन

❑ प्रो०( डॉ० ) लखन लाल सिंह 'आरोही'

"मैं बचपन को बुला रही थी
चिहुँक उठी बिटिया मेरी।"

हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी उपर्युक्त पंक्तियों में अपने बचपन को याद करते उक्त बात कही हैं। वस्तुत: बचपन होता ही है बहुत प्यारा जिसकी बरबस याद आती रहती है। बचपन जीवन का वह स्वर्गिक समय होता है जिसे दु:ख की छाया स्पर्श नहीं कर पाती। बचपन जीवन का स्वर्ण बिहान है जहाँ मुस्कान का राज्य रहता है। मनुष्य ऐसे मधुमय बचपन को पारकर जब संघर्षमय जीवन में प्रवेश करता है, तो स्वाभाविक है कि वह थके-हारे क्षणों में अपने बचपन के सुखद दिनों में खो जाय और वर्त्तमान के अवसाद भरे पलों को सहलाकर नई ताजगी और ऊर्जा से लैश हो! चाहे किसी वर्ण का व्यक्ति हो- वह अपने दुलार भरे बचपन के आकर्षण को भुठला नहीं पाता। आखिर सुख भरे क्षणों के मौन निमंत्रण को कौन अस्वीकार करेगा। बचपन जीवन का वरदान है जिसे मनुष्य खोना नहीं चाहता, परन्तु जीवन चक्र की अनवरत गतिशीलता मनुष्य को बचपन पारकर आगे बढ़ने के लिए विवश करती है।

आखिर बचपन में क्या है जो वह जीवन का वरदान है? महाकवि प्रसाद की पंक्तियों को कुछ संशोधित कर मैं कहना चाहूँगा-

वे कुछ दिन कितने सुंदर थे
जब प्यार दिन रात बरसते।

बचपन में कौन बच्चा है जिसे प्यार नहीं मिलता। बच्चे को देखकर हर व्यक्ति के हृदय में प्यार का निर्भर फूंट पड़ता है। बचपन प्यार का पर्याय है। मनुष्य की जय-यात्रा का शुभारंभ प्यार के ही प्रस्थान विंदु से शुरू होता है। मनुष्य का विकास प्यार के वातावरण में ही शुरू होता है। मनुष्य के स्वस्थ, सहज और अकुंठित विकास के लिए प्यार एक अनमोल विटामिन है जिसका कोई स्थापन्न नहीं है। बचपन मनुष्य के प्यार का सफर है जिसकी कोई गारंटी नहीं कि वह चलता ही रहेगा। बचपन प्यार का प्रहर है। ऐसे क्षणों को भोगकर कौन धन्य नहीं होगा? धन्य है बचपन जहाँ प्यार का अखण्ड राज्य है।

संत कबीर ने चिंता रहित व्यक्ति को बादशाह कहा है। बचपन चिंता नहीं जानता। बच्चा जग-जीवन के संघर्षों से मुक्त है। इसलिए वह बादशाह है। कोई उसके सुख से होड़ नहीं ले सकता। वह सुख के शिखर पर सदैव विहार करता है।

बचपन प्रकृति जैसा निर्मल है- प्रदूषणमुक्त जीवन का कोई प्रदुषण बचपन को अपना शिकार नहीं बना सकता। क्या है जीवन का प्रदूषण? तनाव, ईर्ष्या, द्वेष आदि नकारात्मक प्रवृत्तियाँ जीवन के प्रदूषण हैं जो जीवन को अभिशप्त बना देता है। परंतु बचपन इन अभिशापों से मुक्त है।

बचपन क्रीड़ामय है। बचपन भावी जीवन की तैयारी भी है, परंतु यह तैयारी खेल के माध्यम से होती है जो बच्चों को पता नहीं। बच्चा और खेल एक दूसरे से अनुस्यूत है। बच्चा खेल के बिना नहीं रह सकता- यह प्रकृति की योजना है। आनन्द, ज्ञान और स्वास्थ्य खेल के तीन आयाम हैं जो बच्चा अनजान में ही प्राप्त करता है।

बचपन कल्पना के पंख लगाकर उड़ता रहता है। हर बच्चा कल्पना-विहारी होता है। जीवन के यथार्थ से दूर वह कल्पना परी के साथ स्वप्न-लोक में विहार करता रहता है। कल्पना और स्वप्न बच्चे को सृजनशील बनाता है। कल्पना और स्वप्न के बिना सृजनशीलता संभव नहीं। यही कारण है कि बच्चे दादी-नानी से ऐसी कहानियाँ ही पसंद करते हैं जो उसकी कल्पना को उत्तेजित करे-उसे परीलोक का भ्रमण कराए।

परंतु परीलोक का कल्पना विहारी बचपन आज सलीब पर टँग गया है। समकालीन समाज बच्चे को बचपन में ही बूढ़ा बनाकर उसका बचपन छीन रहा है, जिसके कारण बच्चों का बचपन उनके लिए अभिशाप हो गया है। माता-पिता बच्चों को बचपन में ही वह सब लिखा देना चाहते हैं जो आगे की उम्र में सीख जाता है। सब कुछ सीखने की धुन में बच्चों का शरीर जहाँ एक ओर बस्तों के बोझ से झुक गया है तो वहीं दूसरी ओर ज्ञान के बोझ से उनका मस्तिष्क बोझिल हो गया है। खेल और मनोरंजन उनके जीवन से काफूर हो गया है। उनके लिए केवल पढ़ना ही पढ़ना है- खेल को पूछना नहीं। दुष्परिणाम यह है कि बच्चे तनाव में रहते हैं और रक्तचाप की चपेट में आकर डॉक्टर के क्लिनीक का चक्कर लगाने के लिए मजबूर हो गए हैं। घर से स्कूल तक केवल पढ़ाई का वर्चस्व रहने के कारण बच्चों की चंचलता, चेहरे की चमक और होठों की मुस्कान लुप्त हो गई है। बच्चों को जवानों की लियाकत से लैश नहीं किया जा सकता, क्योंकि बच्चे समय पर ही जवानों की लियाकात प्राप्त कर सकते हैं। हनुमान कूद में तो पैर हाथ ही तोड़वाया जा सकता है। ज्ञानार्जन एक सहज प्रक्रिया है जिसमें हर जानकारी प्राप्त करने की एक निर्धारित अवस्था है। इस मनोविज्ञान की जानकारी के अभाव के कारण बच्चे अप्राकृतिक अत्याचार के शिकार होकर कुँठित, ज्ञान के प्रति वितृष्ण, शरीर से अस्वस्थ, कल्पनाहीन और चिड़चिड़े बनते जा रहे हैं जो बचपन का ही संकट नहीं, अपितु राष्ट्रीय संकट भी है।

देश में दूरदर्शन क्रांति ने भी बचपन को सलीब पर लटका दिया है। दूरदर्शन में दिखाए जा रहे कार्यक्रमों एवं विज्ञापनों में बच्चे वे सारी चीजें देख रहे हैं जिनका बचपन से संबंध न होकर वयस्क जीवन से है। ऐसे दृश्यों का बच्चों के जीवन पर घातक प्रभाव पड़ रहा है। तरह-तरह की विकृतियों के शिकार होकर वे अप्राकृतिक आचरण करते हैं जिनका प्रभाव उनके स्वास्थ्य एवं मस्तिष्क पर पड़ता है। अगर दूरदर्शन की इस घातक भूमिका को गंभीरता से नहीं लिया गया तो समकालीन बचपन राष्ट्र के सामने प्रश्नचिन्ह बन जाएगा।

समृद्धि के आलोक से बाहर ग़रीबी के पसरे अंधेरे में भी एक विशाल दुनिया निवास करती है जहाँ गरीबी ने बचपन पर अपने दाँत गड़ा दिए हैं। गरीबी से प्रताड़ित आज हजारों/लाखों बच्चे सुबह उठकर होटल, मोटर गैरेज, साइकिल स्टोर, वेंडर, बूट पालिस आदि काम में निकल जाते हैं। ये बाल श्रमिक बचपन को नहीं जानते। बचपन का आनन्द, प्यार, बेफिक्री इन्होंने कभी नहीं जानी। बचपन में ही ये जवान हो गए। कैसी त्रासद स्थिति है?

बचपन के संकट की आँच चारों तरफ फैली हुई है। देश का बुद्धिजीवी वर्ग सब कुछ जानकर भी निरूपाय है, क्योंकि राजनीति ने उसे हाशिए पर डाल दिया है।

पर राजनेता जानकर भी क्यों अनजान है? बचपन के संकट का इलाज तो राजनेताओं को ही करना है, दवा का उपाय तो उन्हें ही करना है। राष्ट्र के भविष्य-बचपन की अनदेखी करना स्वयं एक राष्ट्रीय अपराध है; राष्ट्र को सलीब पर लटकाना है।

संपर्क: 'ऋतंवरा', खैरा, पो० पत-
सौरी खैरा, जिला-बांका
(बिहार)-813107

# बाल अधिकार

❑ डॉ. कलानाथ मिश्र

विश्व के प्रत्येक देश में स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की बात आज चल रही है। इसके लिए कारगर कोशिश हुई है, किंतु आज भी दुनिया के अधिकतर भागों में महिलाओं और बच्चों की दशा बदतर है। महिलाओं एवं बच्चों के अंधिकारों के क्षेत्र में लम्बे समय से संघर्ष कर रही ईरान की 56 वर्षीय महिला **शीरीन इबादी** पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बन गई है। आखिर तभी तो इबादी को वर्ष 2003 के नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। मानवाधिकार के तहत महिलाओं और बच्चों को कुछ विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं। वर्ड्सवर्थ ने कहा है-'The child is the father of a man.' भारतीय दर्शन में भी यह भाव अनेक रूपों में विद्यमान में है। अत: मानवाधिकार की यदि कोई बात होती है तो निश्चित रूप से इसकी शुरूआत बच्चों से होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय कानूनों में भी बच्चों को कुछ विशेष अधिकार दिए गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं- 1924 में जेनेवा डिक्लेरेशन, 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ का डिक्लेरेशन, हर बच्चे को अपने जन्म से ही नाम और नागरिकता का अधिकार, बच्चों को संपूर्ण सामाजिक सुरक्षा और मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर विकलांग बच्चे को विशेष सुविधा का अधिकार।

इसी प्रकार भारत में बाल कल्याण हेतु संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार धारा 15 के तहत राज्यों को महिला एवं बच्चों के लिए विशेष कानूनी प्रावधान के लिए अधिकृत, धारा 24 में कारखाना आदि में बच्चों की नौकरी पर रोक, धारा 39 ई एवं एस के तहत बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा का दायित्व। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी बाल श्रमिकों की सुरक्षा हेतु 15 वर्ष के नीचे के बच्चों की मजदूरी पर रोक, बाल श्रमिकों की सुरक्षा, बच्चों को रात्रि कार्य पर रोक, हानिकारक और खतरापूर्ण कार्यों हेतु 18 वर्ष तक के बच्चों पर रोक, बाल श्रमिकों का समय-समय पर डॉक्टरी जाँच तथा बाल श्रमिकों के लिए अवकाश के क्षणों में विशेष निर्देशन एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था आदि करने का प्रावधान किए। संयुक्त राष्ट्र संघ के इन उद्देश्यों की पूर्ति यूनीसेफ के माध्यम से होती है। यूनीसेफ संपूर्ण विश्व में विभिन्न सरकारी गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्थाओं के माध्यम से बाल अधिकार की सुरक्षा एवं विकास कार्य करता है जिसके तहत बाल शिक्षा, स्वास्थ्य तथा बाल अधिकारों की जानकारी एवं उसके प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाती है। इस क्रम में 1990 में 'वर्ल्ड समिट ऑन चिल्ड्रेन' एक महत्वपूर्ण घटना है। विभिन्न देशों

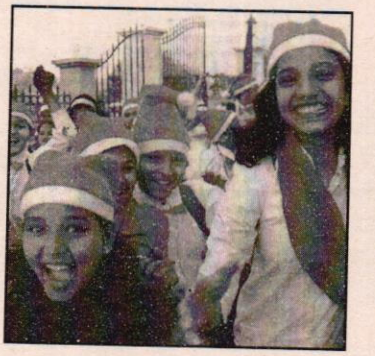

की सरकारों को बच्चों की सुरक्षा हेतु कानून बनाने का सुझाव दिया गया।

उपर्युक्त प्रावधानों के उपरांत भी आज भारत में 114 मिलियन बच्चे जो छह से चौदह वर्ष के मध्य के हैं, श्रम करने के लिए विवश है। 1993 में किए गए एक सर्वेक्षण के माध्यम से यह पता लगाने की चेष्टा की गई कि किन कारणों से बच्चे काम करते हैं जो निष्कर्ष सामने आया वह इस प्रकार है-गरीबी 23 प्रतिशत, गृह उद्योग में माता-पिता को सहयोग प्रदान करने में 33.2 प्रतिशत, माता-पिता की इच्छा के कारण 26.3 प्रतिशत, अपनी कमाई करने की प्रवृति 7.9 प्रतिशत, नहीं कुछ करने से अच्छा 6.8 प्रतिशत और अन्य कारणों से 2.6 प्रतिशत।

जहाँ तक बिहार का सवाल है, इस राज्य के विभिन्न न्यायालयों में 800 से अधिक विचाराधीन मुकदमों में 1100 से अधिक बच्चे कारागारों में बंद हैं। ये मुकदमें मात्र इसलिए लंबित हैं कि बिहार सरकार किशोर न्याय अधिनियम 2000 के अधीन विभिन्न स्तरों पर किशोर न्याय परिषद को प्रभावी बना सके। जिला एवं सत्र न्यायाधीशों ने नए मुकदमें के तहत किशोरों से संबंधित मुकदमों पर विचार करने के लिए पटना उच्च न्यायालय का मंतव्य जानना चाहा है। किशोर न्याय अधिनियम की धारा 4 के निर्देशानुसार न्याय परिषद को प्रभावी नहीं बनाने के कारण उनसे संबंधित मुकदमों के सीधा निष्पादन में बाधा पड़ रही है।

अत: मानवाधिकारों की रक्षा तबतक संभव नहीं है जबतक कि इसकी शुरुआत बाल अधिकारों की रक्षा से न हो। वैसे भी मानव धर्म पूरी मानवता के साथ धड़कने का और एक होने का गीत गाता है। हमारी भारतीय संस्कृति तो अपने राष्ट्र के भविष्य के लिए अत्यंत सचेत रहा है। बच्चों की परवरिश के संबंध में यह उक्ति प्रसिद्ध है-

लाड़येत पंचवर्षाणि, दस बर्षाणि ताड़येत।  
प्राप्ते तू षोडश वर्षे, पुत्र मित्रं वदाचरेत।

यह बच्चों के लालन-पालन एवं किशोरों के साथ व्यवहार के लिए जैसे एक आचार संहिता का निर्माण करता है। किसी शायर ने कहा है-

मासूम उमंगें झूम रही है दिलदारी के झूलों में  
ये नन्हीं कलियाँ क्या जाने, कब खिलना कब मुर्झाना है।

हमें सावधान रहना चाहिए कि ये नन्ही कलियाँ कहीं पुष्पित होने के पूर्व ही न मुर्झा जाएँ। हम सबों को स्मरण रखना चाहिए कि-

बच्चे मन के सच्चे  
सारे जग के आँख के तारे  
ये वो नन्हें फूल हैं जो  
भगवान को लगते प्यारे।

संपर्क: हिंदी विभाग,  
बी० एस० कॉलेज,  
दानापुर, पटना

# ऐसे सिखाइए अपने बच्चों को

❑ अब्राहम लिंकन

**अवध प्रांत, विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष रामनाथ महेन्द्र के सौजन्य से 'बाल साहित्य समीक्षा' को अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का यह पत्र प्राप्त हुआ था, जिसे साभार यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।**

मैं जानता हूँ उसे यह सीखना होगा कि सभी आदमी ईमानदार नहीं होते, सभी सच्चे नहीं होते लेकिन उसे यह भी सिखाइए कि जितने दुष्ट हैं, उतने भले भी तो हैं। उसे यह भी सिखाइए कि अगर दुश्मन हैं तो उतने ही दोस्त भी हैं। मुझे मालूम है इसमें समय लगेगा, मगर आप कर सकें तो उसे यह भी सिखाइए कि खुद अर्जित किए एक डॉलर की कीमत कहीं से मिल गए पाँच डॉलरों से ज्यादा होती है। उसे बताइए कि वह हार को स्वीकार करना सीखें और जीत का आनंद लेना भी। उसे ईर्ष्या से दूर ले जाइए। उसे पुस्तकों की अद्‌भुत दुनिया के बारे में बताइए लेकिन उसे आकाश में उड़ते पक्षियों, धूप में फिरती मधुमक्खियों और हरी पहाड़ियों पर खिले फूलों के शाश्वत रहस्य पर दिमाग दौड़ाने के भी तो समय दीजिए।

स्कूल में उसे यह सिखाइए कि असफल होना बेईमानी करने से कहीं ज्यादा सम्मानजनक है। उसे अपने खुद के विचारों में आस्था रखना सिखाइए, भले ही हर कोई कह रहा हो कि वे गलत हैं। उसे नम्र लोगों के साथ नम्रता से और कठोर लोगों के साथ कठोरता से पेश आना सिखाइए। उसे ऐसी मजबूती करने की कोशिश कीजिए, जब हर कोई सफलता के पीछे भाग रहा हो तब भी वह भीड़ के पीछे न चले। उसे सिखाइए कि वह जो कुछ सुने उसे सच्चाई के छन्ने से छान और जो अच्छाई हो उसे ग्रहण करे। उसे उदासी में भी हँसना सिखाइए। उसे बताइए कि आँसू छलक आएँ इसमें कोई शर्म नहीं है। उसे इंसानी गुणों से द्वेष करनेवालों पर हँसना सिखाइए कि वह अपने बल और बुद्धि का अधिकतम मूल्य लगाने पर कभी भी अपने हृदय और आत्मा की कीमत न लगाए। उसे सिखाइए कि अगर वह समझता है कि वह सही है तो चीखती-चिल्लाती भीड़ पर ध्यान न दे और दृढ़ता से लड़ाई लड़े। उसके साथ नम्रता से पेश आएँ, मगर उसे दुलराएँ नहीं, क्योंकि अग्नि परीक्षा से गुजर कर ही बढ़िया फौलाद तैयार होता है। उसे अधीर होने का साहस करने दीजिए और उसे साहसी होने का धीरज भी सिखाइए। उसे हमेशा अपने में आस्था रखना सिखाइए क्योंकि तभी वह हमेशा मानव-जाति में उदात्त आस्था रख सकेगा।

# बचपन का अधिकार

❑ डॉ. कलानाथ मिश्र

वंचित जो बाल सुलभ जीवन से,<br>
शौष्ठव का सुंदर सौगात उन्हें दो,<br>
उपेक्षित, कुण्ठित बालपन जिनका,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो।

विवश हुए जो श्रमिक कर्म को ,<br>
करने अपनी क्षुधा शांति,<br>
मत बनों क्रूर तुम उनके प्रति ,<br>
नौनिहाल सा आहार उन्हें दो ,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो ।

बिछुड़ गये जो निज आश्रम से ,<br>
बिलुप्त हो रही पहचान जिनकी ,<br>
उनके प्रति बनो उदार तुम ,<br>
उनसे बिछड़ा परिवार उन्हें दो,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो।

शोषित पीड़ित हैं जो बच्चें ,<br>
सुरक्षित उन्मुक्त आकाश उन्हें दो ,<br>
बिमुख हो गए जो सहज स्नेह से ,<br>
मातु पिता का प्यार उन्हे दो ,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो।

सब बच्चों में समता देखो ,<br>
सबको मिले अवसर विकास का ,<br>
वंचित न रहें वे ज्ञान पुँज से ,<br>
शिक्षा का आसार उन्हें दो ,<br>
बचपन का अधिकार उन्हे दो।

स्वस्थ रहें, उन्मुक्त जिए ,<br>
विकसित होवें, पूर्ण बनें ,<br>
हैं भविज्य के संवाहक वे ,<br>
स्नेह भरा व्यवहार उन्हें दो ,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो।

संपोषित हो प्रतिभा हर शिशु का,<br>
दायित्व यह हम व्यस्क जन का ,<br>
दो उनको वह सब जिनसे ,<br>
हो मानवता साकार उन्हें दो ,<br>
बचपन का अधिकार उन्हें दो।

संपर्क: ई-112, श्री कृष्णपुरी<br>
पटना-800001

# कामकाजी दंपति-परिवार में उपेक्षित व प्यार से वंचित होते बच्चे

❑अंजलि

आज के इस आपधापी और भागमभाग के दौर में जहाँ महिलाएँ भी पुरुषों के कंधों से कंधे मिलाकर राष्ट्र के हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी दर्ज करा रही हैं- वहाँ के कामकाजी दंपति-परिवार में स्वाभाविक रूप से बच्चे उपेक्षित और अपने माता-पिता के प्यार से वंचित होते जा रहे हैं। आधुनिकता की दौड़ में शामिल होने की लालसा के चलते दंपति के समक्ष आर्थिक कठिनाई उपस्थित होती जा रही है जिसका सामना करने के लिए पति के साथ-साथ पत्नी भी कामकाजी बनने के लिए विवश है जिसका खामियाजा उनके बच्चों को भुगतना पड़ता है। मसलन वे उपेक्षित ही नहीं अपने माता-पिता के प्यार से वंचित भी होते जा रहे हैं।

उच्च वर्ग-परिवार के अतिरिक्त अब तो मध्य वर्ग परिवार में भी सुबह छह-सात बजे दाई कामकाजी दपंति-परिवार के बच्चों को उठाकर तैयार करने के बाद स्कूल ले जाती है और जब अपराह्न में बच्चे लौटते हैं जब दाई ही उनके कपड़े बदलवाकर खिलाती हैं क्योंकि उस वक्त तो उसके माता-पिता अपने-अपने काम पर चले जाते हैं। सुबह माता-पिता अपने बच्चों को कुछ समय दे सकते हैं, किंतु आधुनिकता उन्हें इसके लिए इजाजत नहीं देती क्योंकि इस आधुनिकता में रात में देर से सोना और सुबह में देर तक सोए रहने का नया फैशन चल पड़ा है, खासकर महानगरों में यह अधिकांश परिवार में देखा जाता है। स्वाभाविक है देर से उठने पर दफ्तर जाने की तैयारी के लिए ही उनके पास समय कम पड़ जाता है तो फिर बच्चों के लिए वे कहाँ से समय निकाल पाएँगे? इसके अतिरिक्त दाई के रहते कामकाजी दंपति को अपने बच्चे की देख-भाल करना, यह भी शायद 'ऐटिकेट' के खिलाफ समझा जाने लगा हो। संभवत: इस कारण भी वे अपना पल्ला झाड़ निकलते हैं। पिता को सुबह ताजी खबर के लिए अखबार भी तो उलटना-पुलटना पड़ता है। शाम के समय शिक्षक बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने आ जाते हैं और अंत में थोड़ा-सा जो समय बचता है उसमें बच्चों को अपने दोस्तों के साथ खेलना भी है। फिर खाना खाने के पहले उन बच्चों को होमवर्क करना होता है। सात-आठ बजे जब उनके माता-पिता अपने काम से घर वापस लौटते हैं तब बच्चे अपने माता-पिता से लिपट जाना चाहते हैं और उन्हें अपने स्कूल की छोटी-मोटी बातों को उनके सामने कहना चाहते हैं, पर दोनों दफ्तर से लौटने के बाद इतने थके रहते हैं कि बच्चों का लिपटना भी उन्हें नहीं सुहाता। लाचार हो बच्चे टी०वी० पर जा बैठते हैं और चैनल बदल-बदलकर, जो उसे नहीं भी देखना चाहिए उसे भी देखते हैं। फिर दाई खाना लाती है उसे बच्चे बेमन से किसी तरह कुछ खा लेते हैं। तभी माँ आकर उन्हें डाँटती है, "रात के दस बज रहे हैं, सो जाओ सुबह स्कूल भी जाना है।" यही तो है बच्चों की रोजमर्रा की जिंदगी।

छूट्टीवाले दिनों में भी कभी मम्मी की सखियाँ तो कभी पापा के मित्रों के बीच सारा दिन कट जाता है। किसी दिन मित्रों व सहेलियों से मुक्ति भी मिली तो मम्मी-पापा दोनों को किसी-न-किसी पार्टी में भी उपस्थित होना पड़ता है जिसमें बच्चों को साथ ले जाने की तो बात ही नहीं उठती। इस प्रकार न तो मम्मी को बच्चों से प्यार करने का वक्त मिल पाता है और न पापा का। हाँ, स्कूल से प्रगति रिपोर्ट खराब आने पर मम्मी-पापा के डाँट अवश्य उन्हें खाने को मिलता है पर अगले दिन फिर वही दिनचर्या। ऐसे माता-पिता यह भूल जाते हैं कि बच्चों के काम में भागीदारी, उनकी बातों को सुनना बच्चों के विकास के लिए कितना आवश्यक है। सच कहा जाए तो बच्चे प्यार व दुलार के आँचल में ही सही ढंग से पलते-बढ़ते हैं। भले ही अधिक पैसे कमाकर बच्चों के लिए अधिक मिठाईयाँ, खिलौनें तथा आधुनिक वस्त्रों से उनका मन बहलाने का प्रयास किया जाए किंतु प्यार की मिठास और माता-पिता का साथ बेहद जरूरी है। इस दृष्टि से कामकाजी दंपति को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों को घर और माता-पिता के प्यार-दुलार की आवश्यकता है न कि मन-पसंद खिलौनों से भरे संग्रहालय की। बच्चों के विकास के लिए यह भी जरूरी है कि उनसे माता-पिता घर के कामों में कुछ सहयोग लें ताकि बच्चों को भी घर में अपनेपन का अहसास हो सके।

चाहिए तो यह कि माता-पिता अपने अवकाश के दिनों को बच्चों के लिए सुरक्षित रखें। हो सके तो पिकनिक पार्टी या मित्रों के यहाँ की पार्टी भी छोडनी पड़े तो उसे छोड़ दिया जाए क्योंकि बच्चों का संपूर्ण लालन-पालन तथा प्यार पाना उसका अधिकार भी है और माता-पिता का कर्तव्य भी। पर बच्चों को प्यार देना तो दूर, स्वयं भी कभी-कभी उनके माता-पिता बच्चों के समक्ष झगड़ने लगते हैं जिसका बच्चों पर खराब प्रभाव पड़ता है।

इधर हाल के वर्षों में संयुक्त परिवार के विघटन से भी बच्चे की परवरिश तथा उसकी देख-भाल ठीक से नहीं हो पा रही है और न ही उसे समुचित प्यार मिल पाता है। संयुक्त परिवार प्रणाली के तहत बच्चों की परवरिश व देखरेख करनेवाले अनेक लोग होते थे। माता-पिता के अतिरिक्त चाचा-चाची, दादा-दादी, उम्र में बड़े चचेरे भाई-भाभी किसी न किसी रूप में बच्चों की देख-रेख किया करती थीं। उनदिनों संयुक्त परिवार में अनेक सदस्य होने की वजह से उनके पास बच्चों के साथ बिताने के लिए काफी खाली समय रहता था, किंतु संयुक्त परिवार प्रणाली अब टूट चुकी है या टूट के कगार पर है। यहाँ तक कि बच्चे अपने दादा-दादी के प्यार से भी वंचित इस माने में हो रहे हैं कि बच्चों के बहुत कम ही ऐसे माता-पिता हैं जो बच्चों के दादा-दादी को अपने साथ रखना पसंद करते हैं। यह भी 'आधुनिकता' की ही देन है। नतीजा यह होता है कि एकल परिवार के स्वरूप की वजह से माता-पिता को ही अपने बच्चों की शत प्रतिशत जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। स्वाभाविक है कि आज के माता-पिता को अतीत की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसके चलते वे अपने बच्चों के लिए बहुत कम समय निकाल पाते हैं, जो चिंतनीय है।

संपर्क:- छात्रा, स्नातक (प्रतिष्ठा),
मगध महिला कॉलेज,
पटना-800001

मार्मिक स्केच-कथा

# बाबा सालिक राम

❑ कृष्ण कुमार राय

जिस प्रकार चित्रकारिता में रेखाओं से बना चित्र रेखाचित्र कहलाता है उसी प्रकार साहित्य के रेखाचित्र अथवा शब्दचित्र में रेखा की जगह शब्दों से काम लिया जाता है। रेखाचित्र या शब्दचित्र के लिए अँग्रेजी में 'स्केच' चलता है। इसमें व्यक्ति, दृश्य या वस्तु का शाब्दिक आकलन होता है। 'शब्दचित्र' से 'रेखाचित्र' शब्द अधिक व्यंजक है इसलिए रेखाचित्र ही अधिक प्रयोग में आता है। इस विधा में महादेवी वर्मा का नाम सबसे आगे आता है।

कथा सम्राट प्रेमचंद की कर्मभूमि वाराणसी निवासी तथा प्रेमचंद-परिवार के एक मात्र जीवित रचनाकार कृष्णकुमार राय का नाम भी सशक्त रेखाचित्र कथाकार के रूप में लिया जाना सर्वथा उचित होगा। 'विचार दृष्टि' के 'कथा स्तंभ' के नियमित स्तंभकार श्री राय की यह स्केच-कथा काशी के ही एक निराले फक्कड़ बाबा के जीवन और कर्म पर आधारित है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन पीड़ित मानवता की सेवा के लिये समर्पित कर दिया था। पीड़ितों की सेवा का उनका ढंग भी निराला था, किंतु नियति का यह कैसा क्रूर विधान है कि जीवन-पर्यंत दीन-दु:खियों की निष्काम सेवा करनेवाले उस बाबा को बुढ़ापे में कुत्तों की मौत मरना पड़ा और उसके शव को ढंकने के लिये न कफन मयस्सर हुआ, न दाह के लिये आग और न परवाह के लिये पानी। श्री राय की इस मार्मिक स्केच-कथा से सिद्धहस्त शिल्पिता का भान होता है जिसे पाठक पसंद करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

-संपादक

बाबा सालिक राम न तो पगला था न पाखंडी, फिर भी ज्यादातर लोग उसे ऐसा ही समझते थे। अपने संबंध में प्रचलित लोकमत से वह बेखबर भी न था और शायद उसी का सम्मान करने के लिये उसने अपने नाम से पहले यह विशेषता सूचक विशेषण 'पी.पी.' यानी 'पगला-पाखंडी' जोड़ना शुरू कर दिया था। लोगों द्वारा पूछे जाने पर वह गर्व के साथ इस विशेषण का खुलासा भी करता था। बाबा निरा पोंगा न था। जवानी में कई वर्षों तक वह एक स्थानीय समाचार-पत्र के कार्यालय में प्रूफ-रीडिंग का काम कर चुका था। हिंदी की खासी अच्छी जानकारी होने के साथ बाबा को अंग्रेजी का भी साधारण ज्ञान था। नौसिखुआ टूरिस्ट गाइडों जैसी अंग्रेजी तो वह बिना किसी हिचक और झिझक के फर्राटे के साथ बोल लेता था। भले उसमें भाषाई अशुद्धियाँ रहती हों, लेकिन वह अपनी बात तो कह ही डालता था।

अड़बंगी बाबा भोलेनाथ से भी निराली बाबा की वेश-भूषा, ठोढ़ी पर आचार्य बिनोवा भावे जैसी अधपकी दाढ़ी, कनपटी के ऊपर तथा खल्वाट खोपड़ी के पृष्ठ भाग में थोड़े से बेतरतीब बाल, कमर में लिपटा फटे टाट का टुकड़ा, धूप से बचाव के लिये सिर पर औंधाया हुआ पुराने जमाने के साहबों वाला एक अदद मोटा सा बदरंग हो चला हैट, मंदिरों से उतार कर फेंकी गई ढेर सारी बासी मालाएं गले में लटकाये और अपनी रिक्शा-ट्राली की हैंडिल के आगे अपनी पताका के प्रतीक के रूप में गुजरे जमाने की महफिलों में डुलाया जानेवाला एक बड़ा सा टुंटहा ताड़ का पंखा टाँगे, जब वह फक्कड़ बाबा नगर की सड़कों पर निकलता तो अनायास ही लोगों की नजरें उसकी ओर मुड़ जाती थीं। यद्यपि शहर के पुराने बाशिंदों के लिये अब वह कोई अजूबा नहीं रह गया था, किंतु जोकरों जैसी अपनी अटपटी हुलिया के कारण नवागंतुकों और बच्चों के लिये वह सदैव कौतुक का हेतु बना रहता। विदेशी पर्यटक तो इस अजीबो-गरीब इंसान की तस्वीर भी अपने कैमरों में कैद करने से न चूकते थे।

बाबा रिक्शा-ट्राली अपने जीविकोपार्जन के लिये अथवा किसी मजबूरी में नहीं चलाता था, बल्कि दीन-दु:खियों और असहायों की सहायता के लिये अपनी नि:शुल्क सेवाएं अर्पित करने के उद्येश्य से उधर सड़कों की खाक छानता फिरता था। उसकी नि:स्वार्थ सेवा-भावना से प्रभावित होकर किसी जमाने में स्थानीय नगर परिषद् के एक सहृदय प्रशासक ने उसके लिये इस रिक्शा-ट्राली की व्यवस्था करा दी थी। कई दशक पूर्व जब से उस अनब्याहे बाबा ने घर-बार त्यागकर पीड़ित मानवता की सेवा का संकल्प लिया, उसे कभी अपने पेट की चिंता न रही। इस धार्मिक नगरी में अनेक मंदिरों में नियमित लंगर चलते, प्रसाद बंटता, उसी से वह अपनी क्षुधा तृप्त कर लेता। वस्त्रों का वह पूर्णत: परित्याग कर चुका था। फटे-पुराने टाट के टुकड़े गुप्तांग के इर्द-गिर्द लपेटे वह नंग-धड़ंग ही अपने सेवा-मिशन पर निकल पड़ता। निरंतर मौसम के थपेड़े सहते-सहते उसके शरीर की त्वचा में मानों शीत-ताप प्रतिरोधी क्षमता विकसित हो चुकी थी।

सालिक बाबा की रात्रि-विश्रामस्थली तो और भी निराली थी। नगर के एक व्यस्त तिराहे पर उसने ईंट-पत्थरों से थोड़ी सी जगह घेर रखी थी। कुछ टूटे-फूटे जंग लगे कनस्तरों को ठोंक-पीटकर सपाट करके उसी का छाजन डाल दिया था। किसी धर्मात्मा ने ऊपर से एक पुराना तिरपाल डलवाकर उसे कुछ और सुरक्षा प्रदान कर दी थी। इस स्थान को 'कुटिया' कहना तो शब्द का उपहास होगा, अधिक से अधिक इसे ईंट-पत्थरों तथा कूड़ें-कबाड़ के अंबार से निर्मित गुफा कहा जा सकता था। अपने इस स्वनिर्मित रात्रि-बसेरे के चारों ओर बाबा ने मिट्टी के पुराने काई जमे मटकों, हँड़ियों, झंझरों और सुराहियों का ढूह लगाकर मानो सुरक्षा का घेरा खड़ा कर दिया था।

सड़कों और कूड़ाखानों से बीन-बटोर कर इकट्ठा किये गये टूटे-फूटे लोहे और प्लास्टिक के पात्र, घूरों से उठाकर लाये गये फटे-पुराने जूते-चप्पल, साइकिल-स्कूटर तथा मोटर गाड़ियों के पुराने टायर, टाट-गूदड़ जैसी अनुपयोगी तथा घिनौनी वस्तुएं भी उसके इस विलक्षण संग्रहालय की शोभा बढ़ाती थीं। ऐसा लगता था कि कभी चंडीगढ़ का 'रॉक-गार्डेन' देखने या उसके संबंध में पढ़ने के बाद उसी के मिनी-मॉडल के रूप में अपने इस अजूबे रैन-बसेरे को विकसित करने का अभिनव विचार बाबा के मन में आया होगा। बीसों साल से उस तिराहे को बदनुमा बनाने वाली इन गंदी अनुपयोगी वस्तुओं के कबाड़ को वहाँ हटवाने की हिम्मत किसी नगर प्रशासक में नहीं हुई। दिन भर के अपने सेवा-कार्य के बाद बाबा रात का समय चैन के साथ अपनी इसी गुहा में व्यतीत करता था। आजतक किसी ने झांककर भी उसके अंदर की स्थिति नहीं देखी, उसके भीतर घुस पाना तो शायद किसी के लिये संभव भी न था।

गर्मी हो या जाड़ा, सवेरा होते ही बाबा रिक्शा-ट्राली लिये अपने सेवा-अभियान पर निकल पड़ता। रास्ते में कहीं कोई रोगी, दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति या पागल दिख जाता तो उसे अपनी ट्राली पर लादकर अस्पताल या पागलखाने तक ले जाता और उपचार के लिये वहाँ भरती कराता। क्या मजाल कि कोई चिकित्साधिकारी या मानसिक रोग चिकित्सालय का अधीक्षक ना-नुकर या बाबा की उपेक्षा करता। धीरे-धीरे सभी उसकी सेवा-भावना और जुझारू प्रकृति से परिचित हो चुके थे। मुहल्लेवालों के लिये आतंक का पर्याय बन चुके खतरनाक किस्म के पागलों को तो वह कभी-कभी त्रस्त लोगों की मदद से रस्सी से बाँधकर काबू में करता और ले जाकर पागलखाने में दाखिल कराता। मुसीबत के मारे फरियादियों को साथ लेकर वह अधिकारियों की ड्योढ़ी तक जाता और उनके समक्ष प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर उनकी यथासंभव सहायता करवाता। कभी-कभी तो सड़क पर पड़ी सड़ रही लावारिस लाशों को भी वह मरघट तक ले जाकर ठिकाने लगा आता था। अपंग-अपाहिजों या जराजीर्ण लोगों को वह अपनी ट्राली पर बैठाकर उनके गंतव्य तक पहुँचा देता। निर्धन छात्रों की फीस माफी की फरियाद लेकर वह विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से भी मोरचा लेने पहुँच जाता था। अनाथ बच्चों, बेसहारा विधवाओं और लाचार उपेक्षित वृद्धजनों को वह ले जाकर अनाथालय, विधवाश्रम या वृद्धाश्रम में भरती कराता। इस प्रकार दु:खी तथा पीड़ितजनों की सेवा को ही उसने अपना अभिधर्म और कर्म मान लिया था और सारा दिन इसी सेवा-कार्य में रमा रहता।

हिंदी का समुचित ज्ञान होने के बावजूद बाबा दरख्वास्तें हमेशा अपनी शैली की अंग्रेजी में ही लिखता था। उसका मानना था कि आजादी के बाद भी अँग्रेजी के मोह-पाश में जकड़े सरकारी अफसरों पर प्रभाव डालने का उचित माध्यम अंग्रेजी ही है। उसने कभी

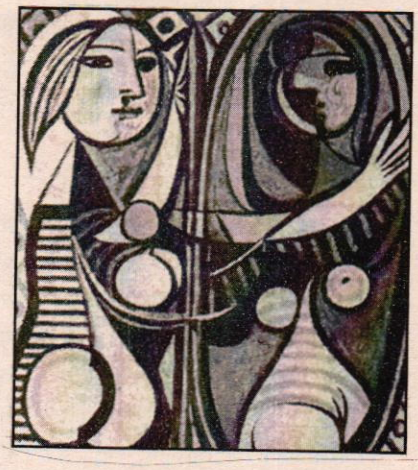

भाषा की शुद्धता या व्याकरण-दोष पर ध्यान नहीं दिया। केवल उसका मंतव्य स्पष्ट हो जाय यही उसका उद्येश्य होता। लिखावट उसकी ऐसी होती कि केवल हस्तलेख विशेषज्ञ ही उसे पढ़ने में कामयाब हो सकते थे। उसके प्रार्थना-पत्रों का आकार कभी-कभी इतना लंबा होता कि देखनेवालों को भी हैरत होती। इसके लिये उसे लंबे आकार का कटा-फटा बेनाप कागज उसी दैनिक समाचार-पत्र के कार्यालय से माँग-जाँचकर मिल जाता था या यों समझ लीजिये कि वह हठात् हथिया लाता था, जहाँ वह कई वर्षों तक सेवा कर चुका था। किसी अधिकारी ने आजतक उसकी लिखी दरख्वास्तों को पढ़ने की जहमत नहीं उठाई। सच तो यह था कि उन्हें पढ़ पाना उनके बूते के बाहर होता। केवल बाबा की मौखिक बातें सुनकर ही वे आवेदन-पत्रों पर समुचित आदेश पारित कर दिया करते थे। चूँकि किसी कार्य में बाबा का निजी स्वार्थ निहित न होता और उसके परोपकारी स्वभाव से सभी बखूबी परिचित हो चुके थे, अत: कोई अधिकारी कभी मीन-मेख निकालने की जुरअत न करता और न बाबा को निराश करता। नवागत अधिकारियों को उनके आगमन के साथ ही अधीनस्थ कर्मचारी बाबा के बारे में पूरी जानकारी करा देते थे और वे भी अपने पूर्वगों का अनुसरण करते हुए कभी उससे उलझने की गलती न करते थे। बाबा अपने अक्खड़ स्वभाव, हठी प्रकृति और दो टूक बातें बोलने वाले के रूप में जाना जाता था। जबतक संबंधित अधिकारियों से मनोनुकूल आदेश पारित न करा लेता, जोंक की तरह चिपका रहता था। यदि कभी कोई अधिकारी उससे जिरह-बहस करने की गलती कर बैठता तो वह ऐसी सरपट अँग्रेजी झाड़ना शुरू करता कि देसी साहबों की बोलती बंद हो जाती और उन्हें पसीना छूटने लगता। वे फौरन कलम उठाकर प्रार्थना-पत्र पर समुचित आदेश पारित कर देते थे।

एक बार नगर परिषद् के एक अति उत्साही दबंग प्रशासक ने स्वच्छता-अभियान के दौरान आम सड़क के उस व्यस्त तिराहे से बाबा का आशियाना उजड़वाकर सारा कूड़ा-कबाड़ शहर से दूर फेंकवा दिया और बाबा को आश्रयहीन बना दिया। विरोध में बाबा कई दिनों तक उसी स्थान पर बैठा धरना देता रहा, लेकिन निरंकुश नगर प्रशासन के कान पर जूँ न रेंगी। लोगों के बहुत समझाने पर आखिरकार बाबा ने जाकर गंगा-तट पर स्थित एक शिव-मंदिर के प्रांगण में शरण ली और तबसे वहीं रात्रि-विश्राम करने लगा था। उम्र की ढलान के साथ यद्यपि उसके जुझारू तेवर में अब क्रमिक ह्रास होने लगा था, किंतु उसका सेवा-मिशन अभी निर्बाध जारी था। सवेरा होते ही सेवा-अभियान के निमित्त निकल पड़ता।

लगभग आधी शताब्दी तक अपने जन-सेवा कार्य में जुटे रहने के बाद आखिरकार बाबा ढलती उम्र की मार से परास्त होने लगा। धीरे-धीरे उसकी गतिविधियाँ शिथिल पड़ने लगीं। सत्तर की उम्र पार करते-करते उसमें वह दम-खम नहीं रहा कि सारा दिन रिक्शा-ट्राली खींचता रहता। हार मानकर एक दिन उसने अपनी रिक्शा-ट्रॉली एक जरूरतमंद गरीब युवक को कमाने-खाने के लिये भेंट कर उससे छुटकारा पा लिया। लेकिन दीन-दु:खियों और पीड़ितों की

सेवा का जुनून उसे एक ठिकाने पर चैन से बैठा न रहने देता था। सहारे के लिये लठिया टेकता हुआ अब वह फक्कड़ बाबा पैदल ही लोगों की सेवा के लिये निकल पड़ता। शारीरिक असमर्थता के चलते अब उसने अपने सेवा-कार्य का दायरा केवल पागलों और कुष्ट-रोगियों तक सीमित कर दिया था। ऐसे पीड़ितों की सहायता के लिये भी उसे जन-सहयोग की अपेक्षा होती। रिक्शा भाड़ा के लिये लोगों से चंदा उगाह कर वह पागलों और कुष्ट रोगियों को अस्पताल तक ले जाता और चिकित्साधिकारियों से अनुनय-विनय करके उन्हें इलाज के लिये भरती कराता। कुछ गिने-चुने पुराने लोगों को छोड़कर नई पीढ़ी के बीच उसकी विशिष्ट पहचान अब धीरे-धीरे खोने लगी थी। न तो अब उसके गले में बासी मालाएं लटकी दिखलाई पड़तीं और न सिर पर पुराना टोप नजर आता। यहाँ तक कि कटि में लिपटा टाट का टुकड़ा भी धीरे-धीरे गायब हो गया और उसने निरा दिगंबर रूप धारण कर लिया था। कैसी विडंबना थी कि जीवन भर सड़कों पर घूमते और उत्पात मचाते विक्षिप्तों को उपचार के लिये पागलखाने में भरती कराने वाले उस फक्कड़ दिगंबर बाबा को सड़कों पर लठिया के सहारे भचकते देखकर अब लोग खुद उसी को पागल समझने लगे थे और उसे कुतूहल या सहानुभूति की नजरों से देखने के बजाय उसकी ओर से आँखें फेर लेते थे। इस उपेक्षा के दंश की पीड़ा के बावजूद बाबा की दिनचर्या में कोई बदलाव नहीं आया।

एक दिन बाबा स्टेशन के समीप एक व्यस्त चौराहे पर अपनी लठिया टेकता हुआ सड़क पार करने की कोशिश कर रहा था। सड़क पर राहगीरों की भीड़-भाड़ के साथ ही सवारी गड़ियों का भी रेला लगा हुआ था। कुछ आवारा कुत्ते और बकरियाँ भी उसी भीड़-भाड़ में इधर-उधर विचर रही थीं। उसी समय हार्न बजाती हुई एक जीप गाड़ी उधर से गुजरी। न जाने कैसे एक कुत्ता और बकरी का एक बच्चा उसकी चपेट में आकर कुचल गये और उनकी अंतड़ियाँ बाहर निकल आईं। इतना ही नहीं, जीप का तेज हार्न सुनकर घबराया हुआ बूढ़ा बाबा जब जल्दी-जल्दी डग बढ़ाता हुआ सड़क पार कर रहा था, तभी जीप उसे भी जोर का धक्का मारती हुई चौराहे से आगे निकल गई और पल भर में आँखों से ओझल हो गई। बाबा छटक कर दूर औंधा जा गिरा। दो-दो चौपायों का कचूमर निकलने और लहू-लुहान फक्कड़ बाबा के धराशायी होने की घटना से कुछ देर के लिए चौराहे पर हलचल मची रही। इसी बीच किसी ने दुर्घटना की सूचना टेलीफोन से थाने पर दे दी। थाना पास में ही था और देखते ही देखते एक दारोगा और दो सिपाही घटनास्थल पर आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि दो चौपायों के साथ ही एक नंग-धड़ंग बूढ़ा पागल आदमी भी जीप की जद में आकर ढेर हो गया है। लोगों ने बतलाया कि दुर्घटना के बाद जीप तेज रफ्तार से भाग निकली। नगर की व्यस्त सड़कों

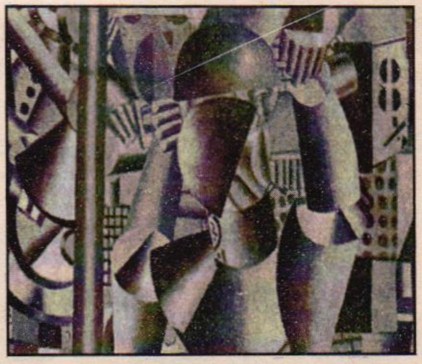

पर वाहनों से कुचल कर कुत्ते-बिल्ली जैसे छोटे जानवरों के मरने की घटनाएं तो आये दिन होती रहती हैं और नगर परिषद् के सफाई-कर्मी उन्हें कूड़ा गाड़ी में लादकर ठिकाने लगाने के कार्य में दक्ष होते हैं, किंतु एक बूढ़े पागल इंसान को भी दुर्घटना का शिकार हुआ देखकर दारोगा थोड़ी देर तक पसोपेश में पड़ा रहा। शव को उठवाकर थाने ले जाने का मतलब था लंबी कानूनी प्रक्रिया के पचड़े में पड़ना। थाने के रेकार्ड में दुर्घटना की सूचना दर्ज करना, उसके कारणों की जाँच करना, दोषी जीप-चालक की खोज, मृतक व्यक्ति की शिनाख्त का प्रयास या उसे लावारिसी का जामा पहनाकर पंचनामा तैयार कराना और फिर लाश को नियमानुसार ठिकाने लगवाने तक की सारी जिम्मेदारी थाना प्रभारी की हो जाती। पल भर कुछ सोचने के बाद बड़े-बड़े अपराधों को भी पचा जाने में माहिर अनुभवी दारोगा ने यह सारी जहमत मोल लेने के बजाय बिना झमेले वाला आसान पुलिसिया रास्ता अपनाते हुए दोनों मृत चौपायों सहित उस पगले इंसान की लाश को भी सीधे यहीं से नगर परिषद् के सफाई-कर्मियों की सहायता से ठिकाने लगवा देना बेहतर समझा। उनकी सूचना पर नगर परिषद् की कूड़ा ढोनेवाली ट्रैक्टर-ट्राली के साथ सफाई-कर्मियों का एक छोटा सा दल आनन-फानन में मौके पर आ पहुँचा। उन्होंने पहले दोनों मृत पशुओं को उठाकर कूड़े के अंबार से भरी ट्राली के ऊपर फेंका। फिर दारोगा के इशारे पर दो मुस्टंड सफाई-कर्मियों ने हाथ और टाँग पकड़कर उस कृश-काय नंग-धड़ंग बूढ़े पागल को भी उठाकर टांग लिया और उसे ट्राली पर फेंकने ही वाले थे कि उसी समय बूढ़े के मुंह से टूटती सांसों के साथ कुछ अस्फुट शब्द निकले। शायद वह फुसफसाता हुआ कह रहा था-'पल भर रूक जाओ यारो, साँसा तो टूट जाने दो!' लेकिन किसे फुरसत थी उस पागल इंसान की मरियल आवाज सुनने की। देखते ही देखते दोनों बेरहम सफाई-कर्मियों ने उसे पलक झपकते झटके के साथ ट्रैक्टर-ट्राली पर लोका दिया। कूड़े-कचरे के अंबार पर ध म से गिरने के साथ ही मरणोन्मुख बूढ़े बाबा का साँसा सचमुच पलभर में टूट गया।

अपने काम को अंजाम देने के बाद सफाई-कर्मियों की टोली कूड़ा-गाड़ी के साथ वहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो गई। राहत की साँस लेता हुआ दारोगा और दोनों सिपाही भी वापस लौट गये। चंद मिनटों में चौराहे की स्थिति बिल्कुल सामान्य हो गई मानों वहाँ कोई घटना घटित ही नहीं हुई।

जिस फक्कड़ बाबा का संपूर्ण जीवन पीड़ित मानवता की निष्काम सेवा के लिये समर्पित रहा, खुद उसकी अंतिम सांस टूटने का भी इंतजार किये बिना बेरहमी के साथ मरणासन्न अवस्था में कूड़ा-गाड़ी पर झोंककर चलते बने बेदर्द सफाई-कर्मियों ने उसके शव की अंतिम सेवा किस प्रकार की, यह तथ्य तो अनुसंधान का विषय बनकर सदैव के लिये रहस्य की परतों में ढँका रह गया, किंतु अनुमान यही लगाया जा सकता है कि उसे कफन मयस्सर होना तो दूर रहा, दाह के लिये आग या परवाह के लिये पानी भी नसीब न हुआ होगा और कूड़े के अंबार पर लदे मृत ढोरों के साथ ही उसे भी सड़-गलकर खपने के लिये नगर से दूर किसी गहरे खड्ड में लुढ़का दिया गया होगा।

**संपर्क: एस.2/51-ए, अर्दली बाजार,**
**अधिकारी हॉस्टल के समीप,**
**वाराणसी-( उ.प्र. ) 221002**

# मृत्यु-दंड

❑ तसलीमा नसरीन

लो मैं खड़ी हो गयी तन कर
जांच लें कोई बीमारी है अगर
करवा दें अंतिम स्नान
पूछ ले क्या है आखिरी ख्वाहिश?
आप लोग तो यही पूछेंगे न
कि मैं क्या खाना चाहती हूँ?
कतरनी चावल का भात? झींगा मछली?
सरसों रौंधा तिलसा?
किसे देखने की ललक मन में
मां-बाप को? भाई या दोस्त?
या किसी नजदीकी रिश्तेदार को?
नहीं, मेरी ऐसी कोई ख्वाहिश नहीं
यह सब न चाहकर
मैं कुछ ऐसी चीज चाहूंगी
जिसे सुनकर आप सब चौंक पड़ेंगे।
अगर मांगू एक सेक्यूलर धरती?
आप देंगे?
या अगर मांगू कि टूट जाएं
खेतों की तमाम मेड़ें
कंटीले तारों की सरहदें और
एक देश से दूसरे देश को बांटने वाली
दीवारें ढह जाएं।
अगर मैं मांगूं एक श्रेणी-विहीन
धर्म-विहीन
स्त्री पुरुष की बराबरी वाली
एक खूबसूरत दुनिया
तो क्या आप इसे मेरी
आंखों के सामने ला सकेगें?
अगर आप दे सकें
मैं हंसते-हंसते लटक जाऊंगी
फांसी के फंदे से
अगर दें तो मैं सिर झुकाकर
स्वीकार कर लूंगी मृत्यु-दण्ड
वरना फांसी की रस्सी
तोड़कर मैं निकल भागूंगी
और जिंदा रहकर
मैं अपने सपने रोपूंगी
तीन हिस्सा पानी
और एक हिस्सा जमीन में।

**राष्ट्रीय सहारा से साभार**

# "फुटपाथ पर"

❑ वीणा जैन

खस्ताहाल जिंदगी के
दिल दहलाते दृश्य देख, फुटपाथ पर
चलता चल, चलता चल
ना रूक कहीं फुटपाथ पर।
चिथड़ों की चिलमन भली,
है दूर तक फुटपाथ पर,
लावारिस इन्सां पड़े, खुद्दरी फुटपाथ पर।
तन के मन के सौदे होते
तम के साये, फुटपाथ पर,
कोई रोता,
कोई सोता
कोई बैठा, घुटनों में सिर छुपा, फुटपाथ पर।
यहीं खुशी है
यहीं है मातम,
यहीं जनमते, यहीं जनाज़े उठ जाते
फुटपाथ पर।
प्रेम कलह की रोटी पकती
पीड़ा के चूल्हे जलते
बस जाती गृहस्थियाँ, गगन के नीचे, फुटपाथ पर।
धरती बिछौना
आकाश ओढ़ना,
जर्रा-जर्रा गरीबी का पहरा,
दर्द भरा, इक संसार पूरा फुटपाथ पर।
कुछ कर सके तो, करता चल
ना रूक कहीं फुटपाथ पर।

**संपर्क: एम-13, डाइमण्ड डिस्ट्रीक्ट**
**एअर पोर्ट रोड**
**कोदीहीली, बंगलोर-8**

# मतिभ्रम

❑ मुरारि पचलंगिया

जनता की बातें अजीब हैं,
चलती है बस भेड़ चाल।
गया जमाना, जब आता था,
इसी रगों में भीषण उबाल।।
सभी नंपुसक बन बैठे हैं,
क्या होगा इस देश का यारो।
समय गंवाना जुर्म बनेगा,
आओ मिल बैठो व विचारो।।
चीर हरण पर मौन बने,
हम देखा करते तमाशा हैं।
नारी को हम वस्तु समझ कर,
नित देते उसे हताशा हैं।।
पता नहीं कब, कौन, कहाँ,
लालू बनकर आगे आए।
सत्ता के इन गलियारों में,
हठधर्मी बनकर छा जाए।।
पथ भ्रष्टों का साथ निभाते,
समझते खुद को राष्ट्रभक्त।
प्रिय लगती उन्हें सुरा-सुंदरी,
रहदम रहते उनमें उन्मत्त।।
जनता की इस भेड़ चाल को,
आओ हम सब मिल के सुधारें।
शुभ विचार फैलाएं सब में,
मतिभ्रम से इन सबको उबारें।।

**संपर्क: 658, सरस्वती विहार, गुरूग्राम,**
**हरियाणा-122002**

# ग़ज़ल

❑ राजभवन सिंह 'बेताब'

हाले दिल हम उन्हें सुनायें क्या।
बुत से रोयें-गिड़गिड़ायें क्या।।
जो हजारहा उजड़ चुका या रब।
उस दिल की दुनिया अब बसायें क्या।।
दीनो ईमान की चर्चा करके।
हम अपनी हंसी उड़ायें क्या।।
वतन का हाल हो गया ऐसा।
जी में आता है कि भर जायें क्या।।
यह है घोटालों का वतन यारो।
ऐसे और खबर लायें क्या।।
पता नहीं कब ईमान कत्ल हुआ।
अब उसका सुराग पायें क्या।।
खुदा को भूलकर ऐ हमनशीं।
नाखुदा पर ईमान लायें क्या।।
छेड़कर गम की दास्तां ऐ दोस्त।
हम भला तुझे भी रूलायें क्या।।
रोज एक हादसा यहाँ होता।
अब 'बेताब' और हम बतायें क्या।।

**संपर्क: पोस्टल पार्क, बुद्ध नगर,**
**पथ सं०-2, पटना -1**

# मैं हिंदी बोल रही हूँ

❑ डॉ. ए.बी.साई प्रसाद

जी नमस्ते
मैं हिंदी बोल रही हूँ
बहुतों से मैं बोली जाती हूँ
पर मैं मातृभाषा किसी की नहीं हूँ
मुझसे मेरी बहन तेलुगु भली
देश-विदेश के दस करोड़ी की वह मातृभाषा है
देश विशाल
प्रांत भिन्न-भिन्न
रीति रिवाज अनेक
मेरे शब्द एक हैं पर अर्थ अनेक
मुंबई में 'बाई' नौकरानी
बनारस में वही सुलतानी
कहीं मैं स्पष्ट से अस्पष्ट बन जाती तो
कहीं अस्थापित बन स्थापित हो जाती।
हे देशवासियो
मुझे संविधान की धाराओं से, अधिनियमों से मुक्त करो
अवधी ब्रज भोजपुरी बने हैं पाणिनी मेरे लिए
उस भल्लूक परिष्वंग से मुझे बचाओ
राजभाषा या राष्ट्रभाषा की बैसाखी को
भगवान के लिए मुझसे दूर हटावो
उर्दू के नकाब से
संस्कृत के अवगुंठन से
अंग्रेजी के तर्क से
भैया मुझे तुम स्वतंत्र बनावो
कबीर, सूर, तुलसी जल मैं बहुत पी चुकी हूँ
पंत, निराला, प्रसाद के अब नित भोग चढ़ावो
मीरा की नहीं महादेवी की वाणी से मेरी प्यास बुझावो
हे देश के नेताओं
हिन्दुस्तानी का बुरका मुझे मत पहनावो
रेखता कहो था खड़ीबोली
मुझे इस की परवाह नहीं
पर राम के लिए
(सेक्यूलर नेताओं मुझे माफ करो)
ये इंगलिश का चोला मुझे मत पहनाओ
जीते जी 14 सितम्बर को मेरा दिवस मत मनाओ
मुझे अपने हाल पर छोड़ दो।

संपर्कः डब्ल्यू-58, मैत्री,
8 वाँ स्ट्रीट, बी-सेक्टर
अन्नानगर( पश्चिम ) एक्टेंशन
चेन्नै-600101

# शैलानियों से प्रश्न पूछता भिखारी

❑ मनु सिंह

आप घबड़ाते हो भीख मांगते बच्चों
लाचार बूढ़े, स्त्रियों से जिनके तन पर
फटी चादर मैली हो फैलाती बदबू
जो आपको गंवारा नहीं, लेकिन सोचा
कभी क्यों कतार में बैठे भिखारी –
यही नाम न दिया है आप लोगों ने
दौड़ पड़ते देख शैलानी देशी या
विदेशी कुछ पाने के लिए उनसे
क्या ये अपाहिज ही थे पैदा हुए
या किये गये, कभी तो सोचा होता
हम भी जानते, समझते हम भी हैं
किसी के आगे हाथ पसारना अच्छी
बात नहीं, लेकिन करें क्या हम,
हमारे भाग्य में विधि ने शायद
यही लिखा, नहीं तो जिस मंदिर के
सामने बैठ हम हाथ फैलाते हैं
उस मंदिर का पुजारी क्या नहीं है भिखारी
क्या वह किसी खेत में चलाता है हल
करता है काम किसी कारखाने में
लेकिन वह भिखारी नहीं कहलाता
झुकते हैं सामने उसके हजारों शीश
लाखों रुपये पाता, सत्ता सुख भोगता
फर्क उसमें और मुझमें इतना है सिर्फ
कि वह छोड़ा है घर अपना और हमसे
छुटा है घर अपना, बाकी की कहानी
मैं आपके पाले छोड़ता हूँ सोचने और
परिभाषित करने के लिए कौन भिखारी
नहीं, कौन कितनी बदबू फैलाता है समाज में।

संपर्कः विनोवा नगर,
पोस्टल पार्क
पटना-1

# माँ, अंतेष्टि और मैं

❑ अजय कुमार भा॰प्र॰से॰

**माँ** मैंने तुम्हारे मुख को
चुमा था जिसने मुझे सदा
नहीं स्पुटित हुआ था
अनंत कोटि आर्शीवाद
के अतिरिक्त जिससे कोई अन्य शब्द
दागा अग्नि से बार-बार
समर्पित कर दिया तुम्हें
पंच तत्व को पलभर में जलाकर राख
करने वाली उर्जा को
फिर भी नहीं आया
तम्हारे मुख पर
कोई अन्य भाव

पवित्र अग्नि ने किया तुम्हें पाकर
आनंद का तांडव नृत्य
बन गई राख का ढेर
तुम क्षणों में
तुमने ले लिया है
मेरे जीवित लाश में
नया जन्म
पहले नहीं थी इजाज़त तुम्हें
मेरे महलों के नीचे
स्वास के साथ प्रवेश करने की
नहीं तोड़ा उनके मान को
प्रवेश के पूर्व ही भूल आई
अपनी स्वास को
माँ लोगों ने थी खाई सौंगध
अनेक बार
तुम्हारा मरा मुँह देखने का
पर तुमने सदा की प्रार्थना
उनके दीर्घायु होने की

माँ तुम कल ही सज रही थी
अर्थी पर जाने के लिए
जिसे रोक नहीं पाए
मेरे स्वर्ण तालिकाओं के हवस
और तृष्णा की लौह दीवारें

तुम्हारी चिता की अग्नि का लहर ज्वाला
आती थी लेकर एक नया रूप
जो बदल जाती थी मुझे तुमसे
कर दिया समाहित
मुझमें तुम्हारा अनंत रूप
मैं होलिका की तरह
तुम्हें भष्म करने को बैठा था
हो गया भष्म मेरा वह रूप
जो अलग था तुमसे

नहीं लगता है
इन सोने के बंगले में
जिसके कण-कण में बसी है लिप्सा
जिसे तुम कभी
स्वीकार कर न पायी थी
वह मुझमें तुम्हारे नए रूप को
क्यों कर स्वीकारेगी
ऐसे भी तुम्हारा रास्ता
इस रास्ते से अलग है

**संपर्क** : ए॰ 3/10,
बेली रोर्ड,
पटना-1

हिंदी की बात तो बहुत तो बहुत होती है,किंतु हिंदी में बात नहीं होती।

-प्रधानमंत्री

## 'द इंडियन ओपिनियन' के शताब्दी वर्ष पर

### गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति की ओर से

# राष्ट्रीय आंदोलन, हिंदी और गाँधी पर संगोष्ठी

विचार कार्यालय, दिल्ली

महात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका के डरबन में स्थापित पत्रिका 'द इंडियन ओपिनियन' के शताब्दी वर्ष 2003-2004 के अवसर पर गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली की ओर से पिछले 20 दिसंबर को 'राष्ट्रीय आंदोलन, हिंदी और गाँधी' विषय पर आयेजित संगोष्ठी का उदघाटन करते हुए प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि हिंदी की बात तो बहुत होती है, किंतु हिंदी में बात नहीं होती। उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि स्वतंत्रता-आंदोलन में एक सशक्त हथियार होते हुए भी वस्तुत: आजादी के 56 वर्षों बाद आज तक भारत की राजभाषा हिंदी अपेक्षित सम्मान से वंचित है। दरअसल झगडा हिंदी और हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की नहीं, हिंदी और अंग्रेजी का नहीं, बल्कि भारतीयता और अंग्रजियत मानसिकता की है।

प्रारंभ में गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक डॉ. सविता सिंह ने मान्य अतिथियों एवं सुश्री साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कहा कि विश्ववंद्य, महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे सेनानायक थे, जिन्होंने अपने शब्दों से ही नहीं, बल्कि कर्मों के अस्त्रों और भावों की पूँजी से स्वातंत्र्य चेतना को राष्ट्रव्यापी विस्तार दिया। उद्घाटन सत्र को संस्कृति मंत्री जगमोहन ने भी संबोधित किया तथा अध्यक्षता की समिति के उपाध्यक्ष प्रो. के. डी. गंगराडे, मंच संचालन डॉ. कैलाश वाजपेयी ने किया।

30 जनवरी मार्ग स्थित गाँधी स्मृति भवन के प्रांगण में संगोष्ठी के प्रथम सत्र में हिंदी पत्रकारिता और गाँधी विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि भारतीय पत्रकारिता में गाँधी की पत्रकारिता के बीज आज भी बरकरार है। संपादकीय पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करते हुए डॉ. वैदिक ने कहा कि संपादकीय लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष तथा पूर्वाग्रह से परे होनी चाहिए तथा पत्रकारिता का उद्देश्य है जनमत जाग्रत करने के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं जनचेतना जगाना।

वरिष्ठ पत्रकार एवं सांसद राजीव शुक्ल ने इसे अवसर पर कहा कि सम्मान के साथ जीवित रहना गाँधीजी के सिद्धांतों में एक था जिसके चलते वह सम्मान के साथ समझौता नहीं करते थे। आज की पत्रकारिता में सबसे ज्यादा निरंकुशता है। ऐसे वक्त में गाँधी के आत्म संयम से प्रेरणा प्राप्त कर पत्रकारिता की जानी चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद ने कहा कि 21वीं शताब्दी एशिया की होने जा रही है। आज हम भारत को अपनी दृष्टि से नहीं, बल्कि हमने भारत को कभी इंग्लैंड बनाना चाहा, तो कभी रूस और अमेरिका, किंतु भारत को भारत नहीं बनाना चाहा। गाँधीजी ही एक ऐसे व्यक्ति हुए, जिसने भारत को भारत की दृष्टि से देखा और उसे उसी के अनुरूप बनाना चाहा। जहाँ तक पत्रकारिता का प्रश्न है एक तरफ अपनी पत्रिका में विश्व की राजनीति की बात करते थे तो दूसरी तरफ मूँगफली की खेती की भी बात करते थे। अतएव मानव समाज को जीने के लिए गाँधीजी के रास्ते चलना होगा और इसके लिए हिंदी को अपनाना ही होगा क्योंकि गाँधी हिंदी के हिमायती थे। इस सत्र का संचालन कर रंजन कुमार ने इसे जीवंत बनाया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में 'राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य' विषय पर अपने उदगार व्यक्त करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल प्रो. विष्णुकांत शास्त्री ने कहा कि भारत को बिना आत्मसात किए भारतीयता को प्रेरित नहीं किया जा सकता। गाँधी ने भारत की आत्मा को आत्मसात किया था, इसीलिए उनके दर्शन और विचार लोगों को आज भी प्रेरित करते है। उन्होंने सबमें अपने को देखा और सबको अपने में देखा। साहित्यकारों ने बड़ी कृतज्ञता के साथ उनकी विचारधाराओं को प्रतिष्ठित किया। प्रो. शास्त्री ने पुन: कहा कि भ्रष्टाचार का जो मायाजाल हमारे देश में फैल गया है उसे गाँधी के जीवन दर्शन को उतारने के बाद ही समाप्त किया जा सकता है।

इसके पूर्व प्रो. प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि जीवन की समग्र अवधारणा का नाम गाँधी है गाँधी एक पराकाष्ठा का नाम है, प्रेम में पराकाष्ठा, दया में पराकाष्ठा, आंदोलन में पराकाष्ठा तथा सत्य एवं अहिंसा में पराकाष्ठा। सामाजिक चेतना को लेकर जिस प्रकार उन्होंने एक बड़े आंदोलन को बढ़ाया वह विरल कहा जायेगा। तमाम रचनाकारों के भीतर गाँधीवाद की छाप और उनके लेखन पर गाँधी का प्रभाव रहा है। इसी प्रकार प्रो. जगन्नाथन ने कहा कि भारतीय साहित्य को हिंदी के माध्यम से पहचाना जाए ऐसा प्रयास साहित्यकारों के द्वारा किया जाना चाहिए। प्रो. महेन्द्र मधुकर तथा राजेन्द्र अवस्थी ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र में 'राष्ट्रीय आंदोलन एवं चलचित्र जगत' पर एम. एस. सथ्यु, के. जयकुमार तथा त्रिपुरारी शरण ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति की ओर से आयोजित एक-दिवसीय संगोष्ठी में महानगर के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों के अतिरिक्त 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर सीताराम सिहं तथा अवधेश कुमार सिंहा ने भी भाग लिया।

- अनुज कुमार, दिल्ली से।

'बच्चन' की पुण्यतिथि पर

# विगत स्मृतियाँ साकी हैं

❑ डॉ.वन्दना वीथिका

एक मशहूर फिल्मी गीत की पंक्ति है-"नशा शराब में होता तो, नाचती बोतल।" निश्चित रूप से नशा शराब में नहीं शराबी में होता है। कुछ लोग हैं जो शराब पीकर नशे में चूर हो जाते हैं, कुछ लोग हैं जो दौलत पाकर बदहोश हो जाते हैं और हमारी कविता के इतिहास में एक जमाना ऐसा भी गुजरा है कि जाने कितने ही लोग शायरी की शराब में डूबकर बेहोश हो गये। वह समय था जब बच्चन अपनी 'मधुशाला' में हाला-प्याला के साथ 'मधुबाला' लिये आ पहुँचे और जमाना जैसे मदहोश हो उठा। छायावाद के रेशमी झीनी पर्दे के बीच से हालावाद का हाल सुनाने वाले हरिवंश राय बच्चन की लेखनी से जब 'मधु-कलश' झलक पड़ा तो हिन्दी-काव्य प्रेमियों का हृदय रस से सराबोर हो उठा-

तीर पर कैसे रूकूँ मैं,
आज लहरों में नियंत्रण।

बच्चन ने काव्य-प्रवाह को एक नया मोड़ दिया और हिन्दी-कविता छायावादी तट से दूर हालावादी नौका पर एक लंबे समय तक विहार करती रही।

निश्चित रूप से साहित्य, सुरा और सुंदरी का संबंध बहुत पुराना है। अंग्रेजी और इस्लामी काव्य में तो सुरा-सुंदरी की सरसता सर्वव्याप्त है और हिन्दी-काव्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। बच्चन में मधु काव्य-सृजन खैयाम के प्रति उनके आकर्षण का फल रहा है। पहले इन्होंने खैयाम की 'मधुशाला' का अंग्रेजी से खड़ी बोली में अनुवाद किया। इसके उपरांत इन्होंने अपनी मौलिक 'मधुशाला' प्रस्तुत की और खड़ी बोली की यही वह पहली पुस्तक है जिसका पहली बार अनुवाद अंग्रेजी में अंग्रेजी की ही कवयित्री मार्जरी बोल्टन ने किया था और स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू ने इस पर अपनी महत्पूर्ण भूमिका लिखी थी। सन् 1933 में लिखी गयी इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन सन् 1935 में हुआ। फिर तो इसके अनेकानेक संस्करण होते ही गये। 'मधुशाला' के नशे के बारे में अनेकानेक किस्से हैं। इसी क्रम में प्रिंसिपल मनोरंजन का एक संस्मरण है कि -"मुझे धुंधली-सी स्मृति है उस कवि-सम्मेलन की जिसमें पहली बार बच्चन ने अपनी 'मधुशाला' सुनायी थी। दिसम्बर 1933,

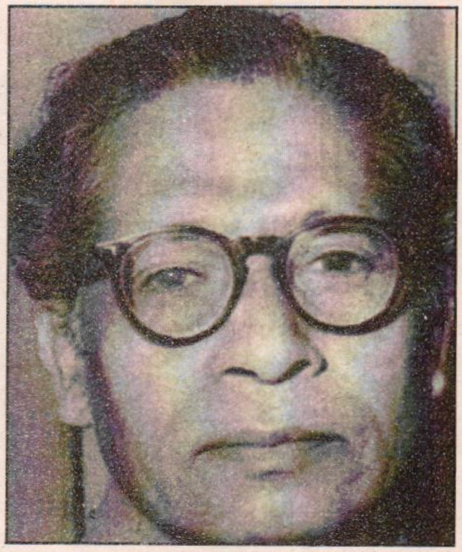

शिवाजी हॉल, काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालय।... ... दिन बच्चन का ही था। मस्ती के साथ झूम-झूमकर जब उसने अपने सुललित कंठ से 'मधुशाला' को सस्वर सुनाना शुरू किया तो सभी श्रोता झूम उठे!..... कहीं तिल-भर जगह नहीं थी। कमरे का कोना-कोना भरा हुआ था, बाहर दरवाजे के पास भी अनेकानेक विद्यार्थी थे।"

आज की राजनैतिक बंजर-भूमि में तरह-तरह के प्रलोभन-खाद से भीड़ पैदा की जाती है जिसे लोग 'रैली' और 'रैला' कहते हैं लेकिन बच्चन जिन्होंने हमारी साहित्यिक भूमि को अपने काव्य-मधु से सींचित कर एक विशाल पाठक और श्रोता वर्ग का सृजन किया था, उन्होंने किसी को किसी तरह का कोई प्रलोभन नहीं दिया। बच्चन के पीछे तो श्रोता आप-से-आप चलते-चले आये। जो काम हिंदी-उपन्यास में 'चन्द्रकान्ता' ने किया, हिंदी-काव्य में 'मधुशाला' ने।

वह जमाना घोर निराशा का जमाना था। युवक-समाज की आशाएँ अपनी आँखें मूँदती जा रही थीं। ऐसे में यह बच्चन की 'मधुशाला' ही थी जो हाला-भरा प्याला लिये हाजिर हुई जिसके संग युवक-वर्ग थिरक उठा-निराश आशाओं की आँखों से भी मस्ती छलकने लगी-

जहाँ-कहीं मिल बैंठे हम-तुम
वहीं गयी हो मधुशाला,
आँखों के आगे हो कुछ भी,
आँखों में है मधुशाला।

बच्चन ने दर्द में भी नशा घोल दिया और स्मृतियों का श्रृंगार यों किया कि वह साकी हो गयीं-दर्द नशा है इस मदिरा का विगत स्मृतियाँ साकी हैं। इस संदर्भ में डॉ० नगेन्द्र ने ठीक ही लिखा है कि "उमर खैयाम से प्रेरणा लेकर बच्चन ने अपनी 'मधुशाला' का निर्माण किया और उस युग के अवसाद-ग्रस्त युवक समाज को वहाँ बैठकर गम गलत करने का निमंत्रण दिया।"

किंतु काल की क्रूरता और कठोरता ने आज मस्ती का वह प्याला ही छीन लिया! अब सहृदयों की भीड़ कहाँ ढूँढ़ें वह ठौर जहाँ मिले उसे वह 'मधुशाला'।

संपर्क: व्याख्याता, मगध महिला कॉलेज, पटना-800001

# हाशिए पर जो नहीं है पुस्तक 'रेत के हाशिए पर' कविता की 'कॉलोनी' में नई ईमारत

समीक्षकः प्रो. (डॉ) दीनानाथ 'शरण'

कवि तारानन्दन 'तरुण' की सद्यः प्रकाशित 'रेत के हाशिए पर' पुस्तक के गीतों को जब मैंने पढ़ा तो मुझे लगा कि 'तरुण' का कवि तरुणाई का कवि है। वह भावों की तीव्रता और सुकुमारता के साथ-साथ कल्पना की सादगी और भाषा के लालित्य का कवि है। वह छायावादी परंपरा का कवि है - और छायावादी परंपरा का कवि होना कोई कम गौरव की बात नहीं है, क्योंकि 'छायावाद' ने ही 'कामायनी' जैसी अमर, अजय कृति दी है, जिसकी समकक्षता में न 'पृथ्वीराज रासो' खड़ा हो सकता है, न 'सूरसागर,' न 'पद्मावत' और न 'राम चरित मानस।' खड़ी बोली का भी कोई काव्य नहीं।

छायावादी रंग-रूप तरुण जी के उनगीतों में स्पष्ट है जो गीत प्रस्तुत पुस्तक के पृ० 39 से पृ० 66 पर प्रकाशित हैं। शेली के Devotion to something a far की ध्वनि-प्रतिध्वनि इन पंक्तियों में देखिये-

चंदा चमक रहा है, चाँदनी हँस रही है
चकवा सुबक रहा है, चकोरी रो रही है

प्रकृति-प्रेम एवं सौंदर्यपरक यह रहस्यवाद छायावाद के शीर्षस्थ कवि सुमित्रानंदन पंत की याद दिलाता है।

कुछ कविताओं में वर्डस्वर्थ के समान प्रकृति को शिक्षिका के रूप में देखा गया है-

फूलों से सीखा है मैंने
धूलों से भी नेह लगाना

संकलन के इन गीतों में प्रकृति सर्वत्र जीवंत है। प्रकृति जड़ नहीं, संजीव सत्ता रखनेवाली है। तभी तो बादल झूम-झूम कर आते हैं, चंदा छुप-छुप चला जाता है, बेला महक-महक कर बोलती है, घटा की बिजली लगाती है, शरमाती है।

तरुण जी के गीतकार में कोमल, घायल और प्रणयाकुल हृदय बोलता है- 'व्याल-विरह सी लक्षमण रेखा, मेरा गीत सहारा रे।' प्रकृति भी प्रेम-पगी है- प्रणयासक है--

क्यों सागर ज्वार उठाता
हिय में गगन को चूमने.
जवानी से पूछ लेना।

प्रकृति और प्रेम के प्रतीकों-द्वारा आजादी के बाद के हिन्दुस्तान को आम बदहाली की भी बहुत अच्छी व्यंजना कवि ने इस प्रकार की है-

एक मुसकाते पाटल को लख
औ पहरुए भूल मत जाना
धधकती रेतीली भूमि में
फूल खिलाना बाकी है

**समीक्ष्य कृतिः 'रेत के हाशिए पर'**
**कृतिकारः तारानन्दन 'तरुण'**
**प्रकाशकः प्रभा प्रकाशन, त्रिवेणीगंज, सुपौल-852139, मूल्यः 52 रुपए मात्र**

प्रकृति से कविवर तरुण को कितना प्यार है, यह इस संकलन के कुछ गीतों के शीर्षकों से ही स्पष्ट है- 'शुभ्र शरद', 'हेमंत', 'रितु शिशिर की आई', 'वसंत की मधुमय वेला आयी', 'वापस गीत', 'सुभग मेघ' आदि। इतना ही नहीं, इन प्रकृतिपरक गीतों में भावों की सुकुमारता और शैली की कोमलता भी ऐसी है जो बरबस हमें छायावादी कवि पंत की याद दिलाती है। एक-दो नमूने देखिये-

निशि-नयन-नीर मोती बन छल के
गेंदा वेला की भींगी पलकें
माँ-उर आँचल छिप-छिप शिशु किलके
सोन चिरैया-सी किरण छाई

कविवर तरुण का 'पावस गीत' तो जानकी वल्लभ शास्त्री के 'मेघगीत' से भी कहीं अधिक भाव-प्रवण है, मर्मस्पर्शी है-

झहर झहर कर मस्त गगन है
खेत-खेत में कृषक मगन है

जानकी वल्लभ शास्त्री के मेघ गीत सतही तौर पर दिमाग को झकझोरते हैं, लेकिन 'पावस गीत' के तरुणजी दिल को छू जाते हैं। यदि काव्य की आत्मा रस है और यदि रस ही काव्य की कसौटी है, तो तरुण का कवि जानकी वल्लभ शास्त्री को बहुत पीछे छोड़ गया है।

प्रकृति परक रहस्यवाद, जो छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है, तरुणजी की कविताओं में भी अपनी झलक दिखाता है, जैसे-

तुम कल्पना के श्याम घन
उपमा के नंदन कानन

फिर वहीं पर कबीर के समान प्रेम-परक रहस्यवाद की भी झलक दिखायी देती है। जैसे-

सांसों की सूनी अटरिया
तातों की फूटी चुनरिया
मांझी ले चल उस पार।

अतः मुझे प्रसन्नता है कि 'रेत के हाशिए पर' के कविवर तरुण ने छायावादी प्रमुख प्रवृतियों को न केवल आत्मसात किया है, अपितु उन्हें अच्छी अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह कवि की सामर्थ्य का प्रमाण है।

इस संकलन के कुछ गीतों में बच्चन-जैसी सरलता और स्पष्टता भी है-

दर्शन को आकुल अखियाँ
चंचल चकित चकोरी-सी

इन पंक्तियों में अविवाहित प्रेम की दो-टूक अभिव्यक्ति कवि की बच्चन-जैसी साहसिकता है क्योंकि कुमारियों की प्रेम-मुहब्बत आज भी समाज में "वर्जित क्षेत्र है। विशेषतः बिहार में, मध्यवर्गीय परिवार समाज में।

प्रस्तुत पुस्तक में मुक्त छंद में लिखी गयी अन्य रचनाएँ भी हैं, जो स्वातंत्र्योतर भारत की नयी पीढ़ी की रूचि के अनुरूप हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी की स्मृति में लिखित रचना बरवस मुझे महाकवि निराला-लिखित 'अष्टम एडवर्ड के प्रति' की याद दिलाती है। कवि की चेतना यहाँ अंतर्राष्ट्रीय क्षितिजों का स्पर्श करती प्रतीत होती है। कुछ कविताओं में वर्तमान हिंदुस्तान की बदहाली उजागर हुई है कि 'आजादी' कुछ मुट्टी भर लोगों की मुट्ठी में कैद है मानों उक्त स्वतंत्रता' ही 'बंदिनी' ले गयी हो।

निष्कर्ष यह कि 'रेत के हाशिए पर' यह पुस्तक किसी भी मानी में हाशिए पर नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है जिससे हमारी कविता की 'कॉलोनी' में नयी इमारत बनी है जो आपका सादर स्वागत करती है।

संपर्कः त्रिवेणीगंज,
सुपौल-852139 (बिहार)

# हिन्दी हाइकु लेखन का प्रभावी परिदृश्य

समीक्षक :डॉ० भगीरथ बड़ोले

जिस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी असीमित संभावनाओं का परिचय दिया है, उसी प्रकार कला क्षेत्र के अंतर्गत साहित्य रचना में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यदि हिंदी साहित्य के अद्यतन इतिहास का अवलोकन किया जाये तो ज्ञात होगा कि वहाँ मात्र मीरॉं या महादेवी वर्मा या सुभद्राकुमारी चौहान का ही उल्लेख नहीं हुआ है, अपितु ऐसे अनेक नाम उभरकर सामने आते हैं जो काव्य रचना के क्षेत्र में भी साहित्य के गौरव कहलाने के हकदार हैं। विशेषकर स्वातंत्र्योत्तर युग में इन महिला-लेखिकाओं ने न सिर्फ विविध विधाओं में अपनी लेखन-क्षमता प्रकट की है, अपितु अपनी सर्जनात्मक ऊर्जा से साहित्य के क्षेत्र में समाविष्ट विविध प्रयोगों को भी जीवंत किया है। अत: आधुनिक युग में इन महिला- लेखिकाओं के महत्व को नकारना असंभव है।

यह सत्य है कि 'हाइकु' एक विदेशी काव्य रूप है। किंतु हिंदी साहित्य के रचनाक्षेत्र में प्रारंभ से ही कहीं तो विदेशी काव्य विधाओं को स्वीकार किया गया है तो कही वहाँ की काव्य पद्धतियों के प्रयोग से साहित्य की श्रीसंपदा को संपन्न किया गया है। कहानी, उपन्यास, एकांकी तथा निबंधात्मक विधाएँ ही नहीं, काव्य क्षेत्र में प्रयुक्त सॉनेट, प्रगीत, ग़ज़लें आदि आज हिंदी साहित्य का श्रीगौरव बनी हैं। यही नहीं, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि अनेक काव्यान्दोलनों के मूल में विदेशी विचारधारा ही सृजन का आधार बनी है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के इसी क्रम के अंतर्गत जापानी काव्य छंद 'हाइकु' वर्तमान में भारतीय रचनाकारों के आकर्षण का केंद्र होता जा रहा है। 'हाइकु' जापानी काव्य परंपरा का वह अभिव्यक्ति माध्यम है, जिसमें पांच-सात और पांच शब्दों से निर्मित तीन पंक्तियों द्वारा अधिकांशत: प्रकृति-प्रतीकों के सहयोग से मानव जीवन को व्याख्यायित करने का यत्न किया जाता है। स्पष्ट है कि इस काव्य रूप में रचना कौशल, कसावट और सांकेतिकता कुछ अधिक ही मात्रा में अपेक्षित है। यहाँ यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि महिला कवयित्रियों ने इस जटिल क्षेत्र में भी अपनी कलम के धारदार होने के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। डॉ० भगवतशरण अग्रवाल द्वारा संपादित '**हिंदी कवयित्रियों की हाइकु काव्य साधना**' शीर्षक कृति इसी तथ्य को प्रमाणित करती है।

प्रस्तुत कृति में हिंदी की हाइकु-कवयित्रियों के सृजन संसार को पहली बार एक साथ प्रस्तुत करने के पूर्व विद्वान लेखक डॉ० भगवतशरण अग्रवाल ने 'हाइकु' के विषय में विस्तार पूर्वक अनेक जानकारियाँ विवेचित की हैं। 'हाइकु' शब्द के उद्‌भव, विकास, प्रयोग तथा औचित्य को निरूपित करते हुए उन्होंने उसके शिल्प, वस्तु-बोध, ऋतु संकेत तथा जीवन-दर्शन पर एक प्रदीर्घ भूमिका भी प्रस्तुत की है। यहाँ विविध विदेशी एवं स्वदेशी चिंतकों के दृष्टिकोणों को दृष्टि-पथ में रखकर कृति में संयोजित विविध रूपात्मक काव्य रचनाओं को भलीभांति जाना जा सकता है और उनका समुचित मूल्यांकन भी किया जा सकता है। इस प्रकार 'हाइकु' काव्य-रूप का सम्यक् स्वरूप-विवेचन करती यह महत्वपूर्ण भूमिका पाठकों, रचनाकारों और आलोचकों के लिये समान रूप से मूल्यवान है, उपयोगी है।

**कृति :"हिंदी कवयित्रियों की हाइकु काव्य-साधना"**
**कृतिकार: डॉ. भगवत शरण अग्रवाल, अहमदाबाद**

यद्यपि इस काव्य कृति में कुल मिलाकर 57 कवयित्रियों को प्रस्तुत किया गया है, तथापि प्रारंभ में छ: कवयित्रियों की प्रस्तुति अपनी विशेष संपूर्णता के अंतर्गत हुई है। ये कवयित्रियाँ हैं- डॉ० सुधा गुप्ता, डॉ० शैल रस्तोगी, सुश्री उर्मिला कौल, डॉ० मिथिलेश दीक्षित, डॉ० राजकुमारी शर्मा राज तथा डॉ० उर्मिला अग्रवाल। इन कवयित्रियों द्वारा विविध संदर्भों में रची गई शतकीय हाइकु रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए सुविज्ञ संपादक डॉ० अग्रवाल ने प्रत्येक कवयित्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भलीभांति निरूपण कर विविध समीक्षकों की संपतियों के आलोक में न सिर्फ उनकी उपलब्धियों का आकलन प्रस्तुत किया है, वरन् डॉ० कविता शर्मा के सहयोग से साक्षात्कार एवं प्रश्नोत्तरी माध्यम द्वारा अनेक वैचारिक संदर्भो को भी खोलने का प्रयत्न किया है। स्पष्ट है कि इस प्रक्रिया के कारण इन कवयित्रियों के काव्य को सम्यक् रूप से समझने में काफी सहयोग मिल सकता है। डॉ० अग्रवाल के अनुसार डॉ० सुधा गुप्ता के हाइकु प्राकृतिक सुषमा और सौंदर्य के चित्र रूपायित करते हैं, डॉ० शैल रस्तोगी के हाइकुओं में व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के दुख-दर्द का रेखांकन विविध प्रतीकों एवं बिंबों द्वारा हुआ है, डॉ० राज कुमारी राज के हाइकु थोड़े में बहुत कुछ कहकर भी काफी कुछ अनकहा छोड़ जाते हैं; श्रीमती उर्मिला कौल, डॉ० मिथिलेश दीक्षित और डॉ० उर्मिला अग्रवाल के हाइकुओं में नित्य प्रति के जीवन संबंधी समस्याओं, विडंबनाओं, विद्रूपताओं और शोषण के रेखाचित्रों के साथ जीवन के आनंद और उत्साह की अभिव्यक्ति तो हुई ही है, प्राकृतिक सौंदर्य, मानवीय सौंदर्य और राष्ट्रप्रेम के स्वर भी मुखरित हुए हैं। स्पष्ट है कि इन सब कवयित्रियों के हाइकुओं से जीवन संगीत के विविध रागों की स्वरलहरियाँ गुंजारित हुई हैं।

इन प्रमुख कवयित्रियों की सम्यक् प्रस्तुति के उपरांत डॉ० अग्रवाल ने 23 अन्य प्रतिष्ठित कवयित्रियों को उनके संक्षिप्त परिचय एवं तीन-तीन हाइकु रचनाओं के साथ संकलित किया है। इसी क्रम में विविध पत्र-पत्रिकाओं से चुनी गई 28 अन्य लेखिकाओं को एक-एक हाइकु के साथ प्रस्तुत कर कृति को समग्र बनाया गया है। इस प्रकार कुल 57 कवयित्रियों के माध्यम से डॉ० अग्रवाल ने सिद्ध किया है कि काव्य रचना के अंतर्गत नयें प्रयोगों के क्षेत्र में महिला कवयित्रियाँ कहीं भी उन्नीसा नहीं हैं। इस प्रकार प्रस्तुत कृति महिला कवयित्रियों की विशिष्ट प्रतिभा और क्षमता को ही द्योतित नहीं करती, वरन् आश्वस्त भी करती हैं कि इस सब के प्रयत्नों से हिंदी साहित्य निश्चित ही संपन्न होगा। अस्तु, डॉ० भगवतशरण अग्रवाल द्वारा परिश्रम पूर्वक सुसंपादित एवं हिंदी हाइकु के क्षेत्र में प्रभावी परिदृश्य प्रस्तुत करने वाली ऐसी मूल्यवान कृति "हिंदी कवयित्रियों की हाइकु काव्य-साधना" के प्रकाशन का स्वागत करना सर्वथा समीचीन है।

संपर्क: 286, विवेकानंद कॉलोनी
फ्रीगंज, उज्जैन-456010 (म०प्र०)

# भारतीयता, संस्कृति और संसदीय कार्यकलापों को जोड़ती पुस्तक

समीक्षकः प्रो.( डॉ. ) एल.एन. शर्मा

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक प्रो. साधुशरण द्वारा 1985 से लेकर 2000 तक प्रकाशित, अप्रकाशित अथवा अर्द्धप्रकाशित निबंधों का संकलन है। कुल 15 लेखों में 11 हिंदी में होने के कारण हिंदी-खण्ड के भाग हैं और 4 अंग्रेजी में होने के कारण अंग्रेजी-खण्ड के। काल और विषय की दृष्टि से ये निबंध बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में भारत और बिहार के संदर्भ से पाठकों को परिचित कराते हैं। किंतु पुस्तक का नाम भ्रामक है और व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भी। पुस्तक के जिल्द में जो नाम हैं उसमें संसद के बाद "और" शब्द का उपयोग उचित था और मुख्य पृष्ठ पर जो नाम दिया गया है उसमें संस्कृति और संसद के बाद अद्धविराम चिन्ह होना चाहिए था। पर यह उतनी महत्वपूर्ण बात नहीं है। मुख्य यह है कि यह लेखक द्वारा प्रस्तुत वैसे आलेखों का संकलन है जिसमें विद्वान लेखक राजनीतिक विभिन्न मुद्दों पर अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं। विचारों में तार्किकता है और तथ्यात्मकता भी। अत: पुस्तक का नाम "मेरे विचार" या "राजनीतिक मुद्दों पर मेरे निबंध" होता तो कम से कम ज्यादा विश्वसनीय संप्रेषणीयता होती।

संकलित निबंध भारतीय राजनीति की जिन ज्वलंत समस्याओं पर विचार निरूपित करते हैं, वे हैं-पेटेंट विधेयक, जम्मू-कश्मीर की समस्या, कारगिल, राष्ट्रीय एकीकरण और भारतीय संविधान की समीक्षा। दो लेख बिहार के संदर्भ में हैं। एक लंबा लेख बिहार में राष्ट्रपति शासन की अनिवार्यता के पक्ष में दिए गए तर्कों से परिपूर्ण है और दूसरा जहानाबाद के आतंक और हिंसा के सच को उजागर करता है। दोनों लेख अत्यंत तथ्यनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ हैं। जहानाबाद पर प्रस्तुत निबंध शोधी छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है और शांति स्थापना की जबरदस्त वकालत करते हुए नीति निर्धारकों और पदाधिकारियों के लिए पथप्रदर्शक भी। दो लेख वीर कुंवर सिंह और सरदार पटेल के व्यक्तित्व-कृतित्व विश्लेषण से संबंधित हैं।

पुस्तक : संस्कृति, संसद, राष्ट्रीयता
लेखक : प्रो० साधुशरण
प्रकाशक : मारूति प्रकाशन, पटना
2002, पृष्ठ 148

पुस्तक के नाम को औचित्य प्रदान करने वाले लेख 15 में से मात्र पांच हैं-संसद पर दो, भारतीयता पर एक और संस्कृति या मानसिक उपनिवेशवाद से संबंधित दो शायद लेखक ने इन लेखों के माध्यम से प्रेषित संदेश को महत्ता देने के लिए ही इस पुस्तक के नाम में भारतीयता, संस्कृति और संसदीय कार्य-कला को जोड़ते हैं। वस्तुत: 28वें पृष्ठ पर दिया गया चार पृष्ठों के "भारतीयता" नामक लेख का निष्कर्ष महत्वपूर्ण है। उनका संदेश कि "..... भारतीयता को जागृत अवस्था में रखने के लिए भारतीय वास्तुकला, चित्रकला, नाट्यकला, नृत्य, काव्य-शास्त्र, पाक-शास्त्र, नीतिशास्त्र के साथ-साथ राष्ट्रीय झंडा, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय प्रतीक के प्रति.....आदर का भाव रखना होगा" अंर्तमन से ग्राह्य है। "संस्कृति" नामक लेख में संस्कृति की परिभाषा और व्याख्या के साथ भारतीय कला या पूर्वी कला की उत्कृष्टता और प्रेम, सत्य, अहिंसा आदि के मूल्यों की पुनर्स्थापना का आग्रह भी है। ये लेखक के मौलिक संदेश हैं।

कवि, राजनीतिक, दार्शनिक, विचारक अपने विचारों को मुक्त रूप से शोधी ही नहीं, सामान्य नागरिकों के सामने भी रखें-यह जनतंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए बहुत ही आवश्यक है। लेखक का यह प्रस्तुत ग्रंथ इस दिशा में सार्थक, प्रासंगिक और अन्त:क्रिया के लिए लालायित करता हुआ सार्थक प्रयास है। पाठक इसमें विद्वान का अस्पष्ट, अंहनिष्ठ, तीखा वक्तव्य नहीं वरन् प्रेरक प्रसंगों, विश्वसनीय तथ्यों एवं तर्कों पर आधारित विचारों को पाएंगे जो उनके जीवन मूल्यों को प्रभावित कर सकता है।

संपर्क: ए-92, पी. सी. कॉलोनी,
कंकड़बाग, पटना-20

# ''रंग मैले नहीं होंगे'': गीत 'सृजन-सौन्दर्य' के

समीक्षक : कुमार रवीन्द्र

**गीत जीवन की उष्मा-भरा घाम है**
**तीरगी में लड़ाई का पैगाम है**
**मुक्ति की राह का हर मिथक गीत है**
**लोककंठों में जीवित सबक गीत है**

यों तो गीत को किंवा कविता की किसी भी विधा को परिभाषित करना आसान नहीं होता, क्योंकि कविता मानुषी सरोकारों में सबसे सूक्ष्म संसर्गों से उपजती है, ये संसर्ग मानव-मन के जिस स्थल में होते हैं, वह गहन अनुभूति का उद्गम-स्थल होता है; अस्तु, उसकी जिज्ञासाएँ भी गहरी और अंतरंग होती हैं, फिर भी आज के जटिल जीवन-प्रसंगों के बरक्स और स्थूल जागतिक संदर्भों से अनुभूतियों की टकराहट से जो गीत उपजता है, उसकी भाई नचिकेता की ऊपर-उद्धृत पंक्तियों से अच्छी और व्याख्या नहीं हो सकती, 'रंग मैले नहीं होंगे, जो कवि-चिंतक नचिकेता का नवाँ गीत-संग्रह है, सच में, मुक्ति की राह के मिथकों का ही सशक्त दस्तावेज़ है। कवि ने इन गीतों को 'जनगीत' कहा है, संग्रह के 'उठे हाथ की थाम' गीत में वह इस 'जनगीत के पाँवों की पदचाप' को 'कजरी, झूमर, विरहे की आलाप' में सुनता है, उसके अनुसार 'जनगीत' की जड़ें 'काले लोगों के बहे पसीने' में है। इसका वास है मिलों, खेतों खालिहानों में / प्यार-भरी आँखों की भाषा में, मुस्कानों में और मन के अंदर व्याप गए दु:ख में जन गीतों का है कर्म / सुनाना मिहनत की गाथा / और झुकाना अन्यायी माथा ! मुक्ति समर को उठे हाथ की थाप' की लय को ध्वनित करते ये गीत, सच में जीवन-संघर्ष के जुझारू आख्यान प्रस्तुत करते हैं, तीरगी से लड़ते थे, 'जीवित छंद' उस मानुषी अस्मिता से उपजे हैं, जो 'आँख में जिंदगी की झलक' देती है, इनमें गर्म, 'रोटी की महक', 'प्यार की वादियों की हँसी' है, 'एक मीठी नज़र की वरद आरसी', 'दूध पीते अंधर की थिरक' और 'चूड़ियों-कंगनों की खनक' भी है, ये गीत 'खेतों में झूमती व्यक्तियों की ग़ज़ल' हैं, इन गीतों में 'खान की रूह की धड़कनें' चुहचुहाते पसीने का हक मांगतीं है। असल में, कवि नचिकेता का रचना-संसार आम जिंदगी के रोज़ के संघर्षों से निर्मित हुआ है। समय के शब्दों को अर्थगर्भित करते ये गीत जीने की अदम्य लालसा और सृजन की अपराजित अभिलाषा से उपजे हैं, और इनमें 'तनी हथेली के अक्षर से / लिखी मुक्ति की परिभाषा' भी है, तभी तो ये जीवित छंद हैं, मिलों-खेतों में चहकती हुई ग़ज़लें हैं, जिन्हें पढ़-सुन कर 'जेठ की लू में / खिलेगा / गुलमुहर सा आदमी', वही 'सिकुड़ा-हुआ / ज़ख्मी जिगर-सा आदमी' हो गया है और

> **कृतिः 'रंग मैले नहीं होंगे'( जनगीत संग्रह )**
> **कृतिकारः नचिकेता**
> **प्रकाशकः अमिधा प्रकाशन, रामदयालु नगर, पो.-रमना, मुजफ्फरपुर-842002, मूल्यः 80 रुपए**

इसके लिए जिम्मेदार है हमारी आज की तथाकथित प्रगतिशीत अत्याधुनिक प्रजातांत्रिक सत्ता-व्यवस्था। कवि ने आज की भ्रष्ट राजनौतिक -आर्थिक-सामाजिक संरचना पर अपने तमाम गीतों में सीधी चोट की है। इन गीतों से व्यवस्था के छल-छद्मों की सीधी और सच्ची ख़बर मिलती है-

धीमा जहर पिला कर हमें व्यवस्था जहर पिला रही
अब चलजों से दूर करने की कोशिश है।
कोरे आश्वासन के झूले हर पल झुला रही
अच्छा नहीं बने रहने की साजिश है।

'लगे होंठ पर पहरे हैं' वाले इस कठिन समय में भी कवि बार-बार सत्ता-प्रतिष्ठानों की इस प्रकार की साजिशों की मुखबिरी करने से बाज नहीं आता। प्रजातंत्र शासकों की सतत आश्वासनी मुद्रामहज एक छलावा है, क्योंकि वे 'जड़ें काट कर पेड़ों की / हरियाली चाह रहें हैं' संसद को महज नारों का गोदाम बना दिया गया है। कानून गुनाहगारों का रक्षक हो जाए, जुल्म की गहरी धूँध जब कायनातों में हो और जब 'आदमी की यातना की/ सुरंगें लंबी हुई ' का माहौल हो, तब तो स्थिति यही होगी-

आदमी है
आदमी की है मगर/ पहचान गायब
जिंदगी है
जिंदगी के होंठ से/ मुस्कान गायब
ऐसी अमानुषिक परिस्थिति में,
जहाँ हवा में / बारूदों की गंध भरी है
फूल-वनस्पतियों की/ आँखें डरी-डरी हैं
गाछों के / अधरों पर भी मुसकान नहीं है
जहाँ देह से अंग अलग हो कर भी खुश है..
.. ..... .....

नदी, झील, निर्झर की साँसें रुकी-रुकी हैं माना कि 'जीना .... आसान नहीं है', फिर भी 'खोजी आँखों में..... सपनों की तलाश खत्म नहीं हुई है। कवि को स्वीकार नहीं है गीत लिखना उन शर्तों पर , जिनके तहत 'नरम छहनियों पर आरी लिखी हो ', दूध -मुँहें शिशुओं की हँसी चुरा ली गई हो, चहक में वनपाखी की चीख मिला दी गई हो और 'गरबैया की पाँखों में जंजीरें बाँध दी गई हों. 'धड़क रहा सपनों के सीने में अनजाना डर' वाले माहौल में भी कवि का प्रश्न है -

हम सहें जुल्म का चाँटा क्यों/ इस पर सोचो और
सोचो कैसे भूख जाएगी अंगारों की
जीवन का संकल्प लिए जिंदा नारों की
और इसी के साथ जुड़ी है भविष्य की आस्था
खोज हमें फिर करनी होगी नये उजालों की
तभी तो
हारेगा इस अंधकार का लश्कर भी
और
दहक उठेंगे/ इतिहासों के अक्षर भी

और इसके लिए कवि का सात्विक संकल्प है-
नई जिंदगी की आँखों में स्वप्न उगायें हम

कवि के यक्ष-प्रश्नों में ही छिपी है उनके समाधान की क्रांति दृष्टि। माना कि 'गन्ने जैसा जीवन रस गया निचोड़ है/ फिर भी हम सब को दु:ख ने आपस में जोड़ा है'। यह दु:ख का आपसी जुड़ाव ही मानवतावादी क्रांति-दृष्टि को जन्म देता है और इसी से मानव-संकल्पों को उर्जा मिलती है. पहले तो यह जानना जरूरी है- 'किसने पेड़ों से / उनकी हरियाली छीनी/

फूलों से खुशबू, किसलय से/ लाली छीनी/ गन्नों से छीनी / उसके रस की मिठास'. फिर 'हाथ में पत्थर उठाना ..... जरूरी है', क्योंकि जो सत्ता के दलाल हैं, वे न अपनी चाल चलते हैं कभी सीधी ', पहले उन्होंने ही रेहन रखी, अब धड़कनें तक गिरवी कर ली है, 'सितम की कालिख, हटाने के लिए इसीलिए 'लुक्का जलाना जरूरी है और बहेलियों से बचने का उपाय बिल्कुल सीधा है- चिड़ियों का लामबंद होना. विपरीत हवा से लड़ने , बाजों के पंख कतरने के लिए भी यही जरूरी है। अंधकार के लश्कर को हराने के लिए इतिहास के अक्षरों को दहकाना जरूरी है। तभी तो भविष्य के उस संसार की सर्जना हो पाएगी, जिसमें

पेड़ रहेंगे, पात रहेंगे/ वनफूलों में महक रहेगी
गाँव रहेंगे, शहर रहेंगे/ औ' चिड़ियों की चहक रहेगी
हवा रहेगी/ धूप रहेगी
खुशबू का त्योहार रहेगा..... ..... .....
शब्द रहेंगे, छंद रहेंगे/ गीतों की लय-ध्वनि रहेगी
और गूँजती कानों में संघर्षों / की प्रतिध्वनि रहेगी
मानव और/ प्रकृति से झरता
झरने जैसा प्यार रहेगा

मानव और प्रकृति का यही संयुक्त नेह-निर्झर नचिकेता के सभी गीतों में अनवरत झर-झर झरता है और यही है इस संग्रह के गीतों की भी उर्जा का रहस्य। पहाड़ी झरने की तरह इन गीतों का प्रवाह इनकी सहज लयात्मकता की सर्जना करती है। कवि की सात्त्विक आस्तिकता में प्रकृति और पुरुष एकात्म होकर उपस्थित होते हैं। इसी से कवि का ओजस्वी संकल्प भी उपजता है-

एक अँजुरी प्यार की खातिर/ जियेंगे हम
बाखबर घर द्वार की खातिर /जियेंगे हम......
जहाँ हो पूरा गगन उड़ते पखेरू का
दूध पर अधिकार हो पयमुखी लेरू का
उस नये संसार की खातिर/ जियेंगे हम

संग्रह के समापन-गीत में से ये गीत अपनी इसी जीवंत आस्था के लिए उल्लेखनीय है. 'जीवित द्वंद्व' शीर्षक के इस गीत में उस मनुषी आस्तिकता की प्रस्तुति हुई है जो कविता की शाश्वत सनातन सरोकार है। कविता की जिजीविषा जीवन की जिजीविषा है। अस्तु, 'जबतक' मेघों में/ जलकंठ हैं/ तबतक जीवित छंद रहेंगे'या जबतक चूड़ी है/ कंगन है/ तब तक जीवित छंद रहेंगे, और यह भी कि 'अगर प्यार है/ जिजीविषा है/ और सृजन की अभिलाषा है/ तनी हथेली के अक्षर से / लिखी मुक्ति की परिभाषा है', तो कवि यह यह संकल्प भी सच है- 'जब तक साँसें हैं/ धड़कन हैं/ तबतक जीवित छंद रहेंगे, और इसी जीवित छंद की पैनी धार आस्तिकता को कवि नचिकेता ने अपने नवीनतम संग्रह में वाणी दी है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इन गीतों में है युद्धरत होते रहने का उत्साह भाव, जो एक अलग किसिम के उल्लास के वातावरण की भी सृष्टि करती है। इन गीतों का जुझारू स्वभाव इन्हें इधर लिखे जा रहे नवगीतों की पाँत में अलग ही दिखाता है। ये गीत एक परिपक्व अनुभवी व्यक्तित्व की क्रांतिधर्मी ऊर्जा और आस्था को भी रेखांकित करता है। यह भी इनकी एक उपलब्धि है। गीतों की भाषा एवं बिंबयोजना सीधी और सहज है, जो आज के गीत की एक प्रमुख पहचान है। ये गीत भाषा के उस तनाव की सृष्टि करते हैं, जिससे गीत की लय एवं उसके अर्थ समग्र बनाते हैं। हाँ, एक बात इन गीतों में कतई नहीं मिलती। कविता की विविध वर्णी रहस्यमयी प्रकृति के दर्शन इनमें नहीं होते। इस दृष्टि से ये गीत कुछ हद तक अध ूरे हैं और इसके लिए जिम्मेदार है कवि नचिकेता की उद्दाम जनवादी संचेतना, जिसका सम्मोहन इतना प्रबल है कि गीतों के बीच में रहते हुए किसी अधूरेपन का एहसास नहीं होता। वस्तुत: अपनी ऊर्जा से यह गीत नाचते हुए एक ऐसे वलय की सृष्टि करते हैं, जो अपने-आप में संपूर्ण लगता है। शुद्ध यथार्थवादी कवि नचिकेता की विश्वामित्री इस सृष्टि में रहस्यानुभूति और स्वप्निल चेतना भी जागतिक यथार्थ के धरातल से जुड़ कर ही प्रस्तुत हो पाई है। यही इन गीतों की उपलब्धि भी है और यह भी सही है कि ये गीत एक अलग किसिम के 'सृजन सौन्दर्य' के हैं, जिनमें जीवन के नाजुक संदर्भों के लिए कोई जगह नहीं है।

संपर्क: क्षितिज,310,अर्बन एसटेट-2,
हिसार-125005, हरियाणा

# रचनाकारों से

**(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।**

**(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।**

**(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।**

**(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।**

**(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।**

**(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।**

**(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाऐगी।**

**(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।**

**(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।**

(10) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका **E-mail - vicharbharat@hotmail.com**

सिद्धेश्वर

**सम्पादक, 'विचार दृष्टि', दृष्टि, 6, विचार बिहार,**

यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92,

दूरभाष: (011) 22530652,22059410

गणतंत्र दिवस पर

# लोकतंत्र का बदलता स्वरूप

❑ गणेश प्र. सिंह

भारत को आजाद हुए 56 वर्ष हो चुके हैं और 21वीं सदी में यह प्रवेश कर चुका है। जब विगत वर्षों पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि हमारे रहनुमाओं ने जिन राजनीतिक मूल्य-मान्यताओं की आधारशिला पर संविधान का निर्माण किया था, वह आधारशिला ही डगमगा रही है। जिस जनतंत्र में रोजी रोटी की गारंटी दी गई है और धर्मनिरपेक्ष समाज की रचना करने का संकल्प लिया है, आज वहीं पर सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातियता की भावनाओं को भड़काकर सता हथियाने का कार्य हो रहा है। हमारे रहनुमाओं ने एक आदर्श समाज का निर्माण करने का खाका तैयार किया था, जिसमें राजा से रंक, भंग से ब्राह्मण, गरीब से अमीर, छोटा से बड़ा एक सा न्याय पाने का अधिकारी है। कानून की नजरों में कोई छोटा कोई बड़ा नहीं होगा। किसी के साथ कोई भेदभाव बरता नहीं जायेगा। इन्हीं सिद्धांतों के आइने में प्रत्येक व्यक्ति को एक वोट देने का अधिकार दिया गया है और उसी वोट के आधार पर जो बहुमत में होगा उसी का शासन होगा। लेकिन आज ठीक इसका उल्टा हो रहा है, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। जिसके पास सबसे बड़ा गुंडा वाहिनी होगी, वही शासन करेगा। यही कारण है कि आज प्रत्येक दल अपने सिद्धांतों से अलग हटकर सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातियता के बल पर सत्ता हासिल कर रहा है। गरीबी, भूखमरी एवं विकास के नाम पर जनता को बहलाने के लिए लाठी भजावन, तेल पिलावन, महारैला कर लोगों को गोलबंद कर रहा है। कोई सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काकर, तो कोई जातीय उंमाद पैदाकर लोगों को गोलबंद करने में लगा है। ऐसी परिस्थिति में देश के प्रबुद्ध नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि इसका प्रतिवाद करें। क्या इसका प्रतिवाद वे अकेले कर सकते हैं अथवा इसके प्रतिवाद के लिए लोगों को गोलबंद करेंगे। यह प्रश्न आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हम पूर्व मनिषियों के विचारों को उद्धृत करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

1945 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था "भारत हजारों वर्षों तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा है। राजतंत्र में शासकों ने जनता को रौंदा, कुचला और सताया। अत: समय की मांग है कि आजादी के बाद कम से कम 25 साल तक भारतीय जनता को योजना-बद्ध तरीके से प्रजातंत्र में अपने अधिकार

एवं कर्तव्य की शिक्षा दी जाय और फिर लोकतंत्र को सही अर्थ में लागू किया जाय"।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी के बीच भारत के लोकतंत्र पर गंभीर वार्ता हुई थी। गुरूदेव का कहना था कि हर मौलिक समस्या मानसिक दास्ता की है। "सितम्बर, 1925 की "मार्डन रिभ्यू" में गुरुदेव ने लिखा है" ईश्वर ने अपने संविधान में दिमाग की व्यवस्था कर रखी है। तमाम संस्कृतियों के नष्ट होने का कारण यह है कि एक वर्ग ने बहुसंख्यकों के दिमाग को किसी न किसी दबाव में नष्ट कर दिया है। मनुष्य की सबसे मूल्यवान संपत्ति उसका दिमाग ही है। गुरूदेव के लिए भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता जरूरी थी, परंतु उससे भी जरूरी था भारतीयों के दिमागी दासता को तोड़ फेकना। गांधीजी ने गुरुदेव को लिखा-"भारत में नकारात्मक शासन एक गिरगिट की तरह है" आज वह एक अंग्रेज के रूप में हो रहा है। कल किसी दूसरे रूप में और परसों अपने घरेलू शासकों का रूप ले सकता है। गांधीजी घरेलू कुशासन के प्रति उदासीन थे। कांग्रेस मंत्रियों द्वारा किए जा रहें भ्रष्टाचार से इतने क्षुब्ध थे कि उन्होंने कांग्रेस को भंग करके लोक सेवक संघ बनाने की योजना बनायी थी। उनका कहना था कि समस्याएं सदैव रहती हैं। विदेशी शासन को जाना ही पड़ेगा और घरेलू कुशासन से निपटने के लिए कारगर रास्ते अपनाने पड़ेगें।

ऊपर उद्धृत नेताजी सुभाष चंद्रबोस, गुरूदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी के विचारों का गहनतम अध्ययन और अवलोकन तथा विशलेषण हमें यह सोचने पर विवश कर देता है कि भारतीय लोकतंत्र के बारे में उनकी परिकल्पनाएं अपनी-अपनी जगह अक्षरश: सत्य थीं।

आज भारतीय लोकतंत्र गरीब की जोरू है। यह अभागिन चिल्ला-चिल्ला कर, कंठ फाड़कर आवाज दे रही है:-"है कोई कृष्ण, है कोई राम" मेरी लुटती हुई अस्मत को दरिंदों से बचावे। अफसोस! बचाने की बात तो दूर बिहार के पूर्व डीजीपी आर.आर. प्रसाद और चीफ सेक्रटरी ने पटना उच्च न्यायालय में स्वीकार किया कि वे इतने शक्तिविहीन हैं कि द्रौपदी के चीर हरण में भीष्म की भूमिका ही निभा सकते हैं यानि द्रौपदी नंगी होगी और भीष्म की तरह सर नीचा करके अपनी नपुंसकता और पुरुषत्वविहीनता का राग अलापेगें। इस महकमें सभी नंगे हैं। आज अपराधी को गोद में बैठाकर अपराध समाप्ति की बात की जा रही है। अपराधी को शहीद घोषित किया जा रहा है। मंत्रियों के घर में अपहरण की योजना

बनती है और अपहरणकर्ता मंत्री के घर से फिरौती की रकम मांगते हैं। अपहरकर्ता की गिरफ्तारी यदि मंत्री के बंगले से होती है तो दिखाया कहीं और जाता है। बिहार के चप्पे-चप्पे में रंगदारों की तूती बोलती है। यहाँ पर लाठी भंजावन और तेल पिलावन की भाषा बोलकर लोगों को गोलबंद किया जाता है। इस देश में हत्या और बलात्कार कोई अपराध नहीं समझा जाता है। यहाँ की पुलिस राजनेताओं की रखैल बन गई है। अतः जनता को वेश्या बनने के लिए ढकेला जा रहा है। पूरे भारत में अराजकता का माहौल है। राजनेता गरीबों और सैनिकों की चिंताओं पर अपनी रोटियां सेंक रहे हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में सात-सात बलात्कार होते हैं। यहां के होस्टलों से लड़कियों को अगवा किया जाता है और होस्टल में बलात्कार किया जाता है। हम उस लोकतंत्र में रहते हैं जहाँ मधुमिता शुक्ला, कुंजम बुद्धिराजा, शिवाजी भटनागर, नैना साहनी, रति पासी, प्रियदर्शनी भट्ट ऐसे लाखों औरतों का बलात्कार और हत्या का शिकार राजनेता, पुलिस और नौकरशाह बनाते हैं। जहाँ रक्षक ही भक्षक की भूमिका अदा करते हैं तो रक्षक कौन?

हम उस लोकतंत्र की बात करते हैं जो डब्लू सिंह जैसे मुंबई उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर आसीन होते हुए भी दाउद भाई के लिए समर्पित थे। हम पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायधीश श्री मुखर्जी की बात कर रहे हैं, जो बिना परीक्षा दिये एस.पी. की बीबी को उत्तीर्ण करा दिया। ऐसे न्यायाधीश की संख्या एक नहीं सैकड़ों में है। आप समाचार के पन्नों को पलटिये और दिमाग साफ कीजिए।

स्वधन्य है लोकतंत्र, जो कानून को लात मारनेवालों को कानून का रक्षक बनाता है। भारत का गृहमंत्री वह बनता है जो मस्जिद ध्वस्त करने के मामले में सी.बी.आई. द्वारा आरोपित है। यह वह लोकतंत्र है जहां मंडल और कमंडल की राजनीति होती है और मनुष्यों की मौलिक समस्याओं को नजरअंदाज किया जाता है। वोट बैंक की राजनीति ने भारत को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे-आओ, विचारों मिलकर समस्याओं का समाधान करें।

समय आ गया है, यदि हम सभी अपने-अपने कर्तव्य नहीं निभाये तो लोकतंत्र कब्र में चला जायेगा। हमें लोकतंत्र को बचाना है और इसके लिए त्याग और बलिदान देना है।

यह मत भूलिए कि कभी-कभी बंदूक की काट केवल बंदूक होती है। तटस्थ और हाथ पर हाथ रखकर बैठनेवालो सुन लो-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी, केवल व्याघ्र।<br>
जो तटस्थ है, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

अतएव नौजवानों, जागो, उठो, चेतो और कुर्बानी देकर भी अपने लोकतंत्र की रक्षा करो अन्यथा आने वाली पीढ़ी और इतिहास आपको कायर और डरपोक कहकर अपने पूर्वजों से घृणा करेगी।

**संपर्क: शांति नगर,**<br>
**भूतनाथ रोड, पटना-20**

## पाठकों एवं लेखकों को हार्दिक बधाई

'विचार दृष्टि' ने अपने पाँच साल पूरे कर छठे वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवधि में पाठकों एवं लेखकों को का भरपूर सहयोग इसे मिला है। आप हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। विश्वास है आपका अपेक्षित सहयोग विचार दृष्टि को आगे भी मिलता रहेगा क्योंकि वही हमारा संबल है और वही है हमारी पूँजी जिसके सहारे इसका सफल प्रकाशन हो पा रहा है।

हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि लेखकों का रचनात्मक सहयोग यदि इसी प्रकार इस पत्रिका को प्राप्त होता रहा तो न केवल आप पाठकों को एक स्वस्थ एवं स्तरीय मानसिक खुराक प्रदान करने में हम कोई कोर-कसर नहीं उठा रखेंगे, बल्कि अपने उद्येश्यों के अनुरूप राष्ट्रीय एवं जन चेतना जाग्रत करने में हमारे कदम अनवरत बढ़ते रहेंगे क्योंकि राष्ट्र व समाज को मौजूदा हालात से उबारने में वैचारिक क्रांति के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं।

पत्रिका के सदस्यों से आग्रह है कि जिनकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है वे कृपया उसका नवीनीकरण करा लें और अपने मित्रों एवं शुभेच्छुओं को भी इसकी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें। एक सजग नागरिक होने के नाते यह आपकी गरिमा के अनुरूप होगा और आपका एक राष्ट्रीय कर्तव्य भी पूरा होगा।

'दृष्टि', यू.-207, शकरपुर<br>
विकास मार्ग, दिल्ली-92<br>
दूरभाष: 011-22059410, 22530652,<br>
0612-2228519, फैक्स-011-22530652

सिद्धेश्वर<br>
सपांदक, 'विचार दृष्टि'

# विधानसभा उपचुनाव में बसपा और जद (यू) को करारा झटका

## विचार कार्यालय, पटना

उत्तरप्रदेश में सत्ता से बेदखल और अपने विधानमंडल दल में हुए बड़े विभाजन से बेहाल बहुजन समाज पार्टी को समाजवादी पार्टी ने एक और करारा झटका देते हुए उ.प्र. विधानसभा के उपचुनाव में मायावती के इस्तीफे से रिक्त हुई सहारनपुर जिले की **हरोड़ा** और बसपा विधायक अलीबहादुर की मृत्यु के कारण खाली हुई बहराइच जिले की **महसी** सीट पर सपा के क्रमश: विमला राकेश और दिलीप वर्मा ने कब्जा किया।

इसी प्रकार बिहार विधनसभा की तीन सीटों के लिए संपन्न उपचुनाव में राष्ट्रीय जनता दल की समता देवी तथा ओमप्रकाश पासवान ने क्रमश: बाराचट्टी तथा फतुहा सुरक्षित सीटों पर कामयाबी हासिल कर जद (यू) को निश्चित रूप से यह संकेत अथवा चेतावनी दी दी है कि अगला लोकसभा तथा विधानसभा चुनाव उनके लिए आसान नहीं होगा। यह बात ठीक है कि सीतामढ़ी के तीसरे सीट पर भाजपा के सुनील कुमार ने राजद के शाहिद अली खान को चौंतीस हजार तीन सौ सोलह के भारी मतों से हराकर पिछले चुनाव का बदला लिया है, लेकिन यह उप चुनाव राजग को सावधान रहने के लिए काफी कुछ कह गया। जद (यू) के वरिष्ठ नेता नीतीश कुमार की रेल, सड़क तथा पनबिजली क्षेत्रों में इतनी सारी उपलब्धियों और उनके स्वयं के बाढ़ लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत पड़नेवाले फतुहा (सु) विधान सभा में काफी मसक्कत के बावजूद पराजय का मुँह देखना उन्हें अपने आप में झांकने के लिए मजबूर करता है और अपनी नीति-रीति में आवश्यक बदलाव के साथ-साथ अपनी प्रकृति में भी सुधार एवं नयी सोच के लिए बाध्य करता है। हर कोणे से बिहार की स्थिति जर्जर होने के बावजूद विनाश ने विकास पर धावा बोलकर विकास की एक तरह से खिल्ली उड़ाई है जो चिंता का विषय है। ऐसा लगता है कि राजनीति में 'लिप सर्विस' भी कुछ मायने रखता है।

'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर के नेतृत्व में लखन सिंह, शंभूनाथ सिंह, पूनम कुमारी, स्नेहा सिंह, संजय कुमार सिंह के छह

सदस्यीय एक दल ने फतुहा (सु०) विधान सभा के इस उपचुनाव के पूर्व मतदाताओं का जायजा लेने के लिए पुनपुन से लगभग दो-तीन किलोमीटर पूरब पुनपुन नदी के किनारे स्थित राजपूत बहुल लखन पार गाँवों का दौरा किया था। जहाँ यह सुनने को मिला कि विगत पंद्रह वर्षों के दौरान उसके जनप्रतिनिधि सांसद तथा भारत सरकार के रेल मंत्री ने एक बार भी उन गाँवों की बदहाली को देखने का समय नहीं निकाला। यात्रा पर निकस इस दल की दो महिला सदस्यों में पुनम और स्नेहा ने सिद्धेश्वर जी को यह सूचित किया कि घर की चारदीवारी में कैद औरतों की अपने जन प्रतिनिधि को देखने की लालसा इस बार भी पूरी न हो सकी। ये सब कुछ ऐसे तथ्य हैं जो जेद (यू) के उम्मीदवार की पराजय के संभवत: कारण हो सकते हैं। आगामी लोक सभा तथा विधान सभा चुनावों की चुनौतियाँ स्वीकार करने के पूर्व जद (यू) के नेतृत्व को इन सभी तथ्यों पर भी गौर करना मुनासिब होगा क्योंकि आगामी दोनों चुनाव देश के साथ-साथ बिहार की सेहत के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

उत्तरप्रदेश के स्थानीय निकाय चुनाव क्षेत्र से विधानपरिषद के 36 सीटों के लिए संपन्न चुनाव में समाजवादी पार्टी अकेले 23 सीटों पर पाँच सीटों पर उनकी सरकार में शामिल राष्ट्रीय लोकदल और राष्ट्रीय क्रांति पार्टी की जीत से सपा की शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में गहरी पैठ का सहज अंदाजा लग सकता है। भाजपा को महज चार सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। जाहिर है कि दस्तक देते लोकसभा के चुनाव में खासकर उत्तरप्रदेश में काँग्रेस के साथ भाजपा की स्थिति भी नाजुक रहेगी, क्योंकि विधानसभा के दो सीटों के लिए हुए उपचुनाव तथा विधान परिषद के लिए संपन्न चुनाव में सपा की जीत उसकी मजबूती होती राजनीतिक ताकत को परिलक्षित करती है।

इसी प्रकार गुजरात की जमालपुर विधानसभा सीट के उपचुनाव में काँग्रेस के शब्बीर भाई खेडावाला द्वारा 17 हजार से अधिक मतों से भाजपा के लालजी भाई परमार को हराकर तथा केरल के तिरूवला विधान सभा उपचुनाव में यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के एलिजावेथ मेमन द्वारा वाम मोर्चा के जार्ज वर्गीस, जनतादल(एस) के उम्मीदवार को पाँच हजार मतों से हराना भी लोकतंत्र की मजबूती का अहसास कराता है।

# पाँच राज्यों के विधान सभा चुनाव
# जो जीता वही सिकंदर

विचार कार्यालय, दिल्ली

**भाजपा की पुनर्वापसी:**

पिछले दिनों पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम सहित उत्तरी राज्यों के चार विधासभा चुनावों में मध्यप्रदेश, छतीसगढ़ और राजस्थान में भाजपा का सत्ता पर कब्जा करना राजनीतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है, क्योंकि पिछले वर्षों में गुजरात को छोड़कर उसे अन्य राज्यों के विधान सभा चुनावों में पराजय का मुँह देखना पड़ा था। इस घटनाक्रम को सत्ता के विरूद्ध वोट (Anti incumbency Vote ) करार देना भी आत्मछलावा होगा, कारण कि दिल्ली में शीला दीक्षित के नेतृत्व में काँग्रेस ने लगातार दूसरी बार शानदार जीत हासिल की है। किंतु बाकी चार राज्यों में काँग्रेस की विफलता से आगामी लोकसभा चुनाव में केंद्र की सत्ता पर काबिज होने का उसका सपना चकनाचूर हो गया प्रतीत होता है।

इसमें कतई संदेह नहीं कि कुल मिलाकर दिल्ली की जीत का श्रेय मुख्यमंत्री शीला दीक्षित और उनके कुशल प्रशासन को जाता है। वैसे भी देखा जाए तो आमतौर पर प्राय: सभी राज्यों में आश्चर्यजनक रूप से विकास का ही मुद्दा हावी रहा। न तो अयोध्या में मंदिर निर्माण की बात उठी और न ही भ्रष्टाचार के मामले को तरजीह दिया गया।

विकास के मुद्दे पर मतदान लोकतंत्र और देश के विकास के लिए शुभ संकेत है। यदि राजनीतिक दल अभी भी यह समझ बैठे हैं कि सत्ता में रहते समय विकास की उपेक्षा करके और चुनावों के समय जाति, संप्रदाय, भाषा तथा क्षेत्र का मुद्दा उठाकर जनता को वे मूर्ख बनाते रहेंगे, तो उनकी यह गलतफहमी होगी। नि:संदेह पाँच राज्यों के चुनाव परिणाम एक ओर जहाँ काँग्रेस के लिए चिंता का विषय है वहीं दूसरी ओर भाजपा के लिए एक चुनौती भी है। इसके साथ अन्य क्षेत्रीय दलों को भी यह परिणाम उन्हें सोचने पर मजबूर किया है कि अलग-अलग खिचड़ी पकाते रहने पर उनका यही हाल होगा। जद (यू.), राजद, लोजपा सहित वामपंथी पार्टियों में भाकपा, माकपा की इस चुनाव में एक न चली। यही नहीं अन्य कई राज्यों में विधानसभा के उपचुनावों में भी उनकी दुर्गति देखने को मिली।

**महिला शक्ति का उदय:**

इन राज्यों में संपन्न विधानसभा चुनाव परिणामों में एक सुखद बात यह देखने में आई कि भारतीय राजनीति में एक बार फिर महिला शक्ति का उदय होता हुआ नजर आ रहा है। पाँच राज्यों में से तीन राज्यों में विजयी पार्टी की चुनावी बागडोर महिलाओं के हाथ में थी और उमा भारती, वंसुधरा राजे तथा शीला दीक्षित ने क्रमश: म.प्र., राजस्थान तथा दिल्ली में अपनी पार्टी की जीत दिलाकर घरेलू राजनीति में महिला शक्ति के उदय की एक सशक्त तस्वीर प्रस्तुत की है जो भविष्य की राजनीति के संकेत भी देती है। पुरुषों को भी अब यह सोचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि विधायिका में 33 प्रतिशत आरक्षण रूपी झुनझुना का झांसा देकर महिलाओं को अब बहुत दिनों तक बरगलाया नहीं जा सकता। दुनिया का कोई लोकतंत्र ऐसा नहीं जहाँ पाँच-पाँच महिलाएं मुख्यमंत्री के शक्तिशाली पदों पर एक साथ बैठी हों। जब इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री और सुचेता कृपलानी उत्तरप्रदेश की मुख्य मंत्री थीं तो उसे लोकतंत्र का अजूबा कहा जाता था। यदि पाँचों महिला मुख्यमंत्री अपने दलीय मतभेदों को नजरअंदाज कर कोई मिला-जुला न्यूनतम कार्यक्रम तैयार करें और उसे लागू कर दें तो भारतीय राजनीति में एक नए युग का सूत्रपात हो सकता है। बिना आरक्षण के विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं की अच्छी खासी संख्या हो सकती है। राबड़ी देवी के अलावा सभी अन्य महिला मुख्यमंत्रियों ने सत्ता पर काबिज होने के पहले खुद तलवार भांजी हैं। उनके पद उन्हें किसी ने तश्तरी में रख कर पेश नहीं किए हैं। इसलिए भारतीय राजनीति में आज इन महिला मुख्यमंत्रियों जैसे शील और गरिमा की अधिक जरूरत है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इन चुनावों ने भारतीय राजनीति में महिला शक्ति को एक बार फिर से प्रतिष्ठित कर दिया है। शीला दीक्षित, उमा भारती तथा वसुंधरा राजे ने भारतीय राजनीति में अपनी क्षमता और लोकप्रियता को साबित करके यह बता दिया है कि पुरुषों की प्रधानता अब बहुत दिनों तक चलने वाली नहीं है। राजनीतिक दलों के लिए ये चुनावी नतीजे भले ही कहीं खट्टे तो कहीं मिठे रहे हैं, लेकिन इन महिलाओं ने पुरुषों के वर्चस्व को चुनौती दे डाली है। भारती, दीक्षित और राजे ने अन्य महिला मुख्यमंत्रियों जयललिता और राबड़ी देवी के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कर उनकी कतार को और भी लंबा कर

उसे बल प्रदान किया है। इन महिला नेताओं ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि उनमें राजनैतिक योग्यता पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। वंसुधरा राजे अथवा उमा भारती को जब नई दिल्ली में मंत्री पद छोड़कर रेत के राजस्थान और घने जंगलों व पहाड़ों के मध्यप्रदेश में भाजपा को पुनर्जीवन देने के लिए भेजा गया तो वे दोनों उस उदासीन थीं, लेकिन उनके करिश्माई नेतृत्व और प्रबल इच्छाशक्ति ने उन्हें कामयाबी दिलाई।

**मिजोरम में फिर सत्ता एम एल एफ के हाथः**

मिजोरम विधानसभा के लिए संपन्न चुनाव में सत्तारूढ़ मिजो नेशनल फ्रंट ने कुल 40 सीटों में 21 सीटें हासिल कर फिर बहुमत पा लिया है प्रमुख विपक्षी दल काँग्रेस को 12 सीटें मिलीं जबकि भाजपा का खाता भी नहीं खुल सका। इस चुनाव में मतदाताओं ने राष्ट्रीय दलों के बजाय क्षेत्रीय दल को पसंद किया है, जो उनकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को अभिव्यक्त करता है।

उल्लेख्य है कि एम एन एफ केंद्र में राजग सरकार में भागीदार है। चुनाव नतीजे नगा शांति प्रक्रिया के लिए अच्छी खबर के संकेत देते हैं। फ्रंट के नेता जोरामथंगा कोलासिब और चंपई दोनों सीटों पर जीते। जोरामथंगा ने पुनः मिजोरम के मुख्यमंत्री के रूप में राजकाज संभाल ली है।

**काँग्रेस की करारी हारः**

चुनाव नतीजों के बाद उधर भोपाल में दिग्ध्री राजा दिग्विजय सिंह ने काँग्रेस को मिली करारी शिकस्त को निजी हार बताते हुए अगले दस सालों तक विधनसभा या लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ने या किसी पद पर नहीं रहने की घोषणा की है वहीं राजस्थान की सत्ता पर काबिज वंसुधरा राजे ने जनता के विश्वास और भावनाओं की कद्र करने की बात कही है। यह तो आगे आनेवाला वक्त ही बताएगा कि कौन कहाँ तक अपने वादे पर खरे उतरते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो भाजपा और काँग्रेस

दोनों प्रमुख दलों ने चुनाव के दौरान एक दूसरे पर आरोपों का जो बौछार किया वह चुनाव के दिनों में कोई नया नहीं था। असल तो है कि जो जीता वही सिकंदर। शक्ति की सर्वत्र पूजा होती है। इसलिए जो पार्टी जीती है उसी की पूजा लोग करेंगे।

इस प्रकार हिंदी पट्टी के चार और पूर्वोत्तर मिजोरम राज्य के विधानसभा चुनावों के नतीजे किसी पार्टी की जीत मानने के बजाए अगर लोकतंत्र की जीत मानी जाए तो उचित होगा क्योंकि इस चुनाव के दौरान उठाए गए विकास के मुद्दों से प्रभावित भारतीय मतदाताओं के दृष्टिकोण विकसित होने का अहसास दिलाते हैं। म. प्र. में भाजपा में तमाम तरह के अंतर्कलह और दिग्विजय सिंह के अति आत्मविश्वास एवं उनके सोसल इंजीनियरिंग की स्थिति में भी भाजपा की जीत इस सोच को बल प्रदान करती है। इसी प्रकार राजस्थान में जाट समुदाय की काँग्रेस से नाराजगी और वसुंधरा राजे को मुख्यमंत्री के तौर पर प्रस्तुत करने का खासा असर हुआ। राजस्थान के कई क्षेत्रों में अभी भी सामंती व्यवस्था की शर्मनाक स्थितियों के बावजूद वसुंधरा राजे को जाट की बहू के रूप में स्वीकार भाजपा की जीत का प्रमुख कारण माना जा सकता है। छतीसगढ़ में काँग्रेस के अजीत जोगी की करारी हार का यही संकेत है कि चालाकियों और तोड़फोड़ की राजनीति से कुछ दिनों तक तो सफलता मिल सकती है लेकिन इसे स्थायी स्वरूप देने के लिए जनता के सरोकारों के प्रति संवेदनशील होना ही होगा।

जहाँ तक तीन राज्यों में काँग्रेस की पराजय के कारणों की बात है चुनाव नतीजे से यह स्पष्ट हो गया है कि जनता को अब काम करनेवाली सरकारें चाहिए। अब जनता शायद ऐसे नेताओं को भी बख्शनेवाली नहीं है जो अपनी छवि तो अच्छी बनाए रखते हैं, लेकिन विकास कार्यों की अनदेखी करते हैं। म.प्र. के दिग्विजय सिंह और राजस्थान के अशोक गहलोत की साफ-सुथरी और ईमानदार छवि के बावजूद इसकी प्रशासन में झलक नहीं दिख सकी। इसीलिए उन्हें बुरी तरह मात खानी पड़ी। इसके विपरीत शीला दीक्षित ने यह साबित किया कि बेहतर काम करके सत्ता विरोधी माहौल का निर्माण रोका जा सकता है। उनकी जीत इसीलिए आसान हो गई कि अपनी साफ-सुथरी छवि के साथ-साथ वह स्वयं को एक कुशल प्रशासक के रूप में उभारने में सफल रहीं। काँग्रेस की पराजय का एक कारण यह भी रहा कि म.प्र. के दिग्विजय सिंह लगातार दस वर्षों के शासन के पश्चात स्वयं को चुनावी रणनीति का एक ऐसा महारथी समझ बैठे थे कि उन्हें यह टिप्पणी करने से भी गुरेज नहीं रह गया था कि **'चुनाव जीता नहीं जाता मैनेज किया जाता है।'** किंतु जनता जनार्दन ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। जहाँ तक छतीसगढ़ में काँग्रेस की हार का सवाल है भाजपा के दिलीप सिंह जूदेव के भ्रष्टाचार में लिप्त रहने के बावजूद जूदेव को जोगी मिलने से **'सेर को सवासेर मिल गए'**। अजित जोगी ही नहीं उनके परिवार और रिश्तेदार सभी की छवि कुछ ऐसी बन गयी कि जूदेव की करनी छत्तीसगढ़ के लोगों को जूँ के बराबर भी नहीं लगी। जो हो इस बार के विधानसभा चुनाव में काँग्रेस के पैर डगमगा चुके हैं। इन राज्यों में काँग्रेस का ग्राफ जितना नीचे गिरता नजर आ रहा है वह अगले लोकसभा चुनावों के मद्देनजर पार्टी के लिए खतरे की घंटी है। किंतु भाजपा को भी अपनी प्राथमिकता तय करने का यह स्वर्णिम अवसर मिला है। चाहे तो भाजपा अपने मूल मद्दे को छोड़ सकती है ताकि वामपंथियों और समाजवादियों को भी उससे हाथ मिलाने में ज्यादा संकोच नहीं हो। अन्यथा दक्षिण और पूरब में तो उसकी उपस्थिति नगण्य है ही, हिंदी पट्टी के दो बड़े राज्यों उत्तरप्रदेश और बिहार में अभी भी भाजपा की हालत पतली है। इसलिए उसे अटल जी के गाँधीवादी समाजवाद प्रस्ताव पर पुनः विचार करना चाहिए।

# भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट की काली छाया और सरदार पटेल

❑ प्रो० साधुशरण

राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई की ओर से पिछले 2 नवंबर 2003 को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 128वें जयंती-समारोह के अवसर पर आयोजित एक विचार संगोष्ठी में विद्वान लेखक प्रो० साधुश्रण द्वारा इस निर्धारित विषय पर एक तथ्य परक शोध-आलेख प्रस्तुत किया गया, जिसमें लौह पुरुष सरदार पटेल को तत्कालीन भारतीय राजनीति का एक सिद्धांत निष्ट एवं नैतिकता से परिपूर्ण राष्ट्रभक्त बताया गया है। जातियता, सांप्रदायिकता और नैतिकता की काली छाया से आच्छादित मौजूदा भारतीय राजनीति के दौर में लेखक के विचारों से राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं को यदि थोड़ी भी रोशनी मिलती है तो उनका यह प्रयास सार्थक सिद्ध होगा। साथ ही इसके पाठक एक अच्छी खासी स्वस्थ मानसिक खुराक पाकर लाभान्वित भी होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। विद्वतापूर्ण आलेख के लिए प्रो. साधुशरण को साधुवाद।

-संपादक

गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है. Vallabhbhai, in joining the struggle (Khera ) had to suspend a splendid and growing practice at the bar, which to all practical purposes he was never able to resume. यह खेडा आंदोलन का प्रारंभ काल था। स्वतंत्रता के पश्चात् गृह मंत्रालय, सूचना मंत्रालय, और उपप्रधान मंत्री जैसे पदों पर रहकर भी वे घर में बुनी हुई खादी का प्रयोग ही किया करते थे। मृत्यु के उपरांत उनके पास कोई बैंक बैलेंस नहीं था। नैतिकता की तुला पर रखने या परखने के लिए शायद उनके जीवन के अन्य उदाहरणों को छोड़ भी दिया जाय तो इतना ही काफी है। 1912 में बैरिस्टर बने पटेल अपनी मृत्यु पर्यन्त अर्थात् 15 दिसम्बर, 1950 तक अपने को राष्टहित समर्पित कर दिया।

नैतिकता सिखाती है-आदर्श के पथ पर चलने को, नैतिकता प्रदान करती है-लौह इच्छा शक्ति, नैतिकता सत्यानुरागी बनाती है, नैतिकता जन-कल्याण हेतु दृष्टि प्रदान करती है, नैतिकता का बीज मंत्र है- प्रजातंत्र जीवंत बना रहे, नैतिकता प्रेरणा-सूत्र है 'निर्माण के सपने बुनने का और नैतिकता ही भावी पीढ़ी द्वारा समादृत होने की चाभी अपने पास रखे रहती है। सरदार में सारे गुण विद्यमान थे। तभी तो गाँधी ने उन्हें अपना निकट का सहयोगी बनाया था। सरदार के कार्य बुद्धि से संचालित हुआ करते थे। पटेल ने द्विरूपता को कभी भी अपने पास नहीं फटकने दिया।

समय बीतता गया। संघर्ष, त्याग की परंपरा क्षीण होती गई। आज राजनीति में नैतिक मूल्यों की तलाश करनेवालों पर लोग हँस दिया करते हैं। समय के साथ कौन कहाँ खड़ा है, इसकी पहचान विद्वान लेखक सिसरो की उक्ति में ढूँढ़ा जा सकता है। उन्होंने चार तरह की श्रेणियों का उल्लेख किया है। भारतीय राजनीति में 1947 से 2003 तक वैसी चार श्रेणियाँ स्पष्ट देखी जा रहीं हैं। वे कहते हैं कि बुद्धिमान तर्कना शक्ति 'रीजन' से, कम समझवाले अनुभव 'एक्सपेरिएन्स' से, एकदम अनजान आवश्यकता 'नेसेसीटी' से, और पशु प्रकृति 'नेचर' से अपने कार्यों या जीवन को संचालित करते हैं। राजनीति में नैतिकता का समावेश करनेवाले गाँधी को जब आज कुछ लोग अर्थहीन बता रहे हों, तो नैतिकता की खोज करनेवालों पर हँसना लाजिमी है। किन्तु क्या सिसरो की श्रेणी में कहीं पर अपने को रखने से कैसे बच सकते हैं।

आज की राजनीति के कुछ लोग स्पेंसर की उक्ति से अपने को बचाव भी करते पाए जाते हैं और अपने कार्यों को जनता के बीच अनुमोदन कराने की ताक में रहते हैं- क्योंकि स्पेंसर कहते हैं कि Nobody can be completely moral until every body is moral किन्तु यह तो अपने द्वारा किए सारे कुकृत्यों पर सहमति बनाने की मात्र थोथी बिडंबना कही जायेगी। टी०एस० इलियॉट ने तो यहाँ तक कह दिया है कि How can one corrupt those who are already corrupted! I can swear that I have never corrupted anybody. In fact, I have never come across an official, innocent enough to be corruptible. वर्तमान भारतीय राजनीति क्या सचमुच में इसी दशा में आ चुकी है? आज राजनीति और नैतिकता में संबंध ढूँढ़ने की बात को जब कोई निरर्थक, बेमानी और अनुचित कहता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि कोई शैतान गीता या कुरान का पाठ करने बैठ गया हो। उन्हें अफसोस होता होगा कि उनके कथ्यों को सत्य मानकर जनता तदनुसार नया व्याकरण क्यों नहीं गढ़ती। लेकिन पटेल ने ए०टी० ब्राउन की भाषा को पढ़ा था कि Be thrilled with the prospect of being honoured and successful. अब भी कोई मंत्री जब कहता हो कि अपने कृत्यों के गौरव से शेष जिंदगी संतोष से गुजार लूँगा, तो निश्चय ही वह नैतिकता से कहीं न कहीं संबंध बनाए हुए है। यहीं पर प्रसिद्ध समाजशास्त्री मेकाइवर याद आ जाते हैं- Morality is not merely a question of laws and conventions but one of purity of mind with actions as its outward manifestation. सरदार तो इस उँचाई पर पहुँच चुके थे जिसे विवेकानन्द ने हमें समझाया था-Go to hell yourself to buy salvation for others. सरदार राजनीति से प्रेम करते थे और प्रेम में तो त्याग करना ही होता है। आज राजनीति वासना के रूप में अंगीकार की जा रही है और वासना में तो प्राप्ति ही लक्ष्य रहता है। नैतिकता और वासना

के बीच दो ध्रुवों की दूरी है। पटेलकालीन भारतीय राजनीति सिद्धांतनिष्ट होती थी, आज की राजनीति में सिद्धान्तों को दुल्लती लगाने में परहेज नहीं किया जाता। यहीं मन्टेरक्यू कहते हैं-The deterioration of a government begins almost always by the decay of its principles. इसे ही तो नैतिक संकट की काली छाया कहेंगे। गाँधी और पटेल ने राजनीति में दर्शन का पुट रखना आवश्यक माना था, वे प्लेटो और मील के विचारों से सहमत थे। प्लेटो मानते थे कि Until philosophers are kings or the kings and princes of this world have the spirit and power of philosophy, and political greatness and wisdom meet in one...cities will never have rest from their evils. जे०एस० मील ने सुख की गुणात्मक व्याख्या की- वे कहते हैं -It is better to be human being dissatisfied than a pig satisfied, and better to be Socrates dissatisfied than a fool satisfied.

आज अनैतिकता की आँधी जनता के विश्वास एवं उनकी प्रजातांत्रिक शक्ति को उड़ा ले गई। ऐसे में वह कहानी याद हो आती है जिसमें अस्पताल में पड़े मरीजों के बार्ड के सामने एक पागल व्यक्ति दवा बिक्रेता बन बैठा है। अंजामें रोगी क्या होगा? आप समझ सकते हैं। अधिकांश लोग आज की राजनीति में उतना पागल भी नहीं हैं कि उन्हें जंजीरों में या पागलखाने में कोई रख छोड़े, वह तो शेक्सपीयर का वैसा व्यक्ति है-Men, Proud man! dressed in a little brief authority plays such fantastic tricks before high heaven as make the Angles weep.

लगभग विगत पाँच वर्षों में नैतिकता की पुनर्वापसी का, आंशिक ही सही, प्रारंभ दीखने लगा है। मूल्यों पर बिना संकट लाए शांति और प्रगति जब आती है, जब निर्धारित एजेंडों को कार्य शैली का आधार बनाया जाता है तो इसे सराहनीय कहना ही होगा। नागरिकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना, सर्व शिक्षा अभियान के उस संविधानिक प्रावधान के सपने को पूरा करना है जिसे संविधान निर्माताओं ने-जिसमें सरदार का भी सपना था, पूरा हुआ है। अंत्योदय योजना से भारत के गरीब तबके में स्वराज की एक किरण अवश्य दीखेगी। राष्ट्रीय जल नीति, चतुर्भुज सड़क योजना, किसानों और कृषि के हित में उठाए गए कदम, एम्स की तर्ज पर देश के अलग-अलग हिस्सों में पाँच अस्पतालों के निर्माण कराने का निर्णय, जहाँ एक ओर इतिहास की लंबित मांगों को पूरा करता है, वहीं दूसरी ओर कुछ खटकनेवाली बातें अभी दूर होनी बाकी है।

जिन कारणों से भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट की काली छाया पटेल के संदर्भ में आज दीखती है, उनमें संभवत: निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं- सरदार संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के साथ गहरा लगाव बनाए हुए थे। उसमें वर्णित कुछ प्रावधानों के साथ न्याय अब भी बाकी है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा 1. सामाजिक व्यवस्था 2. समान नागरिक संहिता, 3. धन का केंद्रीकरण नहीं होने देना, भौतिक संसाधनों के स्वामित्व और नियंत्रण का सामान्य हित में उपयोग, समान न्याय, दूधारू गायों एवं बछड़ों का बध बंद करवाना आदि।

1. **सामाजिक व्यवस्था** के दोषों का निराकरण अब भी बाकी है।

2. समान नागरिक संहिता से शोषितों और उपेक्षितों को न्याय तो मिलेगा ही, राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा। सर्वोच्च न्यायालय ने संदर्भगत सुझावों से इसे और स्पष्ट कर दिया है।

3. कहा गया कि 1947 में उद्योगपतियों की पूँजी 53 करोड़ थी, 1978 आते-आते यह 1200 करोड़ हो गई। उस अनुपात में प्रति व्यक्ति आय की बढ़ोत्तरी निराशाजनक है।

काले धन में बेतहासा बृद्धि हुई है। 1975-76 में 11.678 करोड़ रुपए की हो गई, याने सकल घरेलू उत्पाद का 21 प्रतिशत,। अप्रील, 1986 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि भारतीय अर्थ व्यवस्था में काले धन की राशि 40,000 करोड़ रुपए की हो गई है। वर्तमान समय में एक अनुमान के अनुसार लगभग बजट के समकक्ष होती जा रही है। एक समिति ने काले धन के पाँच छ: क्षेत्रों का उल्लेख भी किया है। इस दिशा में सफलता भी मिल पायेगी या नहीं, भविष्य ही बता पायेगा। सरदार-सा नैतिक बल की तलाश है।

इसी तरह भौतिक संसाधनों के स्वामित्व और नियंत्रण की बात भी है।

4. **समान न्याय**- इसी 30 अक्तूबर, 2003 याने सरदार के पड़नेवाले जन्मदिवस के एक दिन पूर्व केंद्रीय मंत्री जेटली ने कहा कि देश के उच्च न्यायालयों में लंबित मुकदमों की संख्या 33.68.621 है, जिनमें दो वर्षों से अधिक लंबित मुकदमों की संख्या 21.64. 182 है। शीघ्र न्याय निष्पादन के तराजू पर इसे दुखद ही कहना पड़ेगा। निचली अदालत में लंबित मुकदमों की संख्या करोड़ में है। बर्ष 2003 तक लॉ कमीशन ऑफ इन्डिया ने 182 रिपोर्ट दिए हैं। प्रतिवेदनों की अनुशंसाओं पर कार्रवाई करने में सरकार ने बहुत रूचि नहीं ली है। अपराध के अनुपात में सजा दिलाने में पूरी व्यवस्था बहुत कमजोर पड़ रही है।

5. **गो-बध**- कृषि प्रधान देश में इसपर आवश्यक है। गाँधी ने इसका समर्थन किया है। जरा स्थिति पर गौर करें-आजादी के समय स्लौटर घरों की संख्या 300 थी, जो बढ़कर कई हजार हो गई है। अकेले महाराष्ट्र में देवनार स्थित घर में एक आंकडे के अनुसार एक लाख 20 हजार बैल, 80.000 भैंसे, 25 लाख भेड़, बकरे प्रति वर्ष काटे जाते हैं। नीति निर्देशक के अनुपालन में यहाँ भी कुछ करने की आवश्यकता है।

इस तत्वों के अलावे कुछ बातें हैं जहाँ जनता में गलत नैतिक सिग्नल जा रहा है।

1. **चुनाव सुधार** -2. जन-प्रतिनिधियों के स्वैच्छिक फंड का दुरूपयोग 3.निर्वाचन आयोग के साथ ताल-मेल बैठाने का अभाव 4.दल बदल विधेयक की आत्मा का दुरुपयोग 5. संसद के वाद-विवाद के स्तर में चिंतनीय गिरावट 6. सक्षम व्यक्ति का चुनाव के प्रति बढ़ता विकर्षण 7 जन-प्रतिनिधियों द्वारा किए गए घोटालों की लंबी फेहरिश्त का होना 8. सांप्रदायिक, जातीय एवं आपराधिक तत्वों की भूमिका में लगातार बढ़ोतरी जैसे अनेक कारणों से नैतिकता की चर्चा निरर्थक दीखने लगी है।

संपर्क: 'गीतिका', आदित्य नगर, रोड न०2
पो०-केसरीनगर, पटना-24

# सिद्धांत और व्यवहार के बीच बढ़ती दूरी

## सरदार पटेल की 128वीं जयंती पर संगोष्ठी

### विचार कार्यालय, पटना

राजनीति में सामाजिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता नहीं होती क्योंकि वह जाति और धर्म से संचालित होती है। सिद्धांत और व्यवहार के बीच बढ़ती दूरी आज की राजनीति का सबसे बड़ा विरोधाभास है। ये बातें राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से पटना के दारोगा प्र० राय स्थित सरदार पटेल स्मारक भवन में विगत 2 नवंबर को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 128वें जयंती-समारोह के अवसर

पर आयोजित एक विचार संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बिहार एवं राजस्थान के पूर्व महालेखाकार **डी०एन०प्रसाद** ने कहीं। समारोह के मुख्य अतिथि तथा पटना विश्वविद्यालय के पूर्व राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष **प्रो० एल०एन०शर्मा** ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजनीति में रहकर सरदार पटेल ने जिस नैतिकता का परिचय दिया और जिन मूल्य-मर्यादाओं की रक्षा की वह आज की राजनीति में विरले देखने को मिलते हैं।

बी०एन० मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा के प्रतिकुलपति **प्रो० रामदेव प्रसाद** ने विशिष्ट अतिथि के पद से कहा कि सरदार पटेल का जो भव्य व्यक्तित्व है वह उनकी नि:स्वार्थ राष्ट्रभक्ति, त्याग, तपस्या और समरसता की देन का प्रभाव है। उन्होंने कभी भी जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा और क्षेत्र आदि के आधार पर लोकतंत्र की लड़ाई नहीं लड़ी थी। आज ये सारी बातें भारतीय राजनीति में हो रही हैं, जिनके चलते संसद और विधान सभाओं में बाहुबली एवं धनबली के बल पर दलालों एवं अपराधियों का साम्राज्य हो चुका है।

प्रारंभ में '**विचार दृष्टि**' के संपादक सिद्धेश्वर ने संगोष्ठी के विषय-'**भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट की काली छाया और सरदार पटेल**' का प्रवर्तन करने के क्रम में कहा कि 20वीं सदी में गाँधी और पटेल दो ऐसे व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने अपनी शुचिता, सात्विकता तथा निर्मलता जैसे विरल गुणों के बल पर भारतीय राजनीति में अपनी अमिट छाप छोड़ दी, किंतु आज की तिकड़मी राजनीति में अधिकतर नेता सिद्धांत, नैतिकता, मूल्य व संस्कार को तिलांजलि देते जा रहे हैं जिसके चलते भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट की काली छाया पड़ती जा रही है। तिकड़मी राजनीति व्यक्ति, समाज और देश के लिए घातक तब होती है जब वह लोकामिमुखी न होकर सत्ताभिमुखी हो जाती है।

मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **प्रो० साधु शरण** ने संगोष्ठी के उपर्युक्त निर्धारित विषय पर एक आलेख का पाठ करते हुए कहा कि राजनीति के लिए नैतिकता को गाँधी और पटेल ने आवश्यक माना था क्योंकि राजनीति से उन्हें प्रेम था, किंतु आज राजनीति वासना के रूप में अंगीकार की जा रही है और वासना में प्राप्ति ही लक्ष्य रहता है। इस अवसर पर चिंतक **संजय सरस्वती** के अतिरिक्त जिला पार्षद **डॉ० कुमार इन्द्रदेव,** शंकर शरण, उदय नारायण चौधरी आदि वक्ताओं ने सरदार पटेल के प्रति अपने सम्मान व्यक्त करने के क्रम में कहा कि आज के नेताओं में देश, समाज तथा नागरिक के प्रति जिम्मेदारी के भाव नहीं के बराबर है। प्रारंभ में मंच की बिहार इकाई के उपाध्यक्ष डॉ० एस०एफ०रब ने अतिथियों का स्वागत तथा संयुक्त सचिव शिव कुमार सिंह ने आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी का संचालन किया मंच के महासचिव मनोज कुमार ने।

मनोज कुमार, पटना से।

# विकास के लिए युवाओं की जड़ता पर प्रहार जरूरी

## मौलाना अबुल कलाम आजाद याद किए गए

### विचार कार्यालय, पटना

भारत सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की 113वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई की ओर से पटना के भूतनाथ रोड स्थित शिक्षाविद् रामजी प्र० सिन्हा के निवास-प्रांगण में 'वर्तमान परिवेश मैं हमारा सामाजिक एवं राजनीतिक दायित्व' विषय पर एक जीवंत परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता करते हुए कर्नल एस०एस० राय ने भ्रष्टाचार को देश की सबसे बड़ी समस्या बताया, जिसका निदान यदि शीघ्र नहीं निकाला गया तो देश का विकास अवरूद्ध हो जाएगा और गरीबी मिटने का नाम नहीं लेगी।

परिचर्चा के विषय को प्रस्तुत करते हुए मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने कहा कि कोई भी देश और समाज अपने नागरिकों से अच्छा या बुरा बनता है। देश के नागरिकों का समाज की बेहतरी में उतना ही योगदान है जितना सीमा पर सैनिकों का। उन्होंने पुन: कहा कि सच्चा देशभक्त वही है जो अपने दायित्वों का निर्वहन सही ढंग से करता है, सामाजिक सरोकारों से जुड़ता है, किंतु दुखद स्थिति यह है कि आज लोगों ने आत्मकेंद्रित होकर समाज व देश को अपने हाल पर छोड़ दिया है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो० लाल नारायण शर्मा ने मन बदलने के लिए लोगों में विश्वास जगाने पर बल दिया। उन्होंने मौलाना आजाद के योगदान की चर्चा करते हुए सरकारी बजट में शिक्षा पर विशेष राशि आवंटित किए जाने की पूरजोर वकालत की।

इस परिचर्चा में सी.आर.पी. के पूर्व आई.जी.एन. के. तिवारी, रघुपति, अभि. के.के. सिंह राजभवन सिंह, केशो सिंह, धनंजय श्रोत्रिय, सत्यानारायण सिन्हा ने भाग लेकर इसे जीवंत बनाया। परिचर्चा के अतिथियों व वक्ताओं का अभिनंदन किया आकाशवाणी, पटना के पूर्व केंद्र निदेशक बाँके नन्दन प्र० सिन्हा ने तथा शिक्षाविद् रामजी प्र० सिन्हा ने आभार व्यक्त किया। अंत में मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने रामजी बाबू तथा उनकी अर्थशास्त्री पत्नी प्रो० शकुंतला सिन्हा को इस आयोजन में तहेदिल से सहयोग प्रदान करने के लिए मंच की ओर से कृतज्ञता प्रकट की।

शिव कुमार सिंह, पटना से

## राजनेताओं के हस्तक्षेप के चलते प्रतिभा कगार पर

# देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भावभीनी श्रद्धांजलि

### विचार कार्यालय, पटना

राजनेताओं के हस्तक्षेप से प्रतिभा आज समाप्त होती जा रही है। यहाँ तक कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों की नियुक्ति में भी उनके हस्तक्षेप की वजह से प्रतिभाएं दर-किनार की जाती हैं। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रतिभा और उनके मेधा को दुनिया लोहा मानती है लेकिन वैसे प्रतिभाशाली महापुरुष को भी अपेक्षित सम्मान से वंचित रहना पड़ रहा है। ये उद्‌गार हैं भारतीय सेना के पूर्व अधिकारी कर्नल एस. एस. राय के, जिसे उन्होंने विगत 3 दिसंबर को राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार एवं राजेन्द्र साहित्य परिषद, बिहार के संयुक्त तत्त्वावधान में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के 119 वें जयंती-समारोह के अवसर पर आयोजित एक विचार संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए।

पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में आयोजित पटना पुस्तक मेला के भीष्म साहनी मुक्ताकाश मंच पर संपन्न विचार संगोष्ठी में 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने निर्धारित विषय **"संकट में पुस्तक और प्रतिभाः संदर्भ देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद"** का प्रवर्तन करते हुए कहा कि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि एक ओर जहाँ टी.वी., इंटरनेट, केबल जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की वजह से पुस्तक के पठन-पाठन में कमी आई है, वहीं दूसरी ओर पुस्तकों की कीमत उसकी लागत मूल्य से कई गुना अधिक होने के कारण उसकी बिक्री लगातार घटती जा रही है। व्यक्तिगत खरीद तो लगभग खत्म हो चली है। हाँ, सरकारी खरीद पर अधिकांश पुस्तक व्यवसायी जिंदा हैं जिनकी अलग समस्याएं हैं। अन्य क्षेत्रों की भांति यहाँ भी बाबुओं से लेकर बड़ों तक बिना हाथ गर्म किए पुस्तकों की खरीद नहीं की जाती जिसके परिणामस्वरूप घटिया पुस्तकें अधिक कीमत पर प्रकाशित की जा रही हैं।

जहाँ तक प्रतिभा पर छाए संकट का सवाल है, सिद्धेश्वर ने कहा कि भारतीय समाज के प्रायः सभी क्षेत्रों में, चाहे साहित्य हो या राजनीति बुरे एवं आपराधिक प्रवृति के लोगों को मंहिमामंडित और सम्मानित किया जाता रहेगा, सामाजिक जीवन में पद और पैसे की

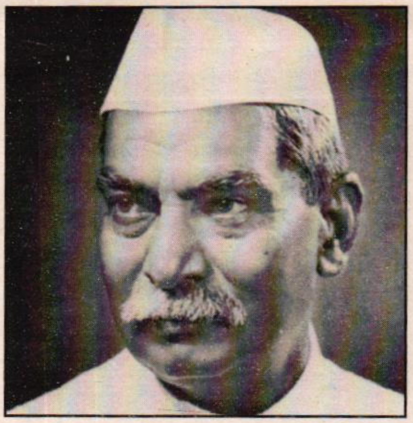

प्रधानता दी जाएगी, सक्षम को दरकिनार कर अक्षम लोगों को हर क्षेत्र में बैठाया जाएगा प्रतिभाएं तो संकट में रहेंगी ही। भारतीय राजनीति और प्रशासनिक व्यवस्था की स्थिति आज यह है कि इसमें चाटुकारिता और गणेश परिक्रमा को ही जमकर स्थान मिला है और इसमें योग्यता, दक्षता, कर्मठता, निष्ठा और ईमानदारी के लिए कोई स्थान नहीं बचा है। विकसित देशों के अंधानुकरण में आज भारतीय समाज में सत्ता एवं संपत्ति की लिप्सा बढ़ी है जिसके चलते प्रतिभाएँ कुंठित हुई हैं।

मंच की बिहार शाखा के अध्यक्ष जियालाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात को अस्वीकार किया कि पुस्तकों के पठन-पाठन में कमी आई है। उन्होंने बिहार का हवाला देते हुए कहा कि यहाँ पुस्तकें काफी संख्या में खरीदी जाती हैं। इस अवसर पर राजेन्द्र साहित्य परिषद के अध्यक्ष डॉ. शिववंश पाण्डेय ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि घटिया और सस्ती सामग्रियों के चलते भी पुस्तकों की खरीद में कमी आई है। प्रारंभ में मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. साधुशरण ने अतिथियों एवं श्रोताओं के स्वागत के क्रम में पुस्तक एवं प्रतिभा पर छाए संकट के लिए क्षोभ व्यक्त किया।

दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्‌घाटन करते हुए बिहार सरकार के पूर्व मंत्री उमेश प्र. वर्मा ने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। गाँधी संग्रहालय के सचिव डॉ. रजी अहमद ने देशरत्न के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनकी सदाशयता, बौद्धिकता एवं सादगी की सराहना की। परिषद के महासचिव बलभद्र कल्याण ने मंच संचालन तथा मंच के महासचिव मनोज कुमार ने आभार व्यक्त किया।

**-मनोज कुमार, पटना से**

## दलबदल पर लगाम

पिछले दिनों चुनाव सुधार विधेयक को लोक सभा की मंजूरी मिलने के बाद निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की आयाराम-गयाराम संस्कृति पर अब रोक लग जाऐगी। निर्वाचित जनप्रतिनिधि के दल बदलने पर उसे अपने सदस्यता से हाथ धोना पड़ेगा। चंद चाँदी के टुकड़ों और मंत्री पद के लालच में जनप्रतिनिधियों बिकने का गलत संदेश मतदातओं में जाता रहा है। इससे लोकतंत्र की आस्था पर सवालिया निशान खड़ा हो गया था। उम्मीद की जाती है कि इस विधेयक पारित होने से राजनीतिक दलों के भीतर अनुशासन की प्रवृति जोर पकड़ेगी। इस विधेयक के सकारात्मक पक्ष से इनकार नहीं किया जा सकता, फिर भी निर्दलीय प्रतिनिधियों के दल बदल की सदस्यता खत्म किए जाने के बारे में को प्रावधान नहीं किया गया है। इस विधेयक के एक अन्य प्रावधान के तहत अब मंत्रिमंडल में छोटे राज्यों में अधिकतम 12 सदस्य और बड़े राज्यों में 15 प्रतिशत की सीमा तक ही मंत्री बनाए जा सकेंगे।

## दुःख का अनुभव नासमझी के कारण

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

# सूरत में संयुक्त अणुव्रत अधिवेशन संपन्न

### विचार कार्यालय, अहमदाबाद

मनुष्य अपनी नासमझी के कारण दुःख का अनुभव करता है। दुःख का स्रोत है मोह, जिसके त्याग से तृष्णा नहीं आती है। इसी तृष्णा के कारण भागमभाग और लोभ होता है। मोह ही चेतना को मुर्छित कर देता है और

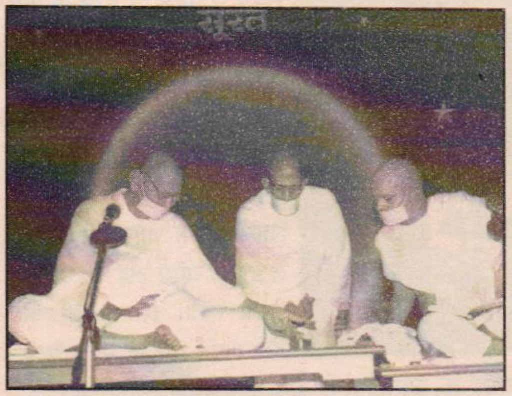

मुर्छित चेतना सच्चाई को खतम कर देती है और यही दुख पैदा करती है। दुःख-सुख मनोभावना से जुड़ा हुआ है। यदि हमने अपनी शक्ति जागरण को समझ लिया तो दुःख से मुक्ति पा सकते हैं। धर्म की अवधारणा को आज आमजन तक पहुँचाना होगा। ये उद्‌गार हैं अणुव्रत शास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के, जिसे उन्होंने सूरत (गुजरात) के तेरापंथ भवन के पास बने विशाल सभागार में 27 सितंबर को अणुव्रत महासमिति, अ०भा०अणुव्रत न्यास एवं अणुव्रत विश्वभारती के संयुक्त अणुव्रत अधिवेशन में अणुव्रत के छठे दशक के उद्‌घाटन सत्र में व्यक्त किए। विगत 27 सितंबर से 30 सितंबर 2003 तक आयोजित इस अधिवेशन में देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर अणुव्रत के संदेश को आत्मसात किया।

उद्‌घाटन सत्र का संचालन 'अणुव्रत' मासिक के संपादक डॉ० महेन्द्र कर्णावट ने किया। 'नयी दृष्टि हो, नयी-सृष्टि हो अणुव्रतों के द्वारा, बदले युग की धारा........' से प्रारंभ नीरज कुमार के मंगलाचरण के बाद महासमिति के महासचिव विजय राज जी सुराणा ने अणुव्रत का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उसके पूर्व महासमिति के अध्यक्ष डॉ० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' ने कार्यक्रम प्रस्तुत करने के क्रम में आतंकवादियों पर भी अणुव्रत के प्रभाव की चर्चा की। अधिवेशन के मुख्य अतिथि न्यायाधीश धीरू भाई देसाई ने गुजराती में अपने विचार रखते हुए कहा कि आज हम पतन की ओर जा रहे हैं, कोई एक दूसरे पर विश्वास नही करता, यहाँ तक कि जज पर भी विश्वास नहीं रहा। भ्रष्टाचार के इस दावानल को बुझाने में भगवान महावीर के आदर्शों पर चलना होगा। अधिवेशन को संबोधित करते हुए युवाचार्य श्री महाश्रमण ने अपराधों की विभिन्न प्रवृतियों पर प्रकाश डाला।

28 सितंबर को भीकमचंद नखत की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने समाज के कल्याण के लिए नैतिकता और ईमानदारी पर बल देते हुए इसे स्वीकार करने की आवश्यकता जताई। इस अवसर पर मुनिश्री सुखलाल ने अपने संबोधन में देश व दुनिया की उलझनों पर प्रकाश डाला। अंत में यशपाल, सुरेशजी कोठारी, मदन लाल जी कापड़िया, राजेन्द्र सेठिया, दौलत सिंह भंडारी को सीताशरण की स्मृति में अणुव्रत सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया।

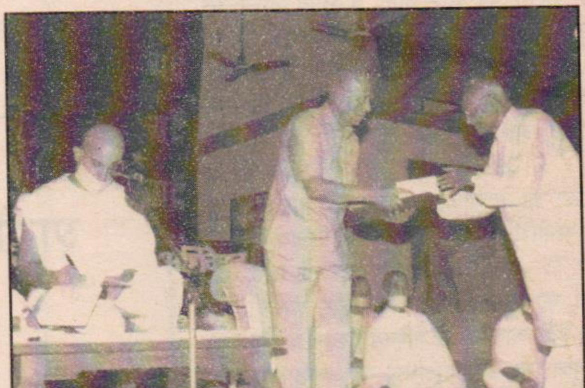

29 सितंबर को प्रथम सत्र के अणुव्रत लेखक सम्मेलन को युवाचार्य श्री महाश्रमण ने संबोधित करते हुए कहा कि मनोबल की कमी के कारण आदमी कष्टों को झेलने से डरता है। जिस व्यक्ति में तेज है वही भय का सामना कर सकता है। इसकी अध्यक्षता डॉ० अंबाशंकर जी नागर ने की। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम हो सकता है लेखक। आचार्य महापज्ञ ने साहित्यकारों को जन-कल्याण के लिए काम करने का आह्वान किया। डॉ० आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने संयोजन किया।

दोपहरकालीन सत्र के अणुव्रत लेखक संगोष्ठी को मुनिश्री सुखलाल ने संबोधित करते हुए समाज में चेतना जाग्रत करने तथा उसे सही दिशा प्रदान करने में लेखकों की भूमिका को रेखांकित किया, उन्होंने कहा कि आतंकवाद और हिंसक प्रवृतियों से त्रस्त इस दुनिया में अहिंसक समाज की स्थापना में संवेदनशील लोगों की अहम भूमिका निभानी होगी। चंद मल नाहटा, सरोज कुमार वर्मा, चन्देश्वर प्र० सिंह तथा मोहन लाल जैन ने अहिंसक समाज की संरचना में लेखकों की महती भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वस्थ एवं अहिंसक समाज के बिना सबल राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। संगोष्ठी में विचार रखते हुए अणुव्रत लेखक मंच की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव ने कहा कि दुनिया के सामने आज मार्गदर्शन का संकट है

और यह संकट पूरी मानवता का है क्योंकि राजनीति, धर्म, समाज इन सभी की कल्याणकारी स्थापनाओं में आज जैसे दीमक लगकर उन्हें खोखला कर रही है। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज की मानसिक उर्जा अथवा प्रज्ञाशक्ति के प्रतीक चिंतक, विचारक, दार्शनिक एवं लेखक अपनी कलम की धार से जन-जन के हृदय में अहिंसा का अलग जगा सकते हैं तथा बाल साहित्य की रचना कर भावी पीढ़ी को अच्छे संस्कार दे सकते हैं और समाज के भविष्य को अहिंसक बनाकर अपने सकारात्मक योगदान से मानवता की सेवा कर सकते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज जिस भयावह दौर से भारत सहित पूरा विश्व गुजर रहा है उसमें न केवल विकासशील देश बल्कि विकसित देशों में अमेरिका जैसा सर्वशक्तिशाली देश भी आतंकवाद एवं हिंसा की अनवरत घटनाओं को चुनौती के रूप में स्वीकार कर अहिंसक समाज की संरचना के लिए लालायित है। सिद्धेश्वर ने पुन: कहा कि आज जिस प्रकार राजनीति सहित समाज के सभी क्षेत्रों में नैतिकता के संकट के बादल मंडरा रहे हैं और हिंसक प्रवृतियाँ उफान पर हैं उसमें लेखकों को अपनी तटस्थता त्याग कर लोगों को अहिंसा की चेतना जगाने हेतु अपनी लेखनी चलानी होगी, यही वक्त का तकाजा है।

संगोष्ठी के दूसरे चरण में आयोजित सर्वभाषा कवि सम्मेलन में कविवर डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव, सिद्धेश्वर, डॉ० धर्मेन्द्रनाथ, सतीश कुमार 'साथी', वीणा जैन, मगन लाल जैन, केशरी चंद दुराड़ आदि ने अपने काव्य-रस से सुधि अणुव्रतियों को सराबोर किया। संगोष्ठी का संचालन जहाँ सत्य प्रकाश ने किया वहीं डॉ० धर्मेन्द्रनाथ अमन ने अतिथियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

अधिवेशन के अंतिम दिन यानी 30 सितंबर को आयोजित अणुव्रत समवाय सम्मेलन को संबोधित करते हुए बाल विजय जी ने कहा कि दृश्य और अदृश्य दोनों तरह की हिंसा को समाप्त करने के लिए व्यक्ति की सोच और व्यवस्था में परिवर्तन लाने की जरूरत है। युवाचार्य श्री महाश्रमण के अनुसार गरीबी, बेकारी के चलते नहीं, चाहते हुए भी लाचार हो लोग हिंसा का रास्ता अपना लेते हैं। आदमी की कुप्रवृतियाँ हिंसा करा देती हैं। हिंसा के कारणों को जानकर उसका निराकरण यदि किया जाए तो हिंसा को समाप्त किया जा सकता है।

# जीवन की सार्थकता तलाशती 'शब्द-शब्द संवाद' पुस्तक का लोकार्पण

विगत 26 नवंबर को **राष्ट्रीय विचार मंच** के द्वारा पटना के आई एम ए हॉल में आयोजित कवि कमला प्रसाद की सद्य: प्रकाशित पुस्तक के लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर ने कहा कि इस पुस्तक में जीवन की सार्थकता की तलाश है। प्रसाद के गद्य संग्रह-**'शब्द-शब्द संवाद'** के संदर्भ में डॉ. दिवाकर ने पुन: कहा कि दरअसल गद्य ही कवियों की कसौटी है। यही वजह है कि कवियों ने हिंदी में सर्वोत्तम गद्य लिखा है।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए पद्मश्री डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने कहा कि श्रेष्ठ निबंधों के संग्रह की इस पुस्तक की भाषा बेहतर है। आखिर तभी तो कवि को गद्य का निकष कहा गया है। अपने अध्यक्षीय भाषण में सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. खगेन्द्र ठाकुर ने कहा कि मौजूदा

समय में मनुष्य में संवेदना और विवेक का अभाव है जिसकी वजह से मनुष्यता और रचनाशीलता का अभाव खटकता है, जबकि समाज के प्रति लेखकों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और इसे अपने लेखन के जरिए उन्हें यह साबित करना होगा। इस अवसर पर डॉ. बजरंग वर्मा ने भी साहित्य को समाज से जोड़ने पर बल दिया। समारोह के उद्‌घाटन के क्रम में वयोवृद्ध साहित्यकार प्रो. रामबुझावन सिंह ने ललित निबंध की श्रृंखला में पुस्तक के कई आलेख को श्रेष्ठ करार दिया। प्रारंभ में सुप्रसिद्ध रचनाकार कवि सत्यानारायण ने मान्य अतिथियों एवं उपस्थिति सुधि साहित्यकारों का स्वागत तथा कमला प्रसाद ने पुस्तक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। समारोह के प्रायोजक चन्द्रभूषण कुमार ने आभार व्यक्त किया तथा समारोह का संचालन किया सिद्धेश्वर ने।

**दीपक कुमार, पटना से**

5 सितंबर, 2003 से प्रारंभ

शहीद रामानंद उच्च विद्यालय

गवसपुर

योग्य एवं सक्षम शिक्षकों के द्वारा

उत्तम शिक्षा

नामांकन के लिए संपर्क करें

प्रधानाध्यापक

शहीद रामानन्द उच्च विद्यालय

गवसपुर, पत्रा०-जयतिया, जिला-पटना

# कुरान को समझ कर पढ़ने की हिदायत

## 'इस्लाम, शिक्षा और वर्तमान युग की समस्या' पर संगोष्ठी

प्रस्तुतिः शाहिद जमील

इमाम हुसैन फाऊंडेशन , दिल्ली और ईरान कल्चर हाऊस के संयुक्त तत्त्वावधान में जश्न ईद मेराजुनबी व मिलाद बस्त रसूल हज़रत इमाम हुसैन की मुनासबत से *''इस्लाम, शिक्षाऔरवर्तमानयुगकीसमस्या''* पर एक संगोष्ठी का आयोजन जामिया मिलिया इस्लामिया के डॉ॰ अंसारी ओडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ईरानी क़ारी नासिर शरीफ़ी सादात के क़ुरान-पाठ से हुआ। श्री हसनैन मोहम्मद जदन ने नात शरीफ़ पेश की। सुरजीत सिंह लांबा ने हज़रत मोहम्मद सलम के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हज़रत मोहम्मद अरबी सिर्फ मुस्लमानों के लिए नहीं थे, उन्हें तो खुदा ने सब के लिए, पूरी दुनिया की रहमत बना कर भेजा। ज़रूरत इस बात की है कि हम आज उनके व्यक्तित्व से शिक्षा हासिल करें। मुख्य अतिथि, बालमुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष, स्वामी अग्निवेष ने कहा कि हज़रत ईमाम हुसैन एक ऐसे मिसाली व्यक्तित्व का नाम है, जिससे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अहिंसा की सीख ली। मुस्लिम पर्सनल बोर्ड के उपाध्यक्ष, डॉ॰ सैयद कल्ब सादिक़ ने इस्लाम में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कितने दुखः की बात है कि जिस इस्लाम ने तालीम हासिल करने को ख़ास अहमियत दी है उसके माननेवाले के पास अनावश्यक कार्यों के लिए वक्त है मगर तालीम के लिए नहीं है, जबकि ज़रूरत इस बात की है कि हम मदारिस की तालीम के साथ आज की नवीन शिक्षा की तरफ भी ध्यान दें। हजरत हुसैन द्वारा दी गई एक ऐसी अज़ीम क़ुर्बानी है जो आज भी हमारे लिए मार्गदर्शक है। संगोष्ठी के अध्यक्ष मौलाना अब्दुल करीम पारिख ने कुरान की शिक्षा और वर्तमान युग की समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कुरान दुनिया की सभी समस्याओं का एक मात्र निदान है। उन्होंने इस बात पर दुखः व्यक्त किया कि मुसलमान सिर्फ़ क़ुरान पढ़ता है, इसके संवादों को समझने की कोशिश नहीं करता। अंत में इमाम हुसैन फाऊंडेशन के महासचिव अली इमाम ज़ेदी ने अतिथियों एवं उपस्थित श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया और फ़ाऊंडेशन का लक्ष्य व्यक्त करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य इस्लामी शिक्षा का विकास, मुसलमानों के बीच एकता और तमाम हिन्दुस्तानियों के बीच मेल-मिलाप है। इस अवसर पर जामिया मिलिया इस्लामिया के वाईस चांसलर डॉ॰ सैयद शाह मेहदी, शिया जामा मस्जिद, दिल्ली के इमाम मौलाना सैयद अली नक़वी, इरान के प्रसिद्ध आलिमे दीन मौलाना रज़ा रजब नज़ाद और सांसद अब्दुल रसूल शाहीन के अतिरिक्त 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकगण और विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद थे। संगोष्ठी का संचालन प्रो॰ ऐनुल हसन आबदी ने किया।

इस आयोजन के दूसरे चरण में एक जीवंत मुशायरा का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें दिल्ली के चर्चित शायरों, कवियों में नात शरीफ, जदन अमरोही, शकील शमसी, नौशा अमरोही, अमरार कृतपुरी अशदरजा, अज़ीम अमरोही, ऐनुल हसन आबदी, बेबाक अमरोही, डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ अमन तथा हयात लखनवी का नाम उल्लेखनीय है। कार्यक्रम का संचालन जवाहर लाल विश्वविद्यालय के प्रो॰ ऐनूल हसन आबदी ने किया।

# सद्दाम की गिरफ्तारी

प्रस्तुतिः प्राणेन्द्र कुमार सिंह

अमेरिका द्वारा इराक पर विजय की घोषणा के तकरीबन साढ़े सात महीने के बाद इराक के अपदस्थ राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन

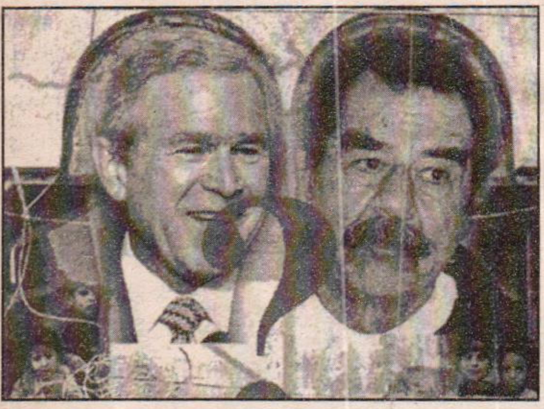

को तिकरित में गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी अमेरीकी सेना की बड़ी सफलता मानी गयी, खासकर इस लिहाज से कि जब इराकी हमलों ने न केवल अमेरीकी सेना का मनोबल गिरा दिया था बल्कि अमेरीकी सैनिकों के लगातार मारे जाने से लेकर अमेरिका में जार्ज बुश के खिलाफ माहौल बनता जा रहा था। ऐसे में सद्दाम हुसैन की गिरफ्तारी ने बुश को काफी राहत पहुँचायी।

सद्दाम की गिरफ्तारी का ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, पाकिस्तान, इटली, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, इंडोनेशिया, जार्डन सहित दुनिया के अनेक देशों में स्वागत हुआ है, किंतु इराक पर अमेरिकी कब्जे के बाद इराक की जनता को कितनी राहत मिल पायी है यह भी तो सारी दुनिया जान चुकी है। आज इराकी जनता न केवल कानून-व्यवस्था की जर्जर हालत से परेशान है बल्कि वह जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित जीवन जीने को विवश है। बहरहाल इतना जरूर है कि सद्दाम हुसैन की गिरफ्तारी ने अमेरीकी प्रशासन को बड़े संकट से उबार लिया है। अब इराकी प्रतिरोध का वह तेवर नहीं रह जाएगा जिसने अमेरिकी सैनिकों का चैन तक छीन लिया था और जार्ज बुश के चेहरे पर तनाव की लकीरें उभर आई थीं, किंतु यह सच है कि सद्दाम की गिरफ्तारी के बाद जिस तरह यह स्पष्ट नहीं है कि उनका भविष्य क्या होगा उसी तरह यह भी साफ नहीं है कि इराक का भविष्य क्या होगा?

ऐसा भी अनुमान लगाया जा रहा है कि जेल में पड़े सद्दाम गड्ढ़े में छुपे सद्दाम से अधिक बड़ा सिरदर्द सिद्ध हो सकते हैं, क्योंकि इराक के पुनर्निमाण का मुद्दा अब नेपथ्य में चला जाएगा और सद्दाम का मुद्दा प्रतिदिन सुर्खियों में रहेगा। जबतक सद्दाम फोकस में रहेंगे, अमेरिका पर सवाल उठता रहेगा। जिन अपराधों के लिए सद्दाम पर मुकदमा चलेगा, वैसे अमेरिका भी करता रहा है। यह भी सच है कि इराक पर अमेरीकी हमला तो सर्वनाशी हथियारों की ओट में किया गया था। इसलिए सद्दाम गड्ढ़े में रहें, जेल में रहें, कठघरे में रहें या फाँसी के फंदे पर रहें वे अमेरिका के गले के फाँस बन चुके हैं। अमेरिका का अवचेतन मन अपने ही अपराधबोध से ग्रसित होकर आतंकित है। वह अपने सशंकित मस्तिष्क में कल्पित व संभावित दुष्परिणामों से भयातुर है। दरअसल वह विश्व की संपूर्ण संपदा को बलात अधिग्रहित कर उसे अपनी तिजोरी में कैद करना चाहता है। यही नहीं वह दुनियाँ की संपूर्ण सैन्य शक्ति को बटोरकर अपनी मुट्ठी में कसकर बंद करने का दुराग्रह कर रहा है ताकि उसके बाहुबल को कोई भी कभी भी चुनौती देने का साहस न जुटा सके। स्वार्थपरता की पराकाष्ठा पर पहुँचे अमेरिका की वर्तमान कार्रवाईयाँ स्वविनाश के आमंत्रण से अधिक कुछ नहीं। उसकी हालत ठीक उस रेशम के कीड़े की तरह है जो अपनी तथाकथित सुरक्षा तथा काल्पनिक आनंद के लिए अहर्निश श्रम कर अपने लिए कोया (ककून) बुनता है, पर कालचक्र के दुर्योग के चलते उसका वही ककून उसकी मौत का कारण बन जाता है।

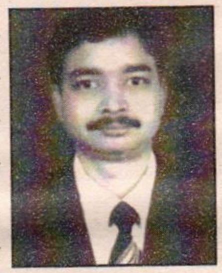

बहरहाल अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश ने सद्दाम को उत्पीड़क, कातिल, और जघन्य बताते हुए उसे मौत की सजा से कम का हकदार नहीं बताया है, लेकिन उनका कहना है कि यह इराकी जनता ही तय करेगी। उधर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान सद्दाम के मौत की सजा के खिलाफ हैं। आज जब अमेरिका समेत पूरी दुनिया मौत की सजा को लेकर मानवाधिकार संगठन आवाज उठा रहें हैं क्या जार्ज बुश यह सजा सद्दाम को दिला पाएँगे?

एमनेस्टी इंटरनेशनल की प्रवक्ता निकोल चोरी सोचती हैं कि सद्दाम को मौत की सजा दने से क्या वे लोग हमें मिल जाएँगे जो मारे जा चुके हैं। उनके अनुसार इराकी पहले ही मौत, फाँसी और जघन्य मानवाधिकार उल्लंघनों के परिणाम भुगत चुके हैं। सद्दाम का मुकदमा यह तय करने वाला है कि इराक का भविष्य कैसा हो । अगर आनेवाले दिनों में अमेरिका ने सद्दाम के साथ इंसाफ की प्रक्रिया को ड्रामा बनाने की कोशिश की, तो उससे भी आतंक का साया और विकराल हो जाएगा।

संपर्क: बी.278/279, नेहरू विहार,
तिमारपुर दिल्ली-54

# वैचारिक क्रांति की संभावनाएँ तलाशती 'तलाश'

प्रस्तुतिः मनोज कुमार

आज देश जिस संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और भारतीय समाज का प्रत्येक क्षेत्र चाहे वह राजनीतिक हो या सामाजिक, साहित्यिक हो या सांस्कृतिक जिस प्रकार विषाक्त होता जा रहा है उससे उबारने की जिम्मेदारी समाज के सजग नागरिकों को लेनी होगी, यह वक्त का तकाजा है। कारण कि जिस लोकतंत्र में हम जी रहे हैं उसमें देश के प्रति संवैधानिक संस्थाओं, राजनीतिक दलों और प्रशासनिक तंत्रों से कहीं अधिक दायित्व होता है देश की जनता का, जो प्रजातांत्रिक पद्धति के तहत सर्वोपरि होती है, किंतु आजादी हासिल करने के बाद वह जैसे सो गई है या यों कहिए कि सुला दी गई है, उसमें जड़ता ला दी गई है। सजग एवं संवेदनशील नागरिकों, खासतौर पर प्रबुद्धजनों का राष्ट्रीय कर्तव्य सो रही जनता को जगाना, उसकी जड़ता को समाप्त करना, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन या व्यवस्था परिवर्तन उसी के जगने पर संभव है। इतिहास इसका साक्षी है।

जनता को जगाने और उसमें चेतना लाने का काम कठिन है पर असंभव नहीं। इस काम को वैचारिक क्रांति के जरिए साकार किया जा सकता है, क्योंकि आज लोगों की सोच में जो खोट और विचारों में जो कुप्रवृतियाँ आ गई हैं उससे उनके आचार-व्यवहार बुरी तरह प्रभावित हैं। वैचारिक क्रांति के द्वारा ही उनमें परिवर्तन लाया जा सकता है, असंवेदनशील लोगों के जनमानस को झकझोरा जा सकता है।

राष्ट्रीय चेतना का वैचारिक '**राष्ट्रीय विचार मंच**' और इसकी वैचारिक पत्रिका '**विचार दृष्टि**' वैचारिक क्रांति लाने के लिए 'पहरुए' की खोज में पिछले कई वर्षों से अनवरत प्रयासरत है। जी हाँ, जिस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में पहरुए का दल स्वयं जगकर और 'जागते रहो' कहकर रात भर ग्रामवासियों को जागे रहने की चेतावनी देता है ताकि उनके घर में कोई सेंध लगाने का साहस न कर सके, ठीक उसी प्रकार आज हमारे राष्ट्र और समाज पर मंडराते खतरे से भी यहाँ की जनता को सावधान करने के लिए उन्हें जगाते रहने की जरूरत है।

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मंच सरीखे कई अन्य संगठनों के साथ-साथ सामूहिक प्रयास के तहत कदम से कदम मिलाते हुए पटना के एक सुपरिचित हड्डी एवं रीढ़ रोग विशेषज्ञ डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा की अगुआई में '**तलाश**' संस्था ने वैचारिक क्रांति की संभावनाओं की तलाश के लिए पहल किया है। इस पहल में नगर के प्रायः सभी क्षेत्रों के श्री प्रह्लाद राय गोयल, प्रो०(डॉ०) सुरेश प्र० सिंह, श्री अशोक बिहारी लाल, डॉ० राजेश्वर जिज्ञासु, ई० रामकृष्ण साहु, श्री रामनारायण राव, श्रीमती शोभा सिन्हा, श्री अजीत कुमार सिन्हा, श्री रवीन्द्र जी तथा श्रीमती रेखा मोदी सरीखे सामाजिक सरोकारों से जुड़े अनेक हस्ताक्षरों का रचनात्मक सहयोग प्राप्त है। इन सभी सजग नागरिकों के अपेक्षित सहयोग से 'तलाश' संस्था इस स्वतंत्र राष्ट्र के लोगों का जीवन स्तर उत्तरोत्तर बढ़ाने हेतु भावी पीढ़ी को एक वांछनीय सामाजिक व्यवस्था प्रदान करने में अवश्य सक्षम होगी तथा बुद्धिजीवी, शासक एवं सामान्य जन में वैचारिक शुद्धता एवं समाज के प्रति प्रतिबद्धता उत्पन्न कर राष्ट्र के प्रति उनकी कर्तव्य भावना जाग्रत करने में सहायक सिद्ध होगी, जो एक विकासशील चेतना की जैविक एवं प्राकृतिक आवश्यकता है।

मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा दिल्ली से प्रकाशित '**विचार दृष्टि**' के संपादक सिद्धेश्वर जी को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में '**तलाश**' की पिछली दो बैठकों - पहली पटना के राजेन्द्रनगर पुल के सटे पूरब स्थित **पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल** के प्रांगण तथा दूसरी एस०पी० वर्मा रोड के सरस्वती एपार्टमेंट स्थित **प्रहलाद राय गोयल के निवास** में सुधिजनों द्वारा देश व समाज के मौजूदा परिवेश पर किए गए विचार-विमर्श (Deliberation) में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिससे प्रोत्साहन के साथ-साथ उन्हें प्रकाश भी मिला, क्योंकि एक मन के लोगों के साथ बैठने-बैठाने तथा ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा कर आगे की दिशा तय करने में उन्हें भी प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसमें तनीक संदेह नहीं कि यदि पूरे देश को दिशा देने की चिनगारी फूटेगी तो पुनः इसका श्रेय पाटलीपुत्र की इस पावन धरती को ही जाएगा, ऐसा सिद्धेश्वर जी का विश्वास है। इसलिए इस दिशा में 'तलाश' के द्वारा किए जा रहे प्रयास को गति प्रदान करने में वे कोई कोर-कसर नहीं उठा रखेंगे, यही आश्वासन उन्होंने 'तलाश' के कर्ता-धर्ता को दे रखा है, क्योंकि यह तो उनकी गरिमा और कार्यकलापों के अनुरूप भी है। इस ख्याल से इसकी गतिविधियों में अपने को शामिल कर वे गर्व का अनुभव करेंगे। वैसे भी उनका मानना है कि जो कोई व्यवस्था परिवर्तन या सामाजिक परिवर्तन के लिए मशॉल लेकर निकलता हो, हमारा फर्ज है कि उस मशॉल को जलाए रखने में हम साथ दें।

इस संदर्भ में एक और बात का उल्लेख करना यहाँ जाजिमी होगा कि बीमारी की जड़ें राजनीति एवं समाज में इतनी पैठ बना ली हैं कि उसके जहर उनके रग-रग में समा गए हैं जिससे निपटना किसी एक या दो चिकित्सकों के बूते की बात नहीं। इसके निदान के लिए एक मेडिकल बोर्ड ही कारगर साबित होगा, यानी व्यक्तियों एवं संगठनों के सामूहिक प्रयास से ही मौजूदा समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। 'तलाश' ने इस बिंदु पर भी बड़ी गंभीरता से विचार कर इसे अपनी चिंता का विषय बनाया है।

अतएव 'तलाश' के इस पुनीत अभियान में नगर के विचारवान तथा समाज के सुखद परिवर्तन चाहनेवाले महानुभावों एवं समानधर्मा संगठनों का योगदान वांछनीय होगा, जिसके लिए वे सादर आमंत्रित हैं।

**—'तलाश' के लिए जनहित में प्रचारित**

**संपर्कः महासचिव, राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1**

# मेरे पति की ईमानदारी मुझे और मेरे परिवार को प्रभावित करती है, कैसे?

❑ संगीता गोयल

ईमानदारी-मूलत: एक उर्दू शब्द है। जो ईमान शब्द से आया है। ईमान का मतलब है धर्म पर दृढ़ विश्वास, धर्म या मजहब विश्वास या यकीन आदि के रूप में लिया जाता है। अब इस शब्द से एक शब्द बनता है ईमानदारी जिसका अर्थ है धर्मनिष्ठता या व्यवहार निष्ठता। ईमानदारी शब्द को विषय के अनुरूप हमें ईमानदार शब्द से लेना पड़ेगा, जिसका अर्थ है जो धर्मनिष्ठ हो, व्यवहारनिष्ठ हो या सही मायने में जो लेन-देन में सच्चा हो। अगर मैं इस विषय पर शब्द की गहराई में गयी तो यह बात कुछ ज्यादा ही लंबी हो जायेगी पर फिर भी मुझे विषय की मूल भावना को छूना है क्योंकि ईमानदारी शब्द का प्रयोग हुआ है। उपरोक्त शब्दार्थ में न्याय संगत अर्थ निकलता है लेन-देन में सच्चाई, धर्मनिष्ठता, व्यवहारनिष्ठता। अब इसमें बहुत अच्छा शब्द मुझे मिला, सच यानी सत्य जिसने मेरी विभिन्न धर्मों वाली समस्या को हल कर दिया। क्योंकि सच का पालन करना सभी धर्मों का मूल सिद्धांत है। हर इंसान नि:संदेह ईमानदारी पर विश्वास करता है। ईमानदारी अच्छे आचरण का परिचायक भी है। ईमानदारी केवल रुपये पैसे में ही नहीं होती, अपितु व्यवहार में, रिश्तों में और कार्य के प्रति भी होती है।

अब मैं मूल प्रश्न पर आती हूँ जहां मेरा मानना है कि ईमानदारी संस्कारों के रूप में माता-पिता देते हैं। जहां मुझे अपने पिता को सच का आचरण करते देखने का अवसर मिला वहीं शायद मेरे पति ने भी ईमानदारी के संस्कारों को प्राप्त किया। तभी हमारी संस्कृति में लड़के और लड़की का रिश्ता जुड़ने से पहले संस्कारों की मर्यादा पर दो परिवार जुड़ते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा होता है कि शादी के बाद जीवन के मूल्यों को नहीं बदलना पड़ता। सच की क्या परिभाषा है यह पति-पत्नी को बताने की या समझाने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

इस ईमानदारी के प्रश्न को व्यक्तिगत न लेते हुए मैं सामाजिक दृष्टि से विश्लेषित करना चाहूंगी। मूल प्रश्न पति की ईमानदारी से जुड़ता है। सच की परिभाषा में सरकारी नौकरी में बेईमानी का अर्थ है गलत तरीकों से वेतन के अतिरिक्त पैसा कमाना और सरकारी पद का दुरुपयोग करना या किसी भी रूप में गलत आचरण करना।

व्यक्ति यह सब क्यों करता है इसके पीछे व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही कारण हैं। अगर आपका पति इस मानसिकता का है कि भौतिक सुख उसको संतोष प्रदान कर सकते हैं तो निश्चय ही वह पैसे की ओर भागेगा या फिर वो व्यसनों से ग्रसित है जैसे

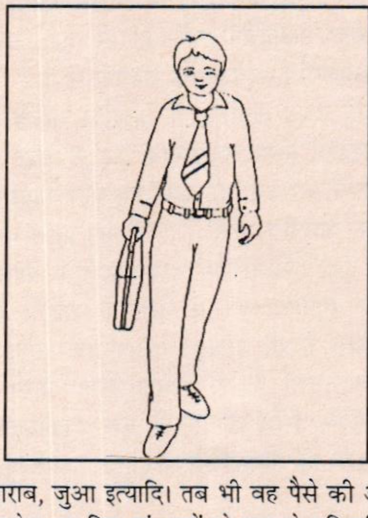

शराब, जुआ इत्यादि। तब भी वह पैसे की ओर भागेगा या फिर संस्कारों के रूप से परिभाषित नहीं किया है तो उसका सच के विपरीत आचरण करना अवश्यंभावी है।

एक बेईमान व्यक्ति के द्वारा कमाये गये पैसे से उसकी पत्नी, बच्चे व सारा परिवार निश्चित रूप से प्रभावित होता है। वेतन का कम होना व्यक्ति को बेईमान बनाता है। यह बात सच नहीं है। जैसे कि व्यक्ति की आवश्यकताओं का कोई अंत नहीं होता। ठीक उसी प्रकार पैसा कमाने की हवस अंतहीन होती है। पत्नी और बच्चे कई बार ईमानदार व्यक्ति को बेईमान बनाने का कारण होते हैं क्योंकि यदि परिवार में केवल पति ही कमा रहा है और पत्नी आवश्यकताएं बढ़ाकर वेतन से अधिक खर्च करके अपनी हैसियत से ज्यादा दिखावा करने की प्रवृति के अधीन यदि कलह करती है या पति से

झगड़ती है तो परिवार के प्रति मोह से ग्रसित ईमानदार व्यक्ति भी बेईमान बनने की ओर अग्रसर हो उठता है। कई बार ऐसे ही लोग पकड़े जाने पर सजा भी भुगतते हैं।

पत्नी चाहे कामकाजी महिला ना हो फिर भी एक गृहस्थी में यदि बैलगाड़ी की कल्पना की जाए तो पति-पत्नी बैलगाड़ी के दो पहियों सा कार्य करते हैं। जहां आपसी सामंजस्य एक साथ चलना महत्वपूर्ण होता है। कई बार ऐसा भी होता है जहां पति पत्नी जीवन के वास्तविक सुख की परिभाषा से भ्रमित शायद बेईमानी को ठीक मानते हैं। एक बेईमान व्यक्ति गलत ढंग से कमाये पैसे का उपयोग करता है और तथाकथित दिखावे से भरे जीवन को भोगता है जहां उसके अहंकार और अभिमान की प्यास बुझती है। एक झूठी शान भोग-विलासों और पैसे के बल पर मिले सुखों के मोहजाल में सारा परिवार ही फंस जाता है। यहां मनोवैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो जहां पति-पत्नी दोनों ही भ्रमित हैं और उनको सच के संस्कार ही नहीं मिले तो जीवन का वास्तविक संतोष क्या है? इसका उन्हें कैसे पता लगेगा? पैसा कमाने की होड़ कब पति को शराबी और जुआरी बना गई इसका ध्यान ही नहीं रहता। बच्चे भी आसानी से बेईमानी के शिकंजे में आ जाते हैं। पैसे का क्या मूल्य है इसका उन्हें कुछ ज्ञान ही नहीं रहता। शिक्षा बेमानी लगती है। व्यसनों में आनंद आता है और बहुत दोस्त बन जाते हैं। पति-पत्नी के पास तो शायद विलासिता के आलम में बच्चों को देखने का समय ही नहीं रहता।

एक ही संस्थान में एक ही पद पर कार्य करनेवाले दो अधिकारियों का उदाहरण शायद विषय को समझने में बहुत अधिक सार्थक सिद्ध होगा। अब यदि वे दो पड़ोसी भी हों तो बात और अधिक अच्छी समझ में आती है। आप कल्पना करें कि एक अधिकारी ईमानदार है और दूसरा बेईमान। एक के घर में ब्लैक एण्ड व्हाइट टी.वी. चल रहा है, स्कूटर पुराना है, सोफा सेट, डाइनिंग टेबल का भी अभाव है टेलीफोन की बात तो छोड़ दीजिए। वह ईमानदार व्यक्ति है जो वेतन में रहता है, जीवन में संतोष है। सीधा-सादा प्यार भरा सुखी परिवार है। सच का आचरण करनेवाला परिवार निश्चय ही धार्मिक प्रवृति का होता है चूंकि ईमानदारी कहीं न कहीं धर्म से जुड़ी है।

पड़ोस का दूसरा घर भी देखिए, दूसरा अधिकारी बेईमान है। घर में गृह के सभी साजो-सामान मौजूद हैं। डाइनिंग टेबल, सोफा-सेट, टेलीफोन, इससे भी बढ़कर एयरकंडीशनर, माइक्रोवेव सभी कुछ घर में मौजूद हैं, नई कार भी व बगल में बच्चे की नयी मोटर साइकिल भी मौजूद है। पार्टियां, शराब के दौर, ताश के खेल, घर में आने-जाने वालों की भीड़, वैभव के नाम पर सभी कुछ मौजूद हैं। दोनों अधिकारी एक ही दफ्तर में एक ही पद पर कार्यरत हैं तो दोनों में दोस्ती होना स्वाभाविक है। अब जब दोनों पड़ोसी हैं तो पत्नियां भी निश्चित तौर पर सहेलियां होंगी। बच्चों का एक साथ खेलना भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

बेईमान व्यक्ति का आधुनिकता के नाम पर बहुत जल्दी धर्म पर से विश्वास उठ जाता है। अब आप इन पत्नियों के वार्तालाप, बच्चों की दोस्ती के मध्य महसूस करिये कि इस विपरीत रहन-सहन में जीवन के मूल्यों का अर्थ कौन-किसको समझाये। यही प्रश्न उसकी कमीज मेरी कमीज से सफेद कैसे या खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है इन दोनों मुहावरों का नहीं है बल्कि परिस्थितियां सामाजिक दृष्टिकोण से अलग मनोवैज्ञानिक हो जाती हैं। ईमानदार व्यक्ति के भीतर उसके मूल्यों को लेकर एक द्वंद्व चलता रहता है। यदि पत्नी उसका साथ न दे या पत्नी मानसिक संतोष की प्राप्ति भौतिक सुखों के माध्यम से प्राप्त करने की लालसा करने लगे तो निश्चय ही अपने पड़ोसी के समक्ष वह ईमानदार व्यक्ति सच की नयी परिभाषाएं तलाशने लगेगा।

आपको कभी कोई बेईमान व्यक्ति अपने आपको बेईमान कहता नहीं मिलेगा। वह ईमानदार ही रहता है चूंकि उसकी परिभाषाएं बदल जाती हैं। रिश्वत लेना उसे एक कमीशन सा लगता है, वेतन से ऊपर हुई आय उसे अपना जन्म सिद्ध अधिकार जैसी लगती है। इस परिस्थिति में यदि ईमानदार व्यक्ति की पत्नी तुलना का सहारा लेकर अपने पति को उलाहना दे या ऐसी वस्तुओं की कामना करे जो वेतन से संभव नहीं तो आप ही सोचिए कि कब तक वो व्यक्ति अपने परिवार के मोह में ईमानदार बना रह सकता है। उसके संस्कार कितने ही प्रबल हों परिवार विघटन की आशंका ही उसके मूल्यों को बदलने लगेगी। पति की ईमानदारी का पत्नी और परिवार के मूल्यों का पति की ईमानदारी पर समान रूप से प्रभाव होता है।

मैंने पति को ईमानदारी का सुख महसूस करते देखा है और एक परिवार में बच्चों के पीढ़ी दर पीढ़ी बनते आये संस्कारों की मर्यादा को निभाते देखा है। आज के माहौल में ईमानदार रहते बहुत सारी परेशानियां तो सामने आती ही हैं, बहुत दुश्मन बन जाते हैं। बहुत तबादले भी होते हैं कई बार संभव है प्रोमोशन भी न मिले क्योंकि बेईमान अफसर के साथ काम करना एक ईमानदार व्यक्ति के लिए कठिन होता है। व्यक्ति स्वयं तो मानसिक तनाव झेलता ही है उसके परिवार को भी बहुत कुछ सहना पड़ता है। परंतु मेरे और मेरे पति के संस्कार शायद इतने मजबूत रहे हैं कि उनका टूटना या मूल्यों का बदलना इस जन्म में तो संभव नहीं है। मुझे खुशी है कि हम अपने बच्चों को इन मूल्यों और संस्कारों की विरासत देने में सक्षम हुए हैं।

बहुत ज्यादा आशा करने पर ही निराशा मिलती है। यदि बहुत ज्यादा कामना न की जाए और जीवन में ईमानदारी का सुख मिले तो उसका आनंद उसके भोगनेवाला ही महसूस कर सकता है। हमारे लिए सत्य धर्म का रूप है और विभिन्न धर्मों को मानते हुए हमारा वास्तविक धर्म इस लंबे सफर में मानवता बन गया है जहां हम दोनों हर दिन सोचते हैं क्यों न आज किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाय।

संपर्क: पत्नी श्री दिवाकर गोयल
उप महाप्रबंधक(का.एवं.प्रशा)
नेताजी सुभाषचन्द्रबोस अंतर्राष्ट्रीय
हवाई अड्डा, कोलकाता-700052

**MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY&**
**GERMAN HOMOEO STORES**
**Saket plaza, Jamal Road,**
**Patna-800001**
**Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)**
**Offers a wide range of mother Tinchers,**
**Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels**
**Dr. Mahesh Prasad** **D.M.S. (Patna)**
**Dr. Arun kumar** **D.H.M.S (Patna)**
**Spcialist in chronic Diseases**

## मॉरीशस में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

मॉरीशस की पावन भूमि पर समकालीन हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से विगत 3 से 9 सितंबर 03 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में 'विचार दृष्टि' की

तमिलनाडु ब्यूरो प्रमुख तथा स्टेल्ला मॉरिस कॉलेज चेन्नै की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. मधुधवन ने हिंदी कविता की दशा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्थिति चाहे जैसी हो, कविता कभी मानव-विरोधी नहीं होती। यह जीवन से निकलती है, विचारधारा से नहीं। अतएव कविता हमारी करुणा, राग-विराग, जय-पराजय इन सबका सच सामने प्रस्तुत करती है और इसे इनके दायरे भी प्रकाशमान करती है सम्मेलन के पहल पर डॉ. धवन की पुस्तक अमृतमयी वाक्य संग्रह का लोकार्पण भी हुआ।

विचार दृष्टि से जुड़े डॉ. ईश्वर वरुण ने हिंदी के स्वरूप विषय पर बड़े मार्मिक विचार व्यक्त किए। उन्होंने इस अवसर पर इनकी ओर से 'मलयज' पत्रिका सहित अन्य पुस्तकें भेंट की गई। सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ. जयलक्ष्मी सुब्रहमण्यन हिंदी कविता की दिशा पर एक प्रभावोत्पादक वक्तव्य प्रस्तुत करने के पश्चात अपने निबंध की पुस्तक 'आकाशगंगा' सम्मेलन के प्रमख को भेंट की। सम्मेलन में चेन्नै के अन्य प्रतिनिधियों में श्रीमती अवतार कौर विरदी, डॉ. लीलावती ने भी अपने विचारों से उपस्थित सुधि जनों को अवगत कराया।

सम्मेलन के अंतिम चरण में आयोजित कवि गोष्ठी में तकरीबन सत्तर कवि-कवयित्रियों ने अपने काव्य-सुधा-रस का पान कराकर श्रोताओं को मुग्ध किया उनमें डॉ. मधु धवन, श्रीमती अवतार कौर विरही, डॉ. विद्याशर्मा तथा परशुराम शर्मा का नाम उल्लेखनीय है।

विचार कार्यालय, चेन्नै

## डॉ. मधुधवन को 'साहित्य भारती सम्मान'

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से उड़ीसा के जगन्नाथपुरी में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में हिंदी साहित्य की समृद्धि और राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, परिसंवाद आदि के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए किए गए उल्लेखनीय योगदान के मद्देनजर 'साहित्य भारती सम्मान' से सम्मानित किया गया। 'विचार दृष्टि' एवं राष्ट्रीय विचार मंच परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

## द्रमुक ने राजग से नाता तोड़ा

### दोनों मंत्री केंद्र सरकार से वापस

भाजपा के साथ दो वर्ष के तनावपूर्ण संबंधों को समाप्त करते हुए द्रमुक ने अंततः अपने दो मंत्रियों- टी.आर.

बालू और ए. राजा को केंद्र सरकार से वापस बुला लिया। द्रमुक प्रमुख करुणानिधि ने तेदेपा की तरह मुद्दों के आधार पर सरकार का समर्थन जारी रखने की बात कही। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री जयललिता के साथ भाजपा के हद पार करते प्रेम से नाराज द्रमुक को ऐसा कदम उठाने को विवश होना पड़ा। द्रमुक ने प्रदेश में एक नए राजनीतिक ध्रुवीकरण का संकेत दिया है।

नवोदित एवं उदीयमान ग़ज़लकारों के लिए, निःशुल्क

## ग़ज़ल शिल्प ज्ञान

सर्वविदित है कि ग़ज़ल की लोकप्रियता से आकृष्ट होकर हिंदी काव्यकारों द्वारा भी इस काव्य-विद्या को अपनाया गया है और निरन्तर अपनाया जा रहा है, किन्तु ग़ज़ल के शिल्प से अवगत न होने के कारण अधिकांश कवियों का श्रम सार्थक नहीं हो पाता। 'खुसरो साहित्य विकास केंद्र, जालौन' ने इस कमी को दूर करने हेतु 'ग़ज़ल सृजन कला प्रसार केन्द्र' की स्थापना कर लगनशील और रचनाधर्मी कवियों के लिए पत्राचार द्वारा ग़ज़ल-शिल्प के ज्ञानार्जन की निःशुल्क व्यवस्था की है। इसके अन्तर्गत ग़ज़ल के नियम तथा उर्दू छन्दशास्त्र 'अरुज' से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। कविता के द्वारा उच्च मानवीय गुणों के विकास तथा देशप्रेम की भावनाओं के प्रचार-प्रसार में रुचि रखने वाले काव्यकारों को उनके अनुरोध पर भाव-पक्ष से सम्बन्धित सुझाव और संशोधन भी प्रदान किए जा सकते है।

इस कार्यक्रम से लाभान्वित होने के लिए कोई भी कवि अपना साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कर ग़ज़ल-शिल्प से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी तथा अपनी समस्याओं का निदान और उचित प्रश्नों के उत्तर जवाबी-पत्र भेजकर निःशुल्क प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक पत्र का उत्तर प्राप्त करने के लिए जवाबी-पत्र भेजना आवश्यक है।

पत्राचार निम्न पते पर करें।

संचालक
ग़ज़ल सृजन कला प्रसार केन्द्र
41/1, नारीभास्कर, जालौन (उ.प्र.)-285123

## 2003 का नोबल पुरस्कार सम्मान

विचार कार्यालय, दिल्ली

दो बार बुकर पुरस्कार विजेता दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध उपन्यास जे०एम० कोएत्जी को वर्ष 2003 साहित्य का नोबल पुरस्कार के लिए चयन किया गया। इनके उपन्यास की विशेषता है उनके लेखन की विशेष शैली, अर्थपूर्ण संवाद एवं विश्लेषणात्मक तीक्ष्णता। पर उन्हें क्रूर उदारवाद एवं अस्थिर नैतिकता का कटू आलोचक माना जाता है। उनसे पहले दक्षिण अफ्रीका की नादिन गोर्डिमर को साहित्य के लिए 1991 में नोबल पुरस्कार दिया गया था।

ईरान की 56 वर्षीय महिला शीरीन इबादी को वर्ष 2003 के नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा गया है। महिलाओं एवं बच्चों के क्षेत्र में एक लंबे समय से संघर्ष कर रही इबादी के किए गए प्रयास पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल प्रस्तुत करते हैं। शीरीन इबादी इस पुरस्कार को पाने वाली विश्व की 11वीं महिला हैं। वह कट्टरता के विरूद्ध लगातार संघर्ष कर रही हैं। इबादी स्वयं उदारवादी इस्लाम की समर्थक है तथा आधुनिकता के तत्व को इसमें जोड़ना चाहती है। अपने दुस्साहिक कार्यों के चलते उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा है। मानवाधिकार के निभिन्न पहलुओं पर शीरीन इबादी ने कई पुस्तकें भी लिखी है।

## बिहार की आदिवासी ललिता सम्मानित

विचार कार्यालय, पटना

बिहार की आदिवासी किशोरी ललिता आज दुनियाभर के एक सौ साठ देशों की बालिकाओं के लिए प्रेरणा की स्रोत बन गयी है। संयुक्त राष्ट्र बाल राहत कोष (यूनीसेफ) द्वारा वर्ष 2004 के लिए विश्व भर के बच्चों की स्थिति पर जारी सालाना रिपोर्ट के आवरण पर उसकी छपी तस्वीर उसके लिए तो गौरव का विषय है ही, भारत के लिए भी यह एक तरह से गर्व की बात है।

बारह साल की उम्र में ललिता ने बिना अपने माँ-बाप को बताए अनौपचारिक शिक्षा के 'जगजागी' स्कूल में चुपके से पढ़ना शुरू कर दिया। आठ महीने में उसने पाँचवीं पास कर लिया। फिर उसने पढ़ाई जारी रखी। सीतामढ़ी जिलांतर्गत खोपड़ाही गाँव की बालिका ललिता कुमारी फिलहाल सीतामढ़ी, मजफ्फरपुर, शेखपुरा एवं गया जिला में समाख्या केंद्रों में अपनी छोटी सहेलियों को शिक्षा का मंत्र के साथ कराटे का प्रशिक्षण दे रही है। जिस बिहारी बाला को कल तक जो लोग पास फटकने भी नहीं देते थे वे ही आज उसे हाथों-हाथ लेते हैं और उससे बात करने के लिए आतुर नजर आते हैं।

## 'गाइड' के राजू को फाल्के पुरस्कार

माथे पर बिखरी जुल्फें और हिलती गर्दन के साथ बार-बार झपकने वाली आँखों से दशकों से सिने दर्शकों को दीवाना बनानेवाले 'गाइड' के राजू देवानंद को वर्ष 2002 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार के लिए चयन किया गया। फिल्म उद्योग का यह सर्वोच्च सम्मान भारतीय फिल्म उद्योग में देवानंद के उल्लेखनीय योगदान के लिए 29 दिसंबर को प्रदान किया गया।

देवानन्द के अभिनय में सिने प्रेमियों को मोती लाल की शोखी, बलराज साहनी की सादगी और अशोक कुमार की गहराई सब एक साथ नजर आई और उस पर किशोर कुमार के पार्श्व गायन ने देव को एक संपूर्ण कलाकार बना दिया। इस हरदिल अजीज अभिनेता ने 1945 में प्रभात से अपना फिल्मी सफर प्रारंभ किया और फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। फिल्म 'जिद्दी' से मकबूलियत हासिल कर बाज, टैक्सी ड्राइवर, सी आई डी, पेईंग गेस्ट, काला पानी, हम दोनों, तेरे घर के सामने, गाइड, ज्वैल थीफ, जानी मेरा नाम, प्रेम पुजारी, तेरे मेरे सपने, तीन देवियाँ, असली-नकली, कालाबाजार, हरे कृष्णा हरे राम, देस-परदेस जैसी अनेक फिल्में उनके सशक्त अभिनय और शानदार निर्देशन की मिसाल बनीं। 26 सितंबर 1923 को गुरदासपुर में जन्मे देवानन्द को फाल्के पुरस्कार में दो लाख रुपए नकद, एक शॉल तथा स्वर्ण कमल से सम्मानित किया गया।

# DENSA

## PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285/54471, Fax: 55286

**&**

# DANBAXY

## PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
## (SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,

Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

**Office Address:**

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

**MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D**

# आचार्यश्री महाप्रज्ञ को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार

राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए वर्ष 2002 का इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ की ओर से मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' को भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की 19वीं पुण्य तिथि पर आयोजित एक समारोह में काँग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाँधी ने प्रदान किया। अपने संबोधन में श्रीमति गाँधी ने कहा कि जनता को एकता की चुनौती देनेवालों से सर्तक रहने की आवश्यकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से देश भर में, विशेष तौर पर गुजरात में सांप्रदायिक हिंसा के बाद उत्पन्न आपसी कटुता, घृणा व नफरत को समाप्त कर भाईचारा एवं शाति की पुनर्स्थापना में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आचार्य महाप्रज्ञ की ओर से मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' ने प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया तथा डेढ़ लाख रुपए की राशि 'अपरिग्रह महाव्रत' से बँधे होने के कारण स्वीकार नहीं की। उसे शैक्षणिक कार्यो के संवर्द्धन हेतु दे दिया गया।

# डॉ० शोभनाथ को 'निराला काव्य सम्मान'

फतुहा की साहित्यिक संस्था जन साहित्य परिषद् की ओर से स्थानीय डैफोडिल्स पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित समारोह में मुंबई से पधारें कवि एवं 'प्रगतिशील आकल्प' के संपादक डॉ० शोभनाथ यादव को उनकी सद्यः प्रकाशित काव्य कृति के लिए 'निराला काव्य सम्मान' से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में कवि की कृतियों पर जमकर चर्चा हुई। चर्चा का आरंभ करते हुए प्रसिद्ध आलोचक वंशीधर सिंह ने कहा कि-डॉ० शोभनाथ यादव अग्निधर्मा कवि हैं। वे वर्तमान की विभीषिका से

संत्रस्त मनुष्य की मुक्ति के आकांक्षी हैं। समारोह के मुख्य अतिथि नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने कहा कि डॉ॰ यादव अंधेरे के खिलाफ रोशनी का एलान करने वाले कवि हैं। प्रतिष्ठित गीतकार विशुद्धानंद ने कहा कि रोशनी, चिनगारी और अन्य प्राकृतिक उपादानों का बहुविध प्रयोग डॉ॰ शोभनाथ यादव ने किया है।

डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा ने कवि डॉ॰ यादव की रचनाधर्मिता को युद्धरत आम आदमी की चेतना का दर्पण बताया।

समारोह में सुश्री वर्षा ने डॉ॰ शोभनाथ यादव की चुनी हुई कविताओं का पाठ किया। सम्मानित कवि डॉ॰ यादव ने बिहार की रचनाधर्मिता के प्रति आस्था और विश्वास व्यक्त किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने लघु पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लघु पत्रिकाओं को देश के रीढ़ की हड्डी कहा जाता है, उसकी बढ़-चढ़ कर तारीफ की जाती है, लेकिन आज जो उसकी जो दशा है वह बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। दरअसल आज अधिकांश लघु पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों ने उसे व्यवसाय बना लिया है। पैसा कमाना ही एकमात्र उनका ध्येय रह गया है। अब पत्रकारिता मिशन नहीं रही जबकि अन्य देशों में ऐसी स्थिति नहीं है, अध्यक्ष ने कहा। जहां तक हिंदी और हिंदी पत्रकारिता का सवाल है जब तक वे जमीन पर रहेंगी, करोड़ों लोगों के दिल और जबान पर रहेंगी, फूलेगी-फलेगी। जिस दिन वे पेड़ पर घोंसला बनाकर अभिजात्य और कुलीन होने का प्रयास करेंगी रसातल चली जाएगी।

समारोह को संजय कुमार, मनोज कुमार, तथा अन्य कई नागरिकों ने भी संबोधित किया। संचालन किया रामयतन यादव ने तथा देवेन्द्र कुमार ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अनीत कुमारी, फतुहा से।

# द्रविड़ आंदोलन के व्याख्याकार मुरासोली मारन नहीं रहे

## विचार कार्यालय, चेन्नई

द्रविड आंदोलन के अग्रणी व्याख्याकार के रूप में उभरे द्रमुक नेता मुरासोली मारन का लंबी बीमारी के बाद पिछले 23 नवंबर को चेन्नई के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया। 69 वर्षीय मारन दिल्ली के राजनीतिक गलियारे में चार दशक तक द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम के पैरोकार के रूप में दखल रखनेवाले और केंद्र सरकार में बिना किसी विभाग के मंत्री रहे मुरासोली मारन द्रमुक के प्रख्यात सिद्धांतकार होने के साथ करुणानिधि के हितों के संरक्षक भी थे। वे अपनी पार्टी के अन्य दलों के

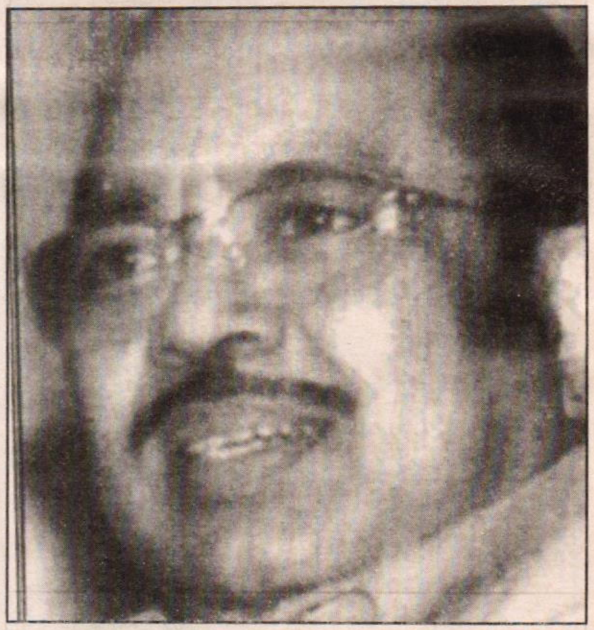

साथ चुनावी गठबंधनों के पुरजोर हिमायती थे। उन्होंने सन् 1999 में केंद्र में भाजपा के नेतृत्व में बननेवाली राजग सरकार में पार्टी की हिस्सेदारी सुनिश्चित करने में अहम् भूमिका निभाई थी। भाजपा से गठबंधन के लिए पार्टी नेताओं व उनके कार्यकर्ताओं को मनाना मारन के लिए एक कठिन सबक था, जो भाजपा को सांप्रदायिक राजनीति के उपदेशक मानते थे।

17 अगस्त 1934 को तमिलनाडु के तिरूवरूर जिले के तिरूकुवलई में जनमें मारन लोकसभा के लिए सर्वप्रथम 1967 में हुए उपचुनाव में विजयी हुए और तब से वे लगातार लोकसभा के सदस्य रहे। वह अमेरिका में दस माह के इलाज के बाद पिछले 7 सितंबर को अपने देश वापस आ गए थे। अप्रैल 2000 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में उनके दिल का बल्ब बदला गया था और सितंबर 2003 में बल्ब में खराबी आ जाने से वह चेन्नई के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराए गए थे जहाँ उनका देहावसान हो गया। वे अपने पीछे अपनी पत्नी, दो पुत्र और एक पुत्री के अतिरिक्त सैकड़ों शुभेच्छुओं को छोड़ गए हैं। विचार दृष्टि परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

- डॉ. मधुधवन, चेन्नई से।

# साभार-स्वीकार

## पुस्तकें :

1. **दी फैबुलस लैंड ऑफ इरान**
संपादक: डॉ० मोहसिन शोजाखानी

2. (क) **हिंदी पत्रकारिता: सिद्धांत से प्रयोग तक**
लेखक: अरुण कुमार भगत

3. **भारत के जख्म**
लेखक: ज्योतिशंकर चौबे

4. **रेत के हाशिए पर** (काव्य-संग्रह)
लेखक: तारानंदन 'तरुण'
प्रकाशक: प्रभा प्रकाशन त्रिवेणीगंज, सुपौल

5. **शब्द-शब्द संवाद** (गद्य-संग्रह)
लेखक: कमला प्रसाद, पटना

6. **सारस्वत पुरुष डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव अमृतपर्व**
संपादक: श्री वेदप्रकाश गर्ग, डॉ. कृष्णचंद गुप्त

7. **लक्ष्मण की ग़ज़लें**
ग़ज़लकार: लक्ष्मण

8. **प्रेम ज्योति का सूरज** - कविता संग्रह
कवि ज्योति नारायण, हैदराबाद

9. **अथ कठोपनिषद् रहस्य**
लेखक: आचार्य श्री अवस्थी

10. **बोलें जय जय भारती, आतंक मुक्ति**
कवि व लेखक : श्रीकांत प्रसून

11. **राष्ट्रभाषा हिंदी पर महात्मा गाँधी के विचार**
प्रकाशक : गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, 5, तीस जनवरी मार्ग नई दिल्ली-110 011

## पत्रिकाएं :

1. **हम सब साथ साथ** - दिसंबर, 03
संपादक : श्रीमती शशि श्रीवास्तव,
प्रकाशन : प्लाट न० 175ए, आनंदपुरमधाम, कराला, दिल्ली-110081

2. **अणुव्रत**- 1-15 नवंबर 03
संपादक : डॉ० महेन्द्र कर्णावट,
प्रकाशक : अणुव्रत महासमिति 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2

3. **शिवा संघ स्मारिका**, 2002-2003
संपादक: मिथिलेश कुमार एवं सी. एस. पटेल

4. **इको ऑफ इस्लाम**, मार्च-अप्रील, 03
संपादक: एम. रोजेखान
प्रकाशक: इस्लामिक थाउट फाउंडेशन, इरान

5. **विवरण पत्रिका**, नवंबर 02
संपादक : धोण्डीराव जाधव
प्रकाशक : हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-1

6. **राष्ट्रभाषा** - नवंबर, 2003
संपादक : प्रा० अनंतराम त्रिपाठी
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003

7. **शब्द** -अक्टूबर 2003
संपादक : आरसी यादव
प्रकाशक : शब्दपीठ, सी-1104, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016, ऊ०प्र०

8. **सभ्यता संस्कृति** - नवंबर 2003
संपादक : श्रीमती ऋचा सिंह
प्रकाशक : श्रीमती ऋचा सिंह, बी-4/245, सफदर जंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-29

9. **कु. क्ष. जागरण**, अक्टूबर, 03
प्रधान संपादक: पटेल जे. पी. कनौजिया

10. **सदीनाम** -नवंबर 2003
संपादक : जितेन्द्र जितांशु
प्रकाशन : H&5, Govt-Orts. Budge Budge 24 pgs (S) west Bangal

11. **भारतीय रेल** -फरवरी-अक्टूबर 2003
संपादक : प्रमोद कुमार यादव

12. **लोक शिक्षक** - नवंबर 2003
संपादक: डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी

13. **शोषित मुक्ति** नवंबर 2003
संपादक : श्री उन्तीसवाँ व्यास पटना

14. **अम्बेडकर मिशन पत्रिका** -दिसंबर 03
संपादक : बुद्धशरण हंस

15. **जन संसार** 1-15 अक्टूबर 03
संपादक : गीतेश शर्मा कोलकाता-87

16. **अलका मागधी** -मार्च-नवंबर 2003
संपादक : अभिमन्यु प्र० मोर्य पटना-1

17. **मेरी रक्षा**, अंक-7
प्रधान संपादिका: डॉ. मधुधवन चेन्नै-600106

18. **बच्चों का देश**, सितंबर, 03
संपादक: कल्पना जैन जयपुर-17

20. **संकल्प रथ** - अक्टूबर 2003
संपादक : राम अधीर
प्रकाशन : 108/1, शिवाजी नगर, भोपाल-16

21. **मित्र संगम पत्रिका**, अक्टूबर, 03
संपादक: प्रेम वोहरा दिल्ली-9

22. **श्री प्रभा**, जून-अगस्त 03
संपादक: डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव
प्रकाशक: महासचिव, श्रीवास्तव वेलफेयर एशोसिएशन, 81बी, एल.आई.जी., राजौरी गार्डन एक्सटेंशन, नई दिल्ली

23. **कालान्तर** - अक्टूबर-2003
संपादक : डॉ० पुष्पेश पंत नई दिल्ली-1

24. **बाल साहित्य समीक्षा**, दिसंबर, 2003
संपादक: डॉ. राष्ट्रबंधु
अतिथि संपादक: दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' कानपुर-201082

25. **साहित्य परिक्रमा**-अक्टूबर, दिसंबर 2003
प्रबंध संपादक: 'जीत सिंह जीत'

26. **साहित्य संहिता**
संपादक: डॉ. रजनीकांत जोशी

27. **सी. सी. ए पत्रिका**
संपादक : विष्णुदेव अग्रवाल

28. **रेल राजभाषा**
संपादक : प्रमोद कुमार यादव

29. **रैन बसेरा** -अक्टूबर
प्रधान संपादक : डॉ. जय सिंह व्यथित

## त्रिमूर्ति ज्वैलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

## त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चांदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

# पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

# Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

LOCOMOTION · THE ESSENCE OF LIFE

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

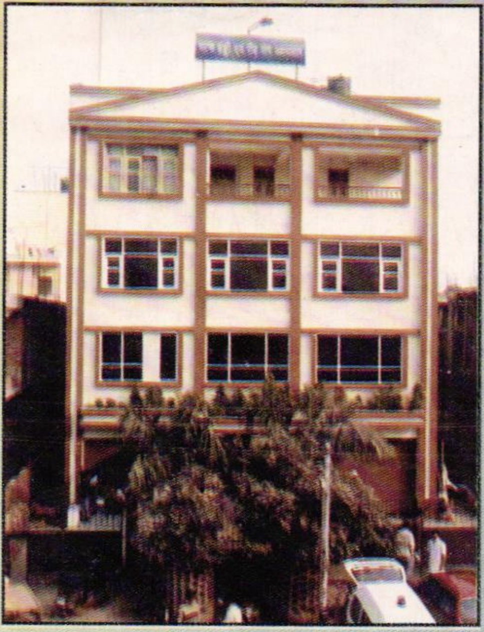

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

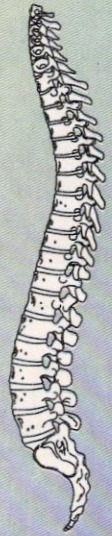

**Dr. Vishvendra Kumar Sinha**

M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

वर्ष : 6 अंक : 18 जनवरी–मार्च 2004 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791


# Solutions Point

**SOLUTIONS IN:**

- Computer Assembling
- Maintenance
- Laptop Repair
- AMC
- Netowrking
- Web & Graphics Designing
- Software Development

SOLUTIONS POINT
Making IT easy

SAMSUNG DIGITall
Everyone's Invited™

intel® TDK. mantra Online SONY®
TOSHIBA PIONEER®
COMPAQ
intel inside pentium 4
IBM
Canon®
hp HEWLETT PACKARD

Franchise enquiry solicited from all over India

*Contact: Mr Sudhir Ranjan*

**Head Office :** U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92
Tel/Fax : 011-22059410, 22530652
Mobile : 9811281443, 9899237803
**Branch Office :** 102, Sec. 1, Vaishali, Ghaziabad, U.P.
Tel : 011-24922439
E-mail : Solutionspoint@hotmail.com


प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर